

WWW.NAYIGOONJ.COM  
GOONJNAYI@GMAIL.COM

मार्च अंक -2025  
शोध साहित्य एवं संस्कृति की  
उत्कृष्ट  
मासिक पत्रिका  
नई गूँज

- नाटिका - युद्ध और शांति
- लेख - परीक्षाकाल:हौवा न बनाएं  
परीक्षा का
  - कहानी - डॉली
- कविता - अपनी झोपड़ी में राज  
करना
- निबंध- न्याय में विलंब न्याय का  
अस्वीकार है

9785837924

NAYI GOONJ – SHODH , SAHITYA EVAM SANSKRITI (MONTHLY) MAGAZINE

शोध , साहित्य और संस्कृति की मासिक वैब पत्रिका

# नई गूँज-----.



वर्ष 2025

अंक:- 39

WEBSITE- [nayigoonj.com](http://nayigoonj.com)

Email address [goonjnayi@gmail.com](mailto:goonjnayi@gmail.com) -

WHATSAPP NO. 91-9785837924



संपादक मंडल

प्रमुख संरक्षक

प्रो. देव माथुर

[vishvavishvaaynamah.webs1008@gmail.com](mailto:vishvavishvaaynamah.webs1008@gmail.com)

मुख्य संपादक

रीमा माहेश्वरी

[shuddhi108.webs@gmail.com](mailto:shuddhi108.webs@gmail.com)

संपादक

शिवा 'स्वयं'

[sarvavidhyamagazines@gmail.com](mailto:sarvavidhyamagazines@gmail.com)

शाखा प्रमुख

ब्रजेश कुमार

[aryabrijeshsahu24@gmail.com](mailto:aryabrijeshsahu24@gmail.com)

वरिष्ठ परामर्श दाता तथा पब्लिक ऑफिसर

सीमा धमेजा

डायरेक्टर

प्रज्ञा इंस्टीट्यूट जयपुर

[Praggyainstitutejpr@gmail.com](mailto:Praggyainstitutejpr@gmail.com)

9351177710

परामर्शदाता

कमल जयंथ

[jayanth1kamalnaath@gmail.com](mailto:jayanth1kamalnaath@gmail.com)

## सम्पादकीय

प्रिय पाठकों,

आप सभी को “नई गूँज”के मार्च अंक 2025 में हार्दिक स्वागत है। आज का विषय है बाँटकर खाने का आनंद ।

एक बूढ़ी औरत रोज़ एक डलिया में संतरे लेकर बाज़ार में बेचने आती थी। एक युवा अक्सर उससे संतरे खरीदता था। हर बार, संतरे खरीदने के बाद वह खरीदे हुये संतरे में से एक संतरा उठाकर उसकी फाँक चखता और कहता, “माँ जी, ये कम मीठा लग रहा है। ज़रा आप भी चखकर देखो।

बूढ़ी माँ संतरे को चखती और कहती, “ना बाबू, मीठा तो है।”

युवक बिना कुछ कहे उस संतरे को वहीं छोड़ बाकी संतरे लेकर गर्दन झटकते हुए आगे बढ़ जाता।

युवक अक्सर अपनी पत्नी के साथ होता था। एक दिन पत्नी ने हैरानी से पूछा,

“ये संतरे हमेशा मीठे होते हैं, फिर भी तुम ये नौटंकी क्यों करते हो?”

युवक ने मुस्कुराते हुए उत्तर दिया,

“वो बूढ़ी माँ बहुत मीठे संतरे बेचती है, लेकिन खुद कभी नहीं खाती। इस बहाने मैं उसे एक संतरा खिला देता हूँ।”

कुछ दिन बाद, बूढ़ी माँ के पड़ोस में सब्जी बेचने वाली औरत ने उससे सवाल किया,

“अरे! ये लड़का हर बार इतने नखरे करता है, फिर भी तुझसे संतरे खरीदता रहता है। लेकिन मैं देखती हूँ कि उसकी चख-चख के बाद तू हमेशा उसे संतरे थोड़ा ज्यादा तौल देती है। ऐसा क्यों?”

बूढ़ी माँ मुस्कुराई और बोली, “अरे बहन उसकी चख-चख संतरे के लिए नहीं होती। वो तो मुझे संतरा खिलाने का बहाना ढूँढता है। वो सोचता है कि मैं उसकी चालाकी समझती नहीं, पर सच कहूँ तो मैं सब जानती हूँ। उसकी इस प्यारी आदत ने मेरे दिल को छू लिया है, इसलिए मैं भी उसे उसकी कीमत से ज़्यादा संतरे तौल देती हूँ। आखिर, प्यार से बढ़कर कुछ नहीं होता।”

WEBSITE- [nayigoonj.com](http://nayigoonj.com)

Email address [goonjnayi@gmail.com](mailto:goonjnayi@gmail.com) -

WHATSAPP NO. 91-9785837924

एक बात तो पक्की है कि छीनकर खाने वालों का कभी पेट नहीं भरता,लेकिन बाँटकर खाने वाला कभी भूखा नहीं मरता। बस अपने अंदर प्रेम और दया का भाव रखें,क्योंकि यही संसार की सबसे बड़ी सेवा है..!!

“बाँटकर खाने का आनंद,” प्रेम, सहानुभूति, और दया के गहरे संदेशों को एक सरल और हृदयस्पर्शी ढंग से प्रस्तुत करती एक ऐसी छोटी सी कहानी है जो जीवन के हर पल में हम कर सके , ऐसा धर्म सिखाने और प्रेम सिखाने के लिए सामने आयी हैं शायद यह साधारण सी प्रतीत होने वाली बातचीत वास्तव में एक गहरी भावना को छुपाए हुए है। युवक की पत्नी, जो इस नियमित घटना को देखती है, एक दिन उससे पूछती है कि वह ऐसा क्यों करता है, जबकि संतरे हमेशा मीठे होते हैं। युवक का उत्तर एक निःस्वार्थ प्रेम को प्रकट करता है: यह प्रेम वह है जो बिना किसी अपेक्षा के दिया जाता है, बिना किसी स्वार्थ के। यह प्रेम दूसरों की खुशी में अपनी खुशी ढूँढता है। कहानी में बूढ़ी औरत भी युवक की चालाकी को समझती है, लेकिन वह उसकी भावना का सम्मान करती है। वह जानती है कि युवक उसे संतरा खिलाने का बहाना ढूँढ रहा है, और वह उसकी इस प्यारी आदत को सराहती है। जब उसकी पड़ोसी उससे पूछती है कि वह युवक को हमेशा अधिक संतरे क्यों देती है, तो बूढ़ी औरत का जवाब प्रेम की शक्ति को दर्शाता है: “आखिर, प्यार से बढ़कर कुछ नहीं होता।” यह प्रेम केवल देने और लेने के बारे में नहीं है, बल्कि समझने और महसूस करने के बारे में है। यह प्रेम वह है जो दिलों को जोड़ता है और जीवन को सार्थक बनाता है। कहानी हमें यह भी सिखाती है कि बाँटकर खाने में जो आनंद है, वह अकेले खाने में नहीं है। युवक और बूढ़ी औरत दोनों एक-दूसरे के साथ जो साझा करते हैं, वह सिर्फ संतरे नहीं हैं, बल्कि प्रेम और खुशी है। यह कहानी हमें यह भी याद दिलाती है कि छीनकर खाने वालों का कभी पेट नहीं भरता, जबकि बाँटकर खाने वाले हमेशा संतुष्ट रहते हैं। यह एक महत्वपूर्ण जीवन सबक है जो हमें सिखाता है कि हमें दूसरों के साथ दयालु और उदार होना चाहिए। जब हम दूसरों के साथ अपनी खुशी साझा करते हैं, तो यह कई गुना बढ़ जाती है। कहानी में बूढ़ी औरत और युवक दोनों ही अपने छोटे-छोटे कार्यों से एक-दूसरे के जीवन में खुशी लाते हैं। यह कहानी हमें यह भी सिखाती है कि हमें दूसरों की भावनाओं का सम्मान करना चाहिए।

कहानी का सबसे महत्वपूर्ण संदेश यह है कि प्रेम और दया ही संसार की सबसे बड़ी सेवा है। जब हम दूसरों के प्रति दयालु और सहानुभूतिपूर्ण होते हैं, तो हम न केवल उनके जीवन को बेहतर बनाते हैं, बल्कि अपने जीवन को भी सार्थक बनाते हैं। यह कहानी हमें यह भी याद

दिलाती है कि हमें अपने अंदर प्रेम और दया का भाव रखना चाहिए। जब हम दूसरों के प्रति प्रेम और दया दिखाते हैं, तो हम एक बेहतर दुनिया बनाते हैं।

यह कहानी हमें यह भी याद दिलाती है कि हमें अपने जीवन में कृतज्ञ होना चाहिए , जीवन में विनम्र होना चाहिए , हमें अपने जीवन में धैर्य रखना चाहिए , आशावादी होना चाहिए।

हमें अपने जीवन में प्रेम और दया को प्राथमिकता देनी चाहिए। प्रेम और दया ही जीवन के सबसे महत्वपूर्ण मूल्य हैं।

यह कहानी हमें यह भी याद दिलाती है कि हमें अपने जीवन में दूसरों का सम्मान करना चाहिए , दूसरों के प्रति सहानुभूति रखनी चाहिए।

धन्यवाद।

डॉ. शिवा स्वयं

संपादक



WEBSITE- [nayigoonj.com](http://nayigoonj.com)

Email address [goonjnayi@gmail.com](mailto:goonjnayi@gmail.com) -

WHATSAPP NO. 91-9785837924

## शुभेच्छा

# नई गूँज----- परिवार

### परामर्शदाता-

प्रश्न है कि संस्कृति क्या है। यूँ संस्कृति शब्द सम्+कृति से बना है, जिसका अर्थ है अच्छी कृति। अर्थात् संस्कृति वस्तुतः राष्ट्रीय अस्मिता के परिचायक उदात्त तत्वों का नाम है।

भारतीय सन्दर्भ में संस्कृति व्यक्तिनिष्ठ न होकर समष्टिनिष्ठ होती है। संस्कृति की संरचना एक दिन में न होकर शताब्दियों की साधना का सुपरिणाम होता है। अतः संस्कृति सामासिक-सामाजिक निधि होती है। संस्कृति वैचारिक, मानसिक व भावनात्मक उपलब्धियों का समुच्चय होती है। इसमें धर्म, दर्शन, कला, संगीत आदि का समावेश होता है। इसी की अपरिहार्यता की ओर संकेत करते हुए भर्तृहरि ने लिखा है कि इसके बिना मनुष्य घास न खाने वाला पशु ही होता है-

“साहित्यसंगीतकला-विहीनः

साक्षात् पशुः पुच्छविषाणहीनः॥

### मुख्य संपादक

उपनिषद् के शब्दों में कहें तो संस्कृति में जीवन के दो आयाम श्रेय व प्रेय का सामंजस्य होता है। इन्हीं आधार पर आध्यात्मिक, वैचारिक व मानसिक विकास होता है और इन्हीं के आधार पर जीवन-मूल्यों व संस्कारों का निर्धारण होता है और यही जीवन के समग्र उत्थान के सूचक होते हैं। शिक्षा-तंत्र में इन्हीं सांस्कृतिक मूल्यों का शिक्षण-प्रशिक्षण होता है। वर्तमान में शिक्षा-व्यवस्था संस्कृति की अपेक्षा सम्यता-निष्ठ अधिक है। तात्पर्य है कि वर्तमान शिक्षा विचार-प्रधान, चिन्तन-प्रधान व मूल्यप्रधान की अपेक्षा ज्ञानार्जन-प्रधान है। वस्तुतः इसी का परिणाम है कि सम्प्रति शिक्षा के द्वारा बौद्धिक स्तर में तो अभिवृद्धि हुई है किन्तु संवेदनात्मक या भावनात्मक स्तर घटा है।

## संपादक -

हमारी शिक्षा में सांस्कृतिक मूल्यों के स्थान पर पश्चिमी सभ्यता-मूलक तत्वों को उपादान के रूप में ग्रहण कर लिया गया है। तभी तो शिक्षा व समृद्धि के पाश्चात्य मानदण्डों को आधार मान लिया है जो संस्कृति-विरोधी हैं, जिनमें नैतिक व मानवीय मूल्यों का विशेष स्थान नहीं है। इसी का परिणाम है कि बुद्धिमान व गरीब नैतिक व्यक्ति सामाजिक दृष्टि से भी हांसिये पर ही रहता है और नैतिकता-विहीन, संवेदनहीन, भ्रष्टाचारी व अपराधी भी सम्पन्न, सभ्य, सम्मान्य व प्रतिष्ठित होता है। इसी संस्कृति-विहीन व्यवस्था के कारण शोषण-प्रधान पूंजीवादी व्यवस्था ही ग्राह्य हो गई है, जिसने रहन-सहन के स्तर को तो उठाया है, पर इस भोगवादी बाजारवादी व्यवस्था के कारण अर्थशास्त्र व तकनीकविज्ञान के सामने नैतिकता व मानवीयता गौण हो गई है। जबकि राधाकृष्णन व कोठारी आयोग की मान्यता थी कि शिक्षा ऐसी होनी चाहिये जो सामाजिक, आर्थिक व सांस्कृतिक परिवर्तन का प्रभावी माध्यम बन सके। इस दृष्टि से भारतीय प्रकृति और संस्कृति के अनुरूप शिक्षा से ही मूल्यपरक उदात्त-गुणों का संप्रेषण और समग्र व्यक्तित्व का निर्माण सम्भव है। इसमें पुराने व नये का बिना विचार किये जो देश की अस्मिता व समाज के हितकर है, उसी को प्रमुखता देनी चाहिए।

## शाखा प्रमुख की कलम से--

प्रिय पाठकों

संस्थान की पत्रिका नयी गूज के पहले अंक का लोकार्पण एक आंतरिक सुख की अनुभूति करा रहा है।

मुझे प्रसन्नता है कि शाखा प्रमुख के रूप में कार्यभार संभालने के बाद मुझे आप सभी से नयी गूज के इस अंक के माध्यम से रूबरू होने का मौका मिल रहा है।

हम कितना भी विकास कर लें किन्तु यदि समाज में संवेदना ही मर गई तो सब व्यर्थ है। इस संवेदनहीनता के चलते समाज में नकारात्मक ऊर्जा दिन प्रति-दिन बढ़ती जा रही है जो निन्दनीय भी है और विचारणीय भी। आवश्यकता है कि हम अविलम्ब इस दिशा में अपने प्रयास आरम्भ कर दें।

वस्तुतः अपने कर्मों से हम अपने भाग्य को बनाते और बिगाड़ते हैं। यदि गंभीरता से चिंतन-मनन किया जाय तो हमारा कार्य-व्यापार हमारे व्यक्तित्व के अनुसार ही आकार ग्रहण करता है और हमें अपने कर्म के आधार पर ही उसका फल प्राप्त होता है। कर्म सिर्फ शरीर की क्रियाओं से ही संपन्न नहीं होता अपितु मनुष्य के विचारों से एवं भावनाओं से भी कर्म संपन्न होता है। वस्तुतः जीवन-भरण के लिए ही किया गया कर्म ही कर्म नहीं है हम जो आचार-व्यवहार अपने माता-पिता बंधु मित्र और रिश्तेदार के साथ करते हैं वह भी कर्म की श्रेणी में आता है। मसलन हम अपने वातावरण सामाजिक व्यवस्था, पारिवारिक

WEBSITE- [nayigoonj.com](http://nayigoonj.com)

Email address [goonjnayi@gmail.com](mailto:goonjnayi@gmail.com) -

WHATSAPP NO. 91-9785837924



समीकरणों आदि के प्रति जितना ही संवेदनशील होंगे हमारा व्यक्तित्व उतनी ही उच्चकोटि की श्रेणी में आयेगा।

आज के जटिल और अति संचारी जीवन-वृत्ति के सफल संचालन हेतु सभी का व्यक्तित्व उच्च आदर्शों पर आधारित हो ऐसी मेरी अभिलाषा है।

यह ज़रूरी नहीं है कि हर कोई हर किसी कार्य में परिपूर्ण हो, परन्तु अपना दायित्व अपनी पूरी कोशिश से निभाना भी देश की सेवा करने के समान ही है। संपूर्ण कर्तव्यनिष्ठा से किया हुआ कार्य आपको अवश्य ही कार्य-समाप्ति की संतुष्टि देगा। कोई भी किया गया कार्य हमारी छाप उस पर अवश्य छोड़ देता है अतएव सदैव अपनी श्रेष्ठतम प्रतिभा से कार्य संपन्न करें। हर छोटी चर्या को और छोटे-से-छोटे से कार्य के हर अंग का आनंद लेकर बढ़ते रहना ही एक अच्छे व्यक्तित्व का उदाहरण है।

यह सर्वविदित तथ्य है कि नयी गूज एक उच्च स्तरीय पत्रिका है जिसमें विभिन्न विधाओं में उच्चस्तरीय लेखों का अनूठा संग्रह है

आप सभी पत्रिका का आनन्द लें एवं अपनी प्रतिक्रियायें ऑनलाइन या ऑफलाइन भेजें।

नयी गूज के माध्यम से हमारा आपका संवाद गतिशील रहेगा। आप सभी अपनी सुन्दर व श्रेष्ठ रचनाओं से नयी गूज को निरन्तर समृद्ध करते रहेंगे इसी विश्वास के साथ।

अंत में मैं सभी सम्पादक मण्डल के सदस्यों एवं रचनाकारों को नयी गूज पत्रिका के सफल सम्पादन एवं प्रकाशन के लिए साधुवाद ज्ञापित करता हूँ करता हूँ।

आप सभी को हार्दिक बधाई के साथ बहुत-बहुत धन्यवाद!!

कालिदास ने काव्य के माध्यम से कहा है-

पुराणमित्येव न साधु सर्व  
न चापि काव्यं नवमित्यवद्यम्।  
सन्तः परीक्ष्यान्यतरद् भजन्ते  
मूढः परप्रत्ययनेय बुद्धिः॥

अर्थात् पुरानी ही सभी चीजें श्रेष्ठ नहीं होती और न नया सब निन्दनीय होता है। इसलिए बुद्धिमान व्यक्ति परीक्षा करके जो हितकर होता है उसी को ग्रहण करते हैं जबकि मूर्ख दूसरों का ही अन्धानुकरण करते हैं।

अस्तु, निर्विवाद रूप से यह सभी स्वीकार करते हैं कि राष्ट्र की रक्षा, का सकारात्मक पक्ष होता है।

प्रकाशन सामग्री भेजने का पता

ई-मेल:[goonjnayi@gmail.com](mailto:goonjnayi@gmail.com)

WEBSITE- [nayigoonj.com](http://nayigoonj.com)

Email address [goonjnayi@gmail.com](mailto:goonjnayi@gmail.com) -

WHATSAPP NO. 91-9785837924

नयी गूँज इंटरनेट पर उपलब्ध है। [www.nayigoonj.com](http://www.nayigoonj.com) पर क्लिक करें।

नयी गूँज में प्रकाशित लेखादि पर प्रकाशक का कॉपीराइट है

शुल्क दर 40/-

वार्षिक: 400/-

त्रैवार्षिक: उपर्युक्त शुल्क-दर का अग्रिम भुगतान 1200/-

को -----द्वारा किया जाना श्रेयस्कर है।

## नियम निर्देश

1 रचनाएं यथासंभव टाइप की हुई हों, रचनाकार का पूरा नाम, पद एवं संपर्क विवरण का उल्लेख अपेक्षित है।

2 लेखों में शामिल छाया-चित्र तथा आँकड़ों से संबंधित आरेख स्पष्ट होने चाहिए। प्रयुक्त भाषा सरल, स्पष्ट एवं सुवाच्य हिंदी भाषा हो।

3 अनुदित लेखों की प्रामाणिकता अवश्य सुनिश्चित करें। अनुवाद में सहायता हेतु संस्थान संपादक मंडल प्रकोष्ठ से संपर्क कर सकते हैं।

4 प्रकाशित रचनाओं में निहित विचारों के लिए संपादक मंडल प्रकोष्ठ उत्तरदायी नहीं होगा और इसके लिए पूरी की पूरी जिम्मेदारी स्वयं लेखक की ही होगी।

## नई गूँज नियमावली

रचनाएं [goonjnayi@gmail.com](mailto:goonjnayi@gmail.com) ई-मेल पते पर भेजी जा सकती हैं। रचनाएं भेजने के लिए नई गूँज के साथ लॉग-इन करें, यह वांछित है। आप हमारे whatsapp no. 9785837924 पर भी अपनी रचनाएँ भेज सकते हैं

प्रिय साथियों,

नई गूँज हेतु आपके सहयोग के लिए आपका हार्दिक धन्यवाद। आशा है कि ये संबंध आगे भी प्रगति के पथ पर अग्रसर रहेंगे। आगामी अंक हेतु आप सबके सक्रिय सहयोग की पुनः आकांक्षा है। आप सभी से एक महत्वपूर्ण अनुरोध है

WEBSITE- [nayigoonj.com](http://nayigoonj.com)

Email address [goonjnayi@gmail.com](mailto:goonjnayi@gmail.com) -

WHATSAPP NO. 91-9785837924

कि आप अपने शोध प्रपत्र निम्न प्रारूप के तहत ही प्रस्तुत करें जिससे कि हमें तकनीकी जटिलताओं का सामना न करना पड़े -

1. प्रकाशन हेतु आपकी रचना के मौलिक होने का स्वतः सत्यापन रचना प्रेषित करते समय "मौलिकता प्रमाण पत्र" पर हस्ताक्षर करना अनिवार्य है। इसके बिना रचना पर विचार करना संभव नहीं होगा
2. रचना कहीं पर भी पूर्व में प्रकाशित नहीं होनी चाहिए !
3. आपकी रचनाएँ एम.एस. ऑफिस में टाइप होना चाहिए
4. फॉन्ट - कृतिदेव 10, मंगल यूनिकोड
5. रचनाओं के साथ अपना पूर्ण पता, मोबाइल नंबर, ईमेल तथा पासपोर्ट साइज की फोटो लगाना अपेक्षित है !
6. आप लेख, कविता, कहानी, किसी भी विधा में रचनाएँ भेज सकते हैं !

### नई गूँज रचनाओं के प्रेषण सम्बंधित नियम व शर्तें :

एक से अधिक रचनायें एक ही वर्ड-डॉक्यूमेंट में भेजें।  
रचनायें अपने पंजीकृत पेज पर दिए गए लिंक इस्तेमाल कर प्रेषित करें।  
यदि आप हिंदी में टाइप करना नहीं जानते हैं, आप गूगल द्वारा उपलब्ध करवायी गयी लिप्यान्तरण सेवा का इस्तेमाल कर सकते हैं। इसके लिए [Google इनपुट उपकरण](#) लिंक पर जाएँ।

स-आभार

संपादक मंडल

**Note:-** प्रत्येक रचना लेखक की स्वयं मौलिक तथा लिखित है! इसमें लेखक के स्वयं के विचार हैं तथा कोई त्रुटि होने पर लेखक स्वयं जिम्मेदार होगा।

WEBSITE- [nayigoonj.com](http://nayigoonj.com)

Email address [goonjnayi@gmail.com](mailto:goonjnayi@gmail.com) -

WHATSAPP NO. 91-9785837924



# अनुक्रमाणिका:- मार्च अंक 2025

क्रम संख्या	विवरणिका	लेखक	पृष्ठ संख्या
लेख -			
1	परीक्षाकाल: हौवा न बनाएं परीक्षा का	डॉ. घनश्याम बादल	1 - 3
2	सही दिशा, सही समय	बृजेश कुमार	4 - 8
3	खुद से कहें	डॉ. शिवा धमेजा	9 - 13
4	सरस्वती राजमणि - एक गुमनाम जासूस कविता	चित्रगुप्त	14 - 16
5	खुशियों की होली /कुंभ महात्म्य	प्रिया देवांगन	17 - 19
6	नदी का किनारा	प्रेम ठक्कर	20
7	अपनी झोपड़ी में राज करना	डॉ. नरेश कुमार सिहाग	21
8	कॉकरोच/ अनंत के उस पार	ऋषभ शुक्ला	22 - 24
9	आग,षड्यंत्र, सुरक्षा और अधिकार द्वापर और कलयुग/ चैतन्य महाप्रभु	सुबीर कुमार भट्टाचारजी	25 - 28
10	दोहा	विनोद मानवी	29 - 30
11	गजल	चित्रगुप्त	31 - 35

आलेख			
12	प्रयागराज में इस बार का कुंभ क्यों कहा जा रहा है महाकुंभ	डॉ उमेश कुमार वत्स	36 - 38
13	आज का द्रोण :सामाजिक यथार्थ	डॉ. नरेश कुमार सिहाग	39 - 43
14	सफलता मंत्र: अभ्यास, आत्मविश्वास, समय प्रबंधन और प्रस्तुतीकरण	डॉ. घनश्याम बादल	44 - 46
15	नाटिका - युद्ध और शांति	डॉ. सुमन धर्मवीर	47 - 61
16	संस्मरण	सुधा गोयल	62 - 63
17	निबंध- न्याय में विलंब न्याय का अस्वीकार है कहानी		64 - 66
18	डॉली	अनवर सुहैल	67 - 73
19	उड़ान	उपासना राज	74 - 76
20	करंट अफेयर्स- फरवरी माह 2025		77 - 79
21	हिंदी के महत्वपूर्ण प्रश्न		80 - 84
22	रोचक तथ्य		85 - 87

## परीक्षाकाल :

### हौवा न बनाएं परीक्षा को नहीं लादें अपेक्षाओं का बोझ !

भीषण प्रतिद्वन्दिता के इस युग में 'परीक्षा' शब्द अच्छो - अच्छो की हवा निकाल देता है। सरकार ने कितने ही प्रयास किए पर परीक्षा का भय खत्म नहीं हुआ उल्टे हुआ यह कि पठन पाठन की गुणवत्ता रसातल में चली गई। एक बार फिर से परीक्षा का हौवा बोर्ड परीक्षा के रूप में बच्चों को डराने आ गया है। आखिर क्या करें कि परीक्षा का तनाव, भय व बुखार कम हो सके।

#### हटाएं अपेक्षा का बोझ:

इन दिनों सी बी एस सी के दसवीं के साथ ही 12 वीं की कक्षाओं के विद्यार्थियों की घबराहट आसानी से देखी जा सकती है। रात दिन का टेंशन, दिन भर की ट्यूशन की भागदौड़ और उस पर मां बाप की अपेक्षाओं का बोझ व अपनी महत्वाकांक्षाएं इन सब के चलते परीक्षा का खौफ खत्म होने का नाम नहीं ले रहा है। हर मां बाप को चाहिए कि वह बच्चों को उत्कृष्ट करने के लिए तो प्रेरित करें पर अपनी अपेक्षाओं के बोझ से कोमल मन को तनावग्रस्त न करें, उन्हें अपनी सामर्थ्य व प्रतिभा के अनुसार परीक्षा देने दें

#### तुलना नहीं करें :

परीक्षा के अंक प्रतिशत के आधार पर, पर एक की तुलना दूसरे से करना बच्चों का भारी अहित कर रहा है। आज भी हर बच्चे का मुल्यांकन उसे परीक्षा में मिलने वाली सफलता, असफलता अथवा प्रतिशत या सी0 जी0 पी0 ए0 से किया जाता है जो उचित नहीं है, पर समाज व मां बाप बदलने का नाम ही ले रहे हैं परिणामस्वरूप 'एग्जाम फोबिया' का आतंक भी खत्म होने का नाम नहीं ले रहा है जिसके चलते परीक्षा हौवा बन गई है हमें बच्चों को बताना होगा कि परीक्षा केवल एक खुद को आंकने का माध्यम है न कि फर्स्ट सेकिंड या मैरिट में आने की चूहा दौड़।

#### जीवन मरण नहीं परीक्षा:

एक आम मानसिकता है परीक्षा में सफलता को शिक्षा व आजीवका का एक मात्र साधन मान लिया गया है और कोई भी अभिभावक व छात्र इस सम्बन्ध में समझौता करने को कतई तैयार नहीं है, वह परीक्षा में अपना सर्वस्व झोंक देना ही अंतिम लक्ष्य मान बैठे हैं। परीक्षा को हर तरह से जीवन मरण का प्रश्न बना लेना कहां तक उचित है इस प्रश्न पर

विशेषज्ञों की राय समय समय पर आती रहती है। पर, राय अपनी जगह और पुरानी सोच अपनी जगह कायम है। ठीक है, परीक्षा जरूरी है पर, क्या परीक्षा को जीवन मरण का प्रश्न या कि अंतिम लक्ष्य मान लेना किसी भी दृष्टि से सही है? हतोत्साहित महसूस कर रहे बच्चे को समझाएं कि पहले जीवन, फिर स्वास्थ्य और बाद में परीक्षा। जान है तो जहान है, डटकर परीक्षा दें, अपना सर्वश्रेष्ठ करने का प्रयास करें तो परीक्षा भी अच्छा परिणाम देगी ही।

## अंतिम प्रमाणपत्र नहीं परीक्षा :

परीक्षा केवल एक समय विशेष समय में किये गये प्रयास का एक छोटा सा मूल्यांकन ही तो है न कि इस बात का सर्टिफिकेट कि परीक्षार्थी को एक परीक्षा के आधार पर लायक या नालायक घोषित कर दें। परीक्षा को ऐसा ऐसा हथियार न बनाएं जो कि बच्चे का जीवन ही ले ले या फिर उसे ता उम्र इस बात के लिये धिक्कारता रहे कि वह एक परीक्षा में फेल हो गया था, अथवा एक परीक्षा विशेष में अच्छे अंक ले आने से उसे उम्र भर मेधावी की पदवी दे दी जाये। परीक्षा आपके अच्छे या बुरे होने का अंतिम प्रमाणपत्र नहीं है। परीक्षा मंजिल का एक मील का पत्थर मात्र है, मंजिल नहीं इसी भाव से दें परीक्षा।

## बदलें मां बाप :

अच्छा हो कि परीक्षा को एक छोटी सी समयावधि में किये गये परिश्रम के परिणाम समझने तक ही सीमित करके देखने की आदत हम और हमारा समाज डाल ले अन्यथा परीक्षा नाम का खौफ, आतंक और भय का ही प्रतीक बन हमारी आने वाली पीढ़ियों को डराता रहेगा, एक हौवा बना रहेगा।

## परीक्षा नहीं ज्ञान हो पहचान:

भारत में परीक्षा को नौकरी, रोजी रोटी या समाजिक रुतबे से इतना ज्यादा जोड़ दिया गया है कि वह एक भयंकर खौफ का रूप ले चुकी है। होना तो यह चाहिये था कि शिक्षा को और परीक्षा को ज्ञानार्जन की भूख से जोड़ा जाए जिससे विद्यार्थी अधिक से अधिक सीखने का लक्ष्य हासिल करके अपने जीवन में सफल और सुखी हो।

आज बड़ी बड़ी डिग्रियां लिये हुये लोग तो आसानी से मिल जायेंगे पर व्यावाहारिक ज्ञान व जीवन को शांत, सुघड़ तरीके से जीने का हुनर बांटने वाले गुणी जन ढूँढने पर भी शायद ही मिलें। परीक्षा जीवन को ढंग से जीने की सीढ़ी समझ कर दें। ज्ञानार्जन करेंगे तो बोर्ड परीक्षा तो क्या जीवन की परीक्षा भी नहीं डरा सकेगी।

## बदलें परीक्षा की अवधारणा:

रटा रटाया ज्ञान पाने और देने वाले लोगों की कतार यदि कम करनी है तो न केवल परीक्षा के खौफ को कम और खत्म करना होगा बल्कि शिक्षा के ढांचे को भी आमूल - चूल बदलना होगा। केवल आज यह कल वह मूल्यांकन की प्रक्रिया

अपनाने मात्र से कुछ भी नहीं होने वाला है ।

**व्यवहारिक बने शिक्षा प्रणाली :**

व्यवहारिक शिक्षा को जमीन पर उतारने की पूरी व्यवस्था करनी होगी और यदि ऐसा करना है तो परीक्षा की वर्तमान अवधारणा को पूरी तरह से बदलना ही होगा। इसके लिये जहाँ छात्रों को परीक्षा परिणाम व इसके भय से मुक्त करना होगा वहीं शिक्षको का मूल्यांकन करने का मानदंड भी बदलना पड़ेगा क्योंकि यदि उन पर निरंतर परिणाम के भय की तलवार लटकी रही तो सारे प्रयासों के बावजूद परीक्षा का खौफ कम नहीं होने वाला है ।



डॉ० घनश्याम बादल



# सही दिशा, सही समय

“सही दिशा और सही समय का ज्ञान ना हो  
तो उगता सूरज भी डूबता हुआ दिखाई देता है।”

“सही दिशा और सही समय का ज्ञान ना हो तो उगता सूरज भी डूबता हुआ दिखाई देता है।” यह एक बहुत ही महत्वपूर्ण बात है जो हमें जीवन के कई पहलुओं के बारे में सोचने पर मजबूर करती है।

## सही दिशा का महत्व

जीवन में सफलता प्राप्त करने के लिए सही दिशा का चुनाव करना बहुत जरूरी है। यदि हम गलत दिशा में जा रहे हैं, तो हम कभी भी अपने लक्ष्य तक नहीं पहुंच सकते हैं। सही दिशा का चुनाव करने के लिए हमें अपने लक्ष्यों और अपनी क्षमताओं के बारे में पता होना चाहिए। हमें यह भी जानना चाहिए कि हमारे लिए क्या महत्वपूर्ण है।

## सही समय का महत्व

सही समय पर सही काम करना भी बहुत जरूरी है। यदि हम सही समय पर काम नहीं करते हैं, तो हम अवसर खो सकते हैं। सही समय का चुनाव करने के लिए हमें अपने लक्ष्यों और अपनी प्राथमिकताओं के बारे में पता होना चाहिए। हमें यह भी जानना चाहिए कि कब कौन सा काम करना सबसे अच्छा होगा अपने लक्ष्यों और अपनी क्षमताओं के बारे में जानें

जीवन एक यात्रा है, और इस यात्रा में सफलता प्राप्त करने के लिए हमें अपने लक्ष्यों और अपनी क्षमताओं के बारे में जानना बहुत जरूरी है। ये प्रश्न कि लक्ष्य क्या है? इस पर यदि बात करें तो लक्ष्य वह है जिसे हम अपने जीवन में प्राप्त करना चाहते हैं। यह एक विशिष्ट उद्देश्य हो सकता है, जैसे कि एक अच्छी नौकरी प्राप्त करना, एक घर खरीदना, या एक सफल व्यवसाय शुरू करना। यह एक अधिक सामान्य उद्देश्य भी हो सकता है, जैसे कि खुश रहना, स्वस्थ रहना, या दूसरों की मदद करना। लक्ष्य इसलिए महत्वपूर्ण हैं क्योंकि लक्ष्य हमें जीवन में दिशा प्रदान करते हैं। वे हमें बताते हैं कि हमें क्या करना है और हमें कहाँ जाना है। लक्ष्य हमें प्रेरित करते हैं और हमें अपने सपनों को प्राप्त करने के लिए कड़ी मेहनत करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। इसके लिए आवश्यकता है कि हम अपनी क्षमताओं को जानें अपनी क्षमताओं को जानने के लिए हमें खुद का विश्लेषण करना होगा। हमें अपनी ताकत और कमजोरियों के बारे में पता होना चाहिए। हमें यह भी जानना चाहिए कि हम क्या करने में अच्छे हैं और

हमें किन क्षेत्रों में सुधार करने की आवश्यकता है। और दूसरा ये महत्वपूर्ण है कि अपने लक्ष्यों को कैसे निर्धारित करें?

**अपने लक्ष्यों को निर्धारित करते समय हमें कुछ बातों का ध्यान रखना चाहिए:**

अपने लक्ष्यों को विशिष्ट बनाएं: अपने लक्ष्यों को जितना संभव हो उतना विशिष्ट बनाएं। उदाहरण के लिए, "एक अच्छी नौकरी प्राप्त करना" कहने के बजाय, "एक सॉफ्टवेयर इंजीनियर के रूप में एक बहुराष्ट्रीय कंपनी में नौकरी प्राप्त करना" कहें।

अपने लक्ष्यों को मापने योग्य बनाएं: अपने लक्ष्यों को मापने योग्य बनाएं ताकि आप यह जान सकें कि आप उन्हें प्राप्त करने की दिशा में कितनी प्रगति कर रहे हैं।

अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने योग्य बनाएं: ऐसे लक्ष्य निर्धारित करें जिन्हें आप वास्तव में प्राप्त कर सकते हैं।

अपने लक्ष्यों को समयबद्ध बनाएं: अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए एक समय सीमा निर्धारित करें।

अपने लक्ष्यों को लिखें: अपने लक्ष्यों को लिखने से वे अधिक ठोस और वास्तविक बन जाते हैं।

अपनी क्षमताओं का उपयोग कैसे करें? इसके लिए एक बार जब आप अपने लक्ष्यों और अपनी क्षमताओं के बारे में जान जाते हैं, तो आप अपनी क्षमताओं का उपयोग अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए कर सकते हैं। अपनी क्षमताओं का उपयोग करने के लिए आपको कड़ी मेहनत करनी होगी और अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए प्रतिबद्ध रहना होगा।

यदि आप अपने लक्ष्यों को छोटे लक्ष्यों में तोड़ें: अपने लक्ष्यों को छोटे लक्ष्यों में तोड़ने से वे अधिक प्रबंधनीय बन जाते हैं। अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए एक योजना बनाएं: एक योजना बनाने से आपको अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने में मदद मिलेगी। अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए दूसरों से मदद लें: दूसरों से मदद लेने में संकोच न करें। कभी भी हार न मानें: अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए कड़ी मेहनत करते रहें, भले ही आपको असफलता का सामना करना पड़े। अपने लक्ष्यों और अपनी क्षमताओं के बारे में जानना जीवन में सफलता प्राप्त करने के लिए बहुत जरूरी है। अपने लक्ष्यों को निर्धारित करें, अपनी क्षमताओं का उपयोग करें, और कभी भी हार न मानें।

अपने लिए क्या महत्वपूर्ण है, यह जानें - जीवन में सफलता और खुशी प्राप्त करने के लिए यह जानना बहुत जरूरी है कि आपके लिए क्या महत्वपूर्ण है। मूल्य क्या हैं? ये समझो मूल्य वे चीजें हैं जो आपके लिए महत्वपूर्ण हैं। वे आपके विश्वास, आपके सिद्धांत, और आपके आदर्श हैं। मूल्य आपको यह तय करने में मदद करते हैं कि आप अपना जीवन कैसे जीना चाहते हैं। अपने मूल्यों को कैसे पहचानें? इसके लिए आपको कुछ समय निकालकर अपने बारे में सोचने की आवश्यकता है। अपने जीवन के बारे में सोचें: अपने जीवन के बारे में सोचें और उन चीजों के बारे में सोचें जो आपके लिए महत्वपूर्ण हैं।

अपने अनुभवों के बारे में सोचें: अपने अनुभवों के बारे में सोचें और उन चीजों के बारे में सोचें जिन्होंने आपको सबसे अधिक खुशी या संतुष्टि प्रदान की है। दूसरों के बारे में सोचें: उन लोगों के बारे में सोचें जिनकी आप प्रशंसा करते हैं और उन गुणों के बारे में सोचें जो उनमें हैं। अपने मूल्यों की एक सूची बनाएं: अपने मूल्यों की एक सूची बनाएं। एक बार जब आप अपने मूल्यों को जान जाते हैं, तो आप उनका उपयोग अपने जीवन के बारे में निर्णय लेने के लिए कर सकते हैं। अपने मूल्यों का उपयोग करके आप यह तय कर सकते हैं कि आप क्या करना चाहते हैं, आप किसके साथ रहना चाहते हैं, और आप अपना समय और ऊर्जा कैसे व्यतीत करना चाहते हैं।

यदि आप अपने मूल्यों को प्राथमिकता दें: अपने मूल्यों को प्राथमिकता दें और उन चीजों के लिए समय निकालें जो आपके लिए महत्वपूर्ण हैं। अपने मूल्यों के अनुसार जिएं: अपने मूल्यों के अनुसार जीने से आपको खुशी और संतुष्टि मिलेगी। अपने मूल्यों के बारे में दूसरों से बात करें: अपने मूल्यों के बारे में दूसरों से बात करने से आपको अपने मूल्यों को बेहतर ढंग से समझने में मदद मिलेगी। अपने मूल्यों को बदलते रहें: आपके मूल्य समय के साथ बदल सकते हैं। अपने मूल्यों को समय-समय पर समीक्षा करते रहें। यह जानना कि आपके लिए क्या महत्वपूर्ण है, जीवन में सफलता और खुशी प्राप्त करने के लिए बहुत जरूरी है। अपने मूल्यों को पहचानें, अपने मूल्यों के अनुसार जिएं, और अपने मूल्यों को बदलते रहें। अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए एक योजना बनाएं जिसमें लक्ष्य निर्धारित करना महत्वपूर्ण है, लेकिन लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए एक योजना बनाना भी उतना ही महत्वपूर्ण है।

योजना क्या है? एक योजना वही खाका है जो आपको अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए आवश्यक कदमों को दर्शाता है। एक योजना में आपके लक्ष्य, आपकी समय सीमा, आपके कार्य, और आपके संसाधन शामिल होने चाहिए। योजना क्यों महत्वपूर्ण है? क्योंकि एक योजना आपको अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने में मदद करती है। यह आपको संगठित रहने, प्रेरित रहने, और ट्रैक पर रहने में मदद करती है। एक योजना कैसे बनाएं? इस पर गौर कीजिए, एक योजना बनाते समय आपको कुछ बातों का ध्यान रखना चाहिए: अपने लक्ष्यों को फिर से देखें: अपनी योजना बनाने से पहले अपने लक्ष्यों को फिर से देखें।

अपने लक्ष्यों को छोटे लक्ष्यों में तोड़ने से वे अधिक प्रबंधनीय बन जाते हैं। अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए आवश्यक कार्यों की एक सूची बनाएं। प्रत्येक कार्य को पूरा करने के लिए एक समय सीमा निर्धारित करें। अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए आपको किन संसाधनों की आवश्यकता होगी, इसकी पहचान करें। अपनी योजना लिखने से यह अधिक ठोस और वास्तविक बन जाती है।

अपनी योजना का उपयोग कैसे करें? उसका तरीका देखें एक बार जब आप अपनी योजना बना लेते हैं, तो आपको इसका पालन करना होगा। अपनी योजना को नियमित रूप से देखें और अपनी प्रगति को ट्रैक करें। यदि आवश्यक हो तो अपनी योजना में बदलाव करें। यदि आप अपनी योजना को दूसरों के साथ

साझा करें: अपनी योजना को दूसरों के साथ साझा करने से आपको प्रेरित रहने में मदद मिलेगी।

अपनी योजना को नियमित रूप से समीक्षा करें और देखें कि आप कितनी प्रगति कर रहे हैं। अपनी योजना में बदलाव करने के लिए तैयार रहें। अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए कड़ी मेहनत करते रहें, भले ही आपको असफलता का सामना करना पड़े, एक योजना बनाना लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। एक योजना बनाएं, अपनी योजना का पालन करें, और कभी भी हार न मानें। सही समय पर सही काम करें

जीवन में सफलता प्राप्त करने के लिए सही समय पर सही काम करना बहुत जरूरी है।

अब बात करते हैं समय कि समय बहुत मूल्यवान है। हमें इसका सदुपयोग करना चाहिए। हमें अपने समय को उन चीजों पर खर्च करना चाहिए जो हमारे लिए महत्वपूर्ण हैं। सही समय क्या है?

सही समय वह है जब कोई काम करने के लिए सबसे अच्छा होता है। सही समय का चुनाव करने के लिए हमें अपने लक्ष्यों, अपनी प्राथमिकताओं, और अपनी परिस्थितियों के बारे में पता होना चाहिए। सही समय का चुनाव कैसे करें? सही समय का चुनाव करने के लिए हमें कुछ बातों का ध्यान रखना चाहिए:

अपने लक्ष्यों को जानने से आपको यह तय करने में मदद मिलेगी कि आपको कब क्या करना चाहिए। अपनी प्राथमिकताओं को जानने से आपको यह तय करने में मदद मिलेगी कि आपको अपना समय कैसे व्यतीत करना चाहिए। अपनी परिस्थितियों का आकलन करने से आपको यह तय करने में मदद मिलेगी कि आप क्या कर सकते हैं और क्या नहीं कर सकते हैं। कभी-कभी हमें अपने अंतर्ज्ञान पर भरोसा करना चाहिए।

सही समय पर काम करने से हमें सफलता मिलने की संभावना बढ़ जाती है। सही समय पर काम करने से हमारी उत्पादकता बढ़ती है। सही समय पर काम करने से हमारा तनाव कम होता है। सही समय पर काम करने से हमारा आत्मविश्वास बढ़ता है। यदि आप अपने समय का प्रबंधन करने के लिए एक समय सारणी बनाएं। अपने कार्यों को प्राथमिकता दें और सबसे महत्वपूर्ण कार्यों को पहले करें, अपने कार्यों को पूरा करने के लिए समय सीमा निर्धारित करें

जीवन एक बहुआयामी यात्रा है, जिसमें सफलता और खुशी की प्राप्ति के लिए कई पहलुओं पर ध्यान देना आवश्यक है। “सही दिशा और सही समय का ज्ञान ना हो तो उगता सूरज भी डूबता हुआ दिखाई देता है” यह उक्ति जीवन के इसी सत्य को दर्शाती है।

अपने लक्ष्यों और अपनी क्षमताओं को जानना, अपने मूल्यों को पहचानना, लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए योजना बनाना, और सही समय पर सही काम करना – ये सभी सफलता की राह पर महत्वपूर्ण कदम हैं।

अपने लक्ष्यों को निर्धारित करते समय, उन्हें विशिष्ट, मापने योग्य, प्राप्त करने योग्य, समयबद्ध और लिखित रूप में परिभाषित करें। अपनी क्षमताओं का विश्लेषण करें और अपनी ताकत और कमजोरियों को

पहचानें। अपने मूल्यों को समझें और उनके अनुसार जीवन जीने का प्रयास करें।  
लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए एक विस्तृत योजना बनाएं, जिसमें कार्यों की सूची, समय सीमा और आवश्यक संसाधनों का उल्लेख हो। समय का सदुपयोग करें और सही समय पर सही काम करें।  
यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि जीवन में चुनौतियां और असफलताएं आएंगी। लेकिन, हमें हार नहीं माननी चाहिए और अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए निरंतर प्रयास करते रहना चाहिए।  
इन सभी तत्वों को मिलाकर, हम एक सफल और खुशहाल जीवन जी सकते हैं।



बृजेश कुमार

## खुद से कहें

मैं खुश हूँ, मैं स्वस्थ हूँ, मेरा जीवन आनंद से भरा है:

एक जीवन दर्शन

यह एक साधारण सा दिखने वाला वाक्य है, लेकिन इसमें जीवन का गहरा सार छुपा हुआ है। जब हम खुद से यह कहते हैं कि "मैं खुश हूँ, मैं स्वस्थ हूँ, मेरा जीवन आनंद से भरा है", तो हम अपने भीतर एक सकारात्मक ऊर्जा का संचार करते हैं। यह ऊर्जा हमें जीवन की चुनौतियों का सामना करने और खुश रहने की शक्ति प्रदान करती है।

खुशी कोई बाहरी वस्तु नहीं है जिसे हम प्राप्त कर सकते हैं। यह एक आंतरिक अवस्था है जिसे हमें खुद ही पैदा करना होता है। खुशी एक चुनाव है, एक दृष्टिकोण है। हम चाहे तो हर परिस्थिति में खुश रह सकते हैं, या फिर हम नकारात्मक विचारों में उलझकर दुखी हो सकते हैं। खुश रहने के लिए सबसे पहले हमें अपने विचारों को सकारात्मक बनाना होगा। हमें अपने जीवन के अच्छे पहलुओं पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए और नकारात्मक विचारों को दूर करना चाहिए। हमें अपने आप को स्वीकार करना चाहिए और अपनी गलतियों से सीखना चाहिए।

खुशी हमारे आसपास ही मौजूद है। हमें बस उसे पहचानने की जरूरत है। एक सुंदर फूल, एक मधुर संगीत, या किसी प्रियजन की मुस्कान भी हमें खुशी दे सकती है। मनुष्य जीवन भर खुशी की तलाश में भटकता रहता है। वह इसे धन, दौलत, शोहरत, रिशतों, और भौतिक सुखों में ढूँढने की कोशिश करता है। लेकिन, क्या वाकई खुशी इन बाहरी चीजों में छुपी है? गहराई से विचार करने पर हम पाते हैं कि खुशी कोई बाहरी वस्तु नहीं है जिसे हम प्राप्त कर सकते हैं। यह एक आंतरिक अवस्था है, एक अनुभूति है, जो हमारे भीतर से उत्पन्न होती है।

खुशी एक मानसिकता है, एक दृष्टिकोण है। यह हमारे सोचने और महसूस करने के तरीके पर निर्भर करती है। जो व्यक्ति सकारात्मक और आशावादी दृष्टिकोण रखता है, वह हर परिस्थिति में खुश रह सकता है। वहीं, जो व्यक्ति नकारात्मक और निराशावादी दृष्टिकोण रखता है, वह सुख-सुविधाओं के बावजूद दुखी रह सकता है।

खुशी हमारे विचारों और भावनाओं पर नियंत्रण रखने की क्षमता है। जब हम अपने विचारों को सकारात्मक दिशा में ले जाते हैं और नकारात्मक भावनाओं को दूर करते हैं, तो हम खुशी का अनुभव करते हैं। खुशी एक चुनाव है। हम चाहे तो हर परिस्थिति में खुश रह सकते हैं, या फिर हम नकारात्मक विचारों में

उलझकर दुखी हो सकते हैं। यह हमारी अपनी मर्जी है कि हम क्या चुनते हैं। खुशी कोई मंजिल नहीं है, बल्कि एक यात्रा है। यह एक सतत प्रक्रिया है जिसे हमें हर पल जीना होता है। खुश रहने के लिए हमें प्रयास करना होगा, अभ्यास करना होगा। खुशी पाने के लिए हमें अपने आप को जानना होगा। हमें अपनी रुचियों और मूल्यों को पहचानना होगा। हमें अपने लक्ष्यों को निर्धारित करना होगा और उन्हें प्राप्त करने के लिए प्रयास करना होगा

खुशी एक उपहार है जो हमें अपने आप को देना होता है। यह एक अनमोल खजाना है जिसे हमें संजोकर रखना होता है। खुशी बांटने से बढ़ती है। जब हम दूसरों को खुशी देते हैं, तो हमें भी खुशी मिलती है। इसलिए, हमें हमेशा दूसरों की मदद करनी चाहिए और उन्हें खुश करने की कोशिश करनी चाहिए। खुशी के कई स्रोत हो सकते हैं। कुछ लोगों को प्रकृति में खुशी मिलती है, तो कुछ लोगों को संगीत में। कुछ लोगों को अपने परिवार और दोस्तों के साथ समय बिताने में खुशी मिलती है, तो कुछ लोगों को अपने काम में।

हमें अपने खुशी के स्रोतों को पहचानना चाहिए और उन्हें अपने जीवन में शामिल करना चाहिए।

आप सकारात्मक सोचें , नकारात्मक विचारों को दूर करें और सकारात्मक विचारों पर ध्यान केंद्रित करें। आप वर्तमान में जिएं , अतीत की चिंताओं और भविष्य की योजनाओं में न उलझें। वर्तमान पल का आनंद लें।

आप कृतज्ञ रहें , अपने जीवन में जो कुछ भी अच्छा है उसके लिए ईश्वर और दूसरों के प्रति आभार व्यक्त करें। आप दूसरों की मदद करें , दूसरों की मदद करने से आपको खुशी मिलेगी। आप अपने लिए समय निकालें, अपने लिए कुछ समय निकालें और वह करें जो आपको पसंद है। आप स्वस्थ रहें , स्वस्थ रहने से आप खुश रहेंगे। आप हंसें और मुस्कुराएं, हंसने और मुस्कुराने से तनाव कम होता है और खुशी बढ़ती है।

खुशी कोई बाहरी वस्तु नहीं है जिसे हम प्राप्त कर सकते हैं। यह एक आंतरिक अवस्था है, एक अनुभूति है, जो हमारे भीतर से उत्पन्न होती है। खुशी एक मानसिकता है, एक चुनाव है, एक यात्रा है, और एक उपहार है। खुशी पाने के लिए हमें अपने आप को जानना होगा, अपने विचारों और भावनाओं पर नियंत्रण रखना होगा, और सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाना होगा। खुशी हमारे आसपास ही मौजूद है। हमें बस उसे पहचानने की जरूरत है।

तो चलिए, आज से ही खुद से यह कहना शुरू करते हैं कि “मैं खुश हूँ। “ और देखिए, कैसे आपका जीवन बदल जाता है।

स्वास्थ्य: जीवन का आधार

स्वास्थ्य हमारे जीवन का आधार है। स्वस्थ रहने के लिए हमें अपने शरीर और मन का ध्यान रखना

चाहिए। हमें पौष्टिक भोजन खाना चाहिए, नियमित रूप से व्यायाम करना चाहिए, और पर्याप्त नींद लेनी चाहिए। हमें अपने मन को भी स्वस्थ रखना चाहिए। तनाव और चिंता हमारे स्वास्थ्य के लिए हानिकारक हैं। हमें तनाव से बचने के लिए योग, ध्यान, या अन्य relaxation techniques का अभ्यास करना चाहिए। जब हम स्वस्थ होते हैं, तो हम जीवन का पूरी तरह से आनंद ले सकते हैं। हम अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए कड़ी मेहनत कर सकते हैं, और अपने प्रियजनों के साथ समय बिता सकते हैं। स्वास्थ्य हमारे जीवन का सबसे महत्वपूर्ण पहलू है। यह हमारे शारीरिक, मानसिक और सामाजिक कल्याण को प्रभावित करता है। एक स्वस्थ व्यक्ति ही जीवन के सभी क्षेत्रों में सफल हो सकता है।

**शारीरिक स्वास्थ्य:** शारीरिक स्वास्थ्य हमारे शरीर की स्थिति को संदर्भित करता है। एक स्वस्थ शरीर में सभी अंग ठीक से काम करते हैं और हमें किसी भी प्रकार की बीमारी नहीं होती है।

**मानसिक स्वास्थ्य:** मानसिक स्वास्थ्य हमारे मन की स्थिति को संदर्भित करता है। एक स्वस्थ मन शांत और खुश रहता है।

**सामाजिक स्वास्थ्य:** सामाजिक स्वास्थ्य हमारे सामाजिक संबंधों को संदर्भित करता है। एक स्वस्थ व्यक्ति अपने परिवार और दोस्तों के साथ अच्छे संबंध रखता है।

एक स्वस्थ व्यक्ति ही जीवन के सभी क्षेत्रों में सफल हो सकता है। स्वस्थ रहने से हमारी कार्य क्षमता बढ़ती है और हम अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए अधिक मेहनत कर सकते हैं। एक स्वस्थ व्यक्ति ही जीवन का आनंद ले सकता है। स्वस्थ रहने से हम खुश और संतुष्ट रहते हैं। एक स्वस्थ जीवन शैली अपनाने से हम लंबी और स्वस्थ जीवन जी सकते हैं।

स्वास्थ्य हमारे जीवन का आधार है। हमें अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखना चाहिए और स्वस्थ रहने के लिए सभी आवश्यक कदम उठाने चाहिए। स्वस्थ रहने से हम एक खुशहाल और सफल जीवन जी सकते हैं।

**आनंद: जीवन का सार**

आनंद जीवन का सार है। आनंद हमें जीवन को जीने की प्रेरणा देता है। आनंद हमें हर पल का आनंद लेने के लिए प्रेरित करता है। आनंद हमारे आसपास ही मौजूद है। हमें बस उसे महसूस करने की जरूरत है। एक बच्चे की हंसी, एक सुंदर सूर्यास्त, या किसी दोस्त के साथ बातचीत भी हमें आनंद दे सकती है। जब हम खुश होते हैं और स्वस्थ होते हैं, तो हम अपने जीवन में आनंद का अनुभव करते हैं। आनंद हमें जीवन को पूरी तरह से जीने के लिए प्रेरित करता है।

"मैं खुश हूँ, मैं स्वस्थ हूँ, मेरा जीवन आनंद से भरा है": एक मंत्र

यह वाक्य एक मंत्र की तरह है। जब हम इसे बार-बार दोहराते हैं, तो यह हमारे अवचेतन मन में बैठ जाता है। यह हमारे विचारों और भावनाओं को सकारात्मक बनाता है। यह वाक्य हमें याद दिलाता है कि हम



अपने जीवन के निर्माता हैं। हम अपने जीवन को खुशियों, स्वास्थ्य, और आनंद से भर सकते हैं। यह वाक्य हमें प्रेरित करता है कि हम अपने जीवन को पूरी तरह से जिएं। आनंद, एक ऐसा भाव जो हर मनुष्य अपने जीवन में अनुभव करना चाहता है। यह एक ऐसी अनुभूति है जो हमें खुशी, संतोष और तृप्ति से भर देती है। आनंद ही जीवन का सार है, क्योंकि यही वह चीज है जो हमें जीने की प्रेरणा देती है। आनंद को परिभाषित करना मुश्किल है, क्योंकि यह एक व्यक्तिपरक अनुभव है। जो चीज एक व्यक्ति को आनंदित करती है, वह दूसरे व्यक्ति को शायद न करे। फिर भी, कुछ सामान्य तत्व हैं जो आनंद के अनुभव में शामिल होते हैं। इनमें शामिल हैं-

**खुशी:** आनंद एक सकारात्मक भाव है जो खुशी से जुड़ा हुआ है। जब हम आनंदित होते हैं, तो हम खुश महसूस करते हैं।

**संतोष:** आनंद में संतोष की भावना भी शामिल होती है। जब हम आनंदित होते हैं, तो हम अपने जीवन से संतुष्ट महसूस करते हैं।

**तृप्ति:** आनंद हमें तृप्ति का अनुभव कराता है। जब हम आनंदित होते हैं, तो हम पूर्ण महसूस करते हैं। आनंद के कई स्रोत हो सकते हैं। कुछ लोगों को प्रकृति में आनंद मिलता है, तो कुछ लोगों को संगीत में। कुछ लोगों को अपने परिवार और दोस्तों के साथ समय बिताने में आनंद मिलता है, तो कुछ लोगों को अपने काम में।

आनंद के कुछ सामान्य स्रोतों में शामिल हैं:

**प्रकृति:** प्रकृति में समय बिताने से हमें शांति और सुकून मिलता है, जो आनंद का अनुभव कराता है।

**संगीत:** संगीत सुनने या बजाने से हमें खुशी और उत्साह का अनुभव होता है।

**रिश्ते:** अपने परिवार और दोस्तों के साथ समय बिताने से हमें प्यार और जुड़ाव का एहसास होता है, जो आनंद का स्रोत है।

**काम:** अपने काम में सफल होने से हमें गर्व और संतुष्टि का अनुभव होता है, जो आनंद का कारण बनता है।

**शौक:** अपने शौक को पूरा करने से हमें खुशी और मनोरंजन मिलता है, जो आनंद का स्रोत है।

आनंद हमारे जीवन के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। यह हमारे शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य को बेहतर बनाने में मदद करता है। आनंद हमें तनाव कम करने, बेहतर नींद लेने और अधिक ऊर्जावान महसूस करने में मदद करता है। आनंद हमारे रिश्तों को भी बेहतर बनाने में मदद करता है। जब हम आनंदित होते हैं, तो हम दूसरों के साथ अधिक सकारात्मक और प्रेमपूर्ण होते हैं। आनंद हमें अपने जीवन में अधिक अर्थ और उद्देश्य खोजने में भी मदद करता है। जब हम आनंदित होते हैं, तो हम अपने जीवन के बारे में अधिक सकारात्मक महसूस करते हैं और अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए अधिक प्रेरित होते हैं।

आनंद प्राप्त करने के लिए हमें कुछ प्रयास करने होंगे-

अपने आनंद के स्रोतों को पहचानें: पता करें कि आपको किन चीजों से आनंद मिलता है।

अपने जीवन में आनंद के लिए जगह बनाएं: अपने जीवन में उन चीजों के लिए समय निकालें जो आपको आनंदित करती हैं।

सकारात्मक दृष्टिकोण रखें: नकारात्मक विचारों को दूर करें और सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाएं।

वर्तमान में जिएं: अतीत की चिंताओं और भविष्य की योजनाओं में न उलझें। वर्तमान पल का आनंद लें।

दूसरों के साथ समय बिताएं: अपने परिवार और दोस्तों के साथ समय बिताएं।

कुछ नया करें: कुछ नया सीखने या करने की कोशिश करें।

स्वयंसेवक बनें: दूसरों की मदद करने से आपको आनंद मिलेगा।

आनंद जीवन का सार है। यह एक महत्वपूर्ण भावना है जो हमारे जीवन को बेहतर बनाने में मदद करती है। आनंद प्राप्त करने के लिए हमें प्रयास करने होंगे, लेकिन यह प्रयास सार्थक होंगे। आनंदित जीवन एक खुशहाल और संतुष्ट जीवन होता है।

यह सच है कि जीवन में कई चुनौतियाँ और कठिनाइयाँ होती हैं। लेकिन, इसका मतलब यह नहीं है कि हम आनंदित नहीं हो सकते। हमें अपने जीवन में आनंद के लिए जगह बनानी होगी और उन चीजों पर ध्यान केंद्रित करना होगा जो हमें खुशी देती हैं। इसलिए, अपने जीवन में आनंद को प्राथमिकता दें। अपने आनंद के स्रोतों को पहचानें, सकारात्मक दृष्टिकोण रखें, और वर्तमान में जिएं। दूसरों के साथ समय बिताएं, कुछ नया करें, और स्वयंसेवक बनें।

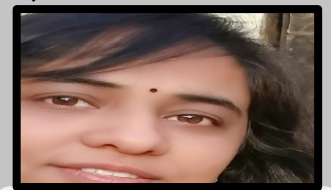
आपको निश्चित रूप से एक आनंदित जीवन मिलेगा।

"मैं खुश हूँ, मैं स्वस्थ हूँ, मेरा जीवन आनंद से भरा है" यह एक साधारण सा दिखने वाला वाक्य है, लेकिन इसमें जीवन का गहरा सार छुपा हुआ है। यह वाक्य हमें अपने जीवन के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण रखने और खुश रहने के लिए प्रेरित करता है।

यह वाक्य हमें याद दिलाता है कि खुशी कोई बाहरी वस्तु नहीं है जिसे हम प्राप्त कर सकते हैं। यह एक आंतरिक अवस्था है जिसे हमें खुद ही पैदा करना होता है।

यह वाक्य हमें प्रेरित करता है कि हम अपने जीवन को खुशियों, स्वास्थ्य, और आनंद से भरें।

तो चलिए, आज से ही खुद से यह कहना शुरू करते हैं कि "मैं खुश हूँ, मैं स्वस्थ हूँ, मेरा जीवन आनंद से भरा है।" और देखिए, कैसे आपका जीवन बदल जाता है।



डॉ. शिवा धमेजा

## सरस्वती राजमणि- एक गुमनाम जासूस

रानी झांसी रेजीमेंट आजाद हिंद फौज का महिला दस्ता था। जिसमें देश के अलग-अलग हिस्सों से देश भक्त और जांबाज वीरांगनाओं को चुनकर, पूर्ण प्रशिक्षण देने के उपरांत इस दस्ते में शामिल किया गया था। यह दस्ता अंग्रेजों के बीच मीठे-जहर के नाम से मशहूर था। इस दस्ते के खौफ का आलम यह था कि अंग्रेज अधिकारियों ने भारतीय महिलाओं को अपने घरों में नौकर के रूप रखना बंद कर दिया था।

जब आजाद हिन्द फ़ौज, इम्फ़ाल और कोहिमा के उत्तर-पूर्वी हिस्से की तरफ़ बढ़ रही थी तब फ़ौज की रानी झांसी रेजिमेंट को उत्तरी बर्मा के मायाम्यो क्षेत्र में भेजा गया। इस टुकड़ी में राजमणि और दुर्गा भी थीं। इन दोनों को ब्रिटिश सिपाहियों के कैम्प में सिक्रेट जासूसी मिशन पर जाना था। राजमणि और दुर्गा ने अपने केश काटे और अंग्रेजी कैम्प में पहुंच गईं। अंग्रेज़ सिपाहियों के कपड़े धोते, जूते पॉलिश करते और अन्य काम करते हुये दोनों को कई अहम जानकारियां मिलीं। इसी मिशन के दौरान दुर्गा का भेद खुलने के बाद अंग्रेजों ने उसे कैद कर लिया था। दुर्गा को कोहिमा से अगवा कर एक अज्ञात ठिकाने पर रखा गया था। सरस्वती ने उसे छुड़ाने के लिए अंग्रेजी सैन्य अधिकारियों के घर में सहायिका का काम करना शुरू किया। वहां से कुछ सूचनाएं एकत्रित करके वह एक नृत्य करने वाली मंडली में शामिल हो गई जो अंग्रेजी सैनिकों का मनोरंजन करने के लिए जगह-जगह जाकर अपने प्रोग्राम प्रस्तुत किया करती थी। उनमें से कुछ नृत्यांगनाओं की पहुंच बड़े अंग्रेज अधिकारियों तक भी थी। उन्हीं की मदद से सरस्वती ने इस बात का पता लगाया कि दुर्गा किस कैम्प में कैद है।

दुर्गा को कोहिमा के नजदीक बने एक गुमनाम कैम्प में रखा गया था जहां उसे तरह-तरह की यातनाएं देकर आजाद हिंद फौज और नेता जी से जुड़ी सूचनाएं निकलवाने का प्रयास किया जाता था।

सरस्वती के लिए इतनी सूचना काफी थी वह अकेली एक जापानी पिस्तौल पकड़कर अंग्रेजी सेना के कैम्प में घुस गई। सुरक्षा कर्मियों की नजरों से बचते हुए वह एक पेड़ के ऊपर दो दिनों तक छुपी बैठी रही और सैन्य गतिविधियों का जायजा लेती रही। एक रात मौका पाकर वह अंदर घुसी और अंग्रेजी सैनिकों को चकमा देते हुए उस जगह तक पहुंच गई जहां दुर्गा कैद थी।

वहां लोहे के सीखचों को काटते हुए खिड़की के रास्ते वह अंदर घुसी जहां दुर्गा लगभग बेसुध हालत में पड़ी थी। किसी तरह दुर्गा को होश में लाकर सरस्वती ने उसका हौसला बढ़ाया भागने के लिए राजी कर लिया। गुरिल्ला तकनीक में माहिर दोनो सहेलियां खिड़की के रास्ते कैद से बाहर निकलीं और रेंगते हुए वहां से निकलने में सफल हो गईं। लेकिन कैम्प की बाहरी सुरक्षा दीवार फांदते हुए वह किसी अंग्रेजी सैनिक की नजरों में गई। उसके बाद पूरे कैम्प में हंगामा मच गया। सैकड़ों अंग्रेज सिपाही एक साथ उनके ऊपर टूट पड़े। किसी बंदूक से निकली एक गोली सरस्वती के एक पैर में भी लग गई।

घायल होने के बावजूद सरस्वती, दुर्गा के साथ एक चीड़ के पेड़ पर चढ़ गई और अंग्रेज सिपाही उन्हें जंगलों में ढूँढते रहे। सही समय देखकर वह पेड़ से नीचे उतरतीं और वापस अपने कैंप तक सुरक्षित वापस आ गईं। पैर में लगी उस गोली का घाव भरने में काफी समय लगा। घाव तो समय के साथ भर गया लेकिन हड्डी को जो नुकसान पहुंचा था इसके कारण वह उम्र भर लगड़ाकर चलने के लिए मजबूर हुईं।

नेताजी सुभाषचंद्र बोस आजाद हिंद फौज का गठन कर लेने के बाद घूम-घूम कर लोगों को अंग्रेजों के खिलाफ खड़ा कर रहे थे। उस समय बर्मा में रहने वाले एक संपन्न भारतीय परिवार की सोलह साल की एक लड़की ने एक दिन नेताजी का भाषण सुना। उनका भाषण सुनकर उसके मन में देशप्रेम की ऐसी भावना जागी कि उसने आजाद हिंद फौज में अपना योगदान देने की ठान ली। वह अपने सारे गहने लेकर आजाद हिंद फौज को दान कर आईं। नेताजी को पता चला कि सोलह साल की किसी लड़की ने ये गहने दिए हैं तो वह उसके गहने लौटाने पहुंच गए।

लड़की ने गहने वापस लेने से मना करते हुए कहा कि वह तो उनकी आजाद हिंद फौज में भर्ती होना चाहती है। उसके जुनून को देखकर नेताजी ने उस लड़की और उसकी चार सहेलियों को आईएनए की खुफिया विंग में बतौर युवा जासूस भर्ती कर लिया। उस साहसी और देशप्रेमी लड़की का नाम था- सरस्वती राजमणि। सरस्वती ने अपनी सहेली दुर्गा के साथ मिलकर अंग्रेजों के कैंप की जासूसी की और कई महत्वपूर्ण सूचनाएं आजाद हिंद फौज तक पहुंचाईं। उसने भेष बदलकर ब्रिटिश कैंपों और कंपनी के अधिकारियों के घर में घरेलू सहायक का काम किया। धीरे-धीरे वह शत्रु के गढ़ में रहते हुए अंग्रेज सरकार की महत्वपूर्ण योजनाएं और सैन्य खुफिया सूचनाएं जुटाकर नेताजी सुभाषचन्द्र बोस तक पहुंचाने के काम की अभ्यस्त हो गईं।

नेताजी राजमणि की सूझबूझ और समझदारी से बेहद प्रभावित हुए। उन्होंने उसे आईएनए की झांसी रानी ब्रिगेड में लेफ्टिनेंट का पद दे दिया। द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान राजमणि को कोलकाता में ब्रिटिश सैन्य अड्डे पर जासूसी के लिए भेजा गया। उनकी सूचनाएं आजाद हिंद फौज के बहुत काम आईं।

उम्र के उस पायदान पर जहां अन्य लड़कियों को गुलाबी सपने आते हैं सरस्वती राजमणि ने देश की आजादी के सपने देखे। उनके सपनों में घोड़े पर सवार राजकुमार की जगह घायल भारत माता आती थीं। उनका बस एक ही सपना था भारत की आजादी।

द्वितीय विश्व युद्ध के बाद नेता जी ने आईएनए को भंग कर दिया था। राजमणि का परिवार अंग्रेजों के कोप का शिकार होकर अपनी सृमद्धि खो चुका था। आजादी के बाद सन 1957 में वो अपने परिवार के साथ भारत आ गईं। भारत आकर उन्होंने जीवन गुमनामी और गरीबी में बिताया। क्योंकि तत्कालीन भारत सरकार ने उनकी किसी तरह की कोई मदद नहीं की। वह सरकारी दफ्तरों में अपने आप को स्वतंत्रता संग्राम सेनानी साबित करने के सबूत पेश करती रहीं लेकिन अधिकारियों के कान पर जूं तक नहीं रेंगा।

लंबे समय तक इस अनुभवी स्वतंत्रता सेनानी ने चेन्नई में एक कमरे में अकेले जीवन व्यतीत किया। साल 2005 में कई स्थानीय पत्रकारों द्वारा उनके ऊपर लेख लिखे जाने के बाद तमिलनाडु की तत्कालीन मुख्यमंत्री जयललिता ने उन्हें एक घर दिया साथ ही उनकी पेंशन भी करवाई। सरस्वती राजमणि अपने जीवन के अंतिम समय तक जयललिता द्वारा दिलाए घर में ही रहीं।

वृद्धावस्था में भी उनका राष्ट्र के प्रति सेवा का भाव कम नहीं हुआ। वो दर्जी की दुकानों पर जाकर बचा कपड़ा

इकठ्ठा किया करती थीं। उससे बने वस्त्रों को अनाथालय और वृद्धा आश्रम में दान दिया करती थीं। यही नहीं 2006 में सुनामी के दौरान उन्होंने अपनी मासिक पेंशन रिलीफ फंड में दे दी थी। वर्ष 2008 में उन्होंने अपनी आजाद हिंद फौज की वर्दी और बिल्ले, ओडिशा के कटक स्थित नेताजी सुभाष चंद्र बोस म्यूजियम को दान कर दिए। देश के लिए अपनी जिंदगी का कतरा-कतरा न्योछावर करने वाली सरस्वती राजमणि ने 2018 में हमेशा के लिए इस दुनिया को अलविदा कह दिया।



चित्रगुप्त

Activate Windows  
Go to Settings to activate Windows.

# खुशियों की होली

प्रिया देवांगन

रंग प्रीत की सज गई आज।  
है खुशियों की होली॥

उड़े मेघ में तितली जैसी,  
सुरम्य दिखे नजारे।  
रंग देख मोहित हैं सारे।  
करते हँसी ठिठोली॥

पायल मेरी शोर मचाती,  
नयना काजल आँजे,  
राह ताकती तेरी साजन,  
यौवन तुझसे साजे,  
हिय तरसे बातें सुनने को,  
मधुरस तेरी बोली॥

सतरंगी ये छटा बिखेरी,  
चली आज पिचकारी।  
दिखे लालिमा इन कपोल पर,  
लगती कितनी प्यारी।  
प्रीत किया है इक दूजे से,  
मिले भांग की गोली॥

व्याकुलता मन में छाई है,  
अग्न लगी है काया,  
स्वप्न आज साकार करो तुम,  
छूट न जाए साया।।  
आओ साजन! रंग लगाओ,  
भीगे मेरी चोली।।

है खुशियों की होली।  
है खुशियों की होली।।

## कुंभ महात्म्य

जहाँ जहाँ गिरे सुधा विशेष चारधाम हैं।  
विराजमान देवता पवित्र कुंभ नाम है।।  
प्रवाह स्वच्छ नीर पुण्य स्पर्श में उमंग है।  
चले समीर मंद यज्ञ होम गंध संग है।।

विरंचि नीलकंठ विष्णु देवता विराजते।  
निहारते समस्त भक्त ढोल ताल बाजते।।  
दिनेश चंद्रमा बिखेरते प्रभा अनंत हैं।  
पधारते प्रयागराज में अघोर संत हैं।।

ललाट धूलि भूमि का उठा सभी लगा रहे।  
प्रकाश पुंज से मनुष्य भाग्य को जगा रहे।।  
मिटा रहे विकार द्वेष भाव आत्म ज्ञान से।  
शरीर हो रहा पवित्र धन्य गंग स्नान से।।

बढ़ा रहे महत्व धर्म का सभी सनातनी।  
चलें सदैव भक्ति मार्ग हो गरीब या धनी।।  
करो प्रणाम हे मनुष्य कुंभ मोक्ष स्रोत है।  
प्रयाग भक्ति धर्म से सदैव ओतप्रोत है।।



प्रिया देवांगन



## नदी का किनारा

बहती नदी संग में ठहरा सा बैठा,  
तेरी राहों में उम्मीदों को समेटा।  
लहरें भी अब तो कहने लगीं,  
\*दिकु, लौट आओ,\*  
इन्हीं दुआओं के धागों से हूँ मैं लिपटा।

धूप-छाँव का ये खेल भी सुना सा है,  
तेरी हँसी के बिना हर रंग धुंधला सा है।  
पानी में देखूँ तो चेहरा तेरा उभरे,  
तेरी आहटों का हर साया अपना सा है।

हर लहर तेरे नाम की धुन गाती है,  
तेरी परछाई भी अब मुझे भरमाती है।  
अब इन बहारों में क्या धड़कनें सुनें,  
जब तक न तू आए, उदासी ही सताती है।

नदी के किनारे नाम तेरा लिखा,  
लहरों की छुअन से यह और भी गहरा दिखा है।  
अब लौट भी आओ कि साँसें अधूरी हैं,  
तेरे बिना हर लम्हा, प्रेम बेसहारा जिया है।



प्रेम ठक्कर

## अपनी झोपड़ी में राज करना

अपनी झोपड़ी में राज करें,  
चाहे छत से सूरज झाँक करे।  
पर अपनों संग जो सुख मिलेगा,  
वह दौलत से भी न तौल सके।

परार्यों के महलों में चमक भले,  
पर मन तो रोज़ ही रोएगा।  
सोने की दीवारों के भीतर,  
स्वाभिमान कहीं खोएगा।

छोटी सही, पर अपनी हो,  
हर ईंट में अपनापन हो।  
संघर्ष भरी हो राह अगर,  
तो मेहनत का भी सावन हो।

गुलामी की शानो-शौकत से,  
आज़ादी की तंगी अच्छी है।  
जो अपनी मेहनत से बड़े,  
वो हर रोटी मीठी सच्ची है।

इसलिए स्वाभिमान से जिएँ,  
चाहे छोटी सी दुनिया हो।  
अपनी झोपड़ी में राज करें,  
बोहल चाहे टूटी ही कुटिया हो।



डॉ. नरेश सिहाग

## कॉकरोच

ऋषभ शुक्ला

जब सब कुछ खत्म हो जाएगा,  
तो बचेंगे सिर्फ कॉकरोच धरा पर,  
न बचेगा कोई जीव प्रकृति में,  
न रहेगी कोई इंसानी आवाज़ें चीख की,  
न रहेंगे पृथ्वी की चिंता करने वाले बुद्धिजीवी,  
न ही बचेगी दर्शन की दुनिया रहस्यमयी,  
बचेगा एक अदना सा कॉकरोच ,  
घूमता किसी खोल में इंसानी शहर के,  
न रहेगी जंगल काट बने पार्क की बेचों पर चालाकियां,  
जहां लालच गप्प की शक्ल में गायब रहेगा,  
न रहेगी पहाड़ों की गंदी नदियां सीवर भरोसे,  
बचेंगे सिर्फ कॉकरोच जो पवित्र करेंगे अंधे विज्ञान को,  
अपने दोनों एंटेना से पता करेंगे बाहरी ग्रह का,  
और नापेंगे दूरी सूर्य की पृथ्वी से जो गल चुकी होगी,  
जब कुछ नहीं बचेगा ,न ही रहेंगे इंसानों के ख्वाबा  
तो कॉकरोच करेगा स्वागत नवकोपलों का फिरसे,  
सांस लेती पृथ्वी और बारिश की पहली बूंद को,  
समेटकर फिर देखेगा आसमानों को बरसते,  
तब खत्म होगी तपन और शांत होगा रोष प्रकृति का,  
और नन्हे से चिंपाज़ी फिरसे बनाएंगे पहिया,  
और शुरू करेंगे यात्रा कौतूहल की।  
जब सब कुछ खत्म हो जाएगा,  
तो बचेंगे सिर्फ कॉकरोच धरा पर।

## अनंत के उस पार

अनंतता की हद जब भी खत्म होगी,  
सूर्य क्या तुम सचमुच ढल सकोगे?  
क्या होगी नहीं सुबह फिर चहचहाहट से,  
और अर्पित जल में रंगा अंतिम भोर तुमपर।  
सूर्य क्या तुम ढलोगे ब्रह्मांड के उस छोर पर,  
जहां अनंत तारे अभी तुम्हें ही देखते हैं, और  
घास बिछली उस मुंडेर पर तुम्हे ही जोहती है,  
कि हैं इंतज़ार में कि अब ओस गिरेगी पिछली,  
रात्रि के ठंडे ख्वाब में इसी मिट्टी सिरहाने।  
सूर्य जब तुम ढल जाओगे, तो टला हर काम,  
क्या पूर्ण होगा? जो कल पर एक दिन यूँ ही,  
छोड़ दिया था मैंने अध जगी नींद में उठकर।  
या कि खत्म हो जायेंगे दुनिया के सारे काम,  
तुम्हारे न होने के शोक में अविरल सी धारा,  
समंदर के सीने से फूटेगी क्या वियोग लेकर।  
मैं सोचता हूँ सूर्य तुम ढल जाओगे, तो क्या,  
तुमपर भी गीत लिखे जाएंगे चांद सरीखे?  
या कि तुम्हारी रौशनी को याद करके रो पड़ेगा,  
चंद्रमा भी कि रौशनी अता की तुमसे उसी ने।  
सूर्य तुम्हारे ढलने की पिछली शाम तक,  
कोई अंतिम बूंद कलम की बिखरी सी होगी।  
तो फाहे तुम्हारे तेज को फिर सोख लेगा,  
निचोड़ कर उन्माद सारा एक शब्द में,  
क्या फिर कभी उसी ख्वाब में लिख सकेगी?  
या कि शुष्क होती ठंडी हवा को साथ लेकर,  
तुम्हारी अंतिम किरण चोटियों को चूम लेगी,

तो गिर पड़ेंगे छाती समेटकर हिमखंड सारे,  
और पिघल पड़ेंगे तुम्हारी अंतिम रौशनी में।  
सूर्य तुम्हारे अंतिम दिनों में क्या बचेगा?  
क्या रहेंगे शब्द सारे तुम्हारी वंदना के,  
या रहेगी प्रीत सारी तुम्हारी कल्पना की,  
फिर तुम्हारी आखिरी मुस्कान को भी,  
कालिमा किरणों की डोर से समेट लेगी।



ऋषभ शुक्ला

## आग , षडयन्त्र , सुरक्षा और अधिकार द्वापर और कलियुग

सुबीर कुमार भट्टाचारजी

पांडवों के रहने के लिए  
दुर्योधन ने शिल्पी पुरोचन  
से निर्माण करवाया एक भवन  
पूरा महल लाख, चर्बी, सूखी, घास  
से बना ताकि जल्द आग पकड़ लें।

पर श्री कृष्ण भक्त विदुर  
ने खोल दिया सारा राज  
युधिष्ठिर माता कुन्ती  
और भाइयों के साथ  
गुप्त सुरंग के रास्ते  
निकलने में हुये कामयाब  
युधिष्ठिर के सब  
अधिकार रहे सुरक्षित ।

27 फरवरी, 1933 को जर्मनी  
की संसद भवन रैहस्टाग में  
अनजान लोगो द्वारा  
आग लगा दी गई थी।

जोरदार प्रचार से  
नाज़ियों और राष्ट्रवादियों ने  
विरोधियों को दोषी ठहराया  
और राष्ट्रपति हिंडनबर्ग से  
आपातकालीन डिक्री  
के लिए अनुमोदन प्राप्त किया।

आग लगने के अगले दिन ,  
राष्ट्रपति हिंडेनबर्ग ने लोगों  
और राज्य की सुरक्षा के लिए  
रैहस्टाग अग्नि डिक्री जारी की ।

अब बिना किसी विशेष  
आरोप के अपने सब  
विरोधियों को गिरफ्तार  
कर सकती थी सरकार  
लोगो के व्यक्तिगत अधिकार  
और कानून हो गये थे निलंबित ।

## चैतन्य महाप्रभु (निमाई) और मित्र धर्म

सुन्दर था निमाई का बचपन  
थे बहुत ही विद्यावान  
व्याकरण के साथ-साथ  
शास्त्रों को भी लिया था साध।  
एक अंतरंग मित्र थे उनके  
नाम था रघुनाथ ।

रघुनाथ लिख रहे थे एक ग्रंथ  
उन्हें पता चला कि निमाई  
भी उसी विषय पर  
रचना कर रहे हैं एक ग्रंथ ।

वह ग्रंथ देखने की इच्छा जताई  
जब रघुनाथ को मिले निमाई  
जा रहे थे निमाई गंगा की ओर  
उन्होंने ग्रंथ साथ में रख लिया।

नाव में बैठकर निमाई ने  
ग्रंथ पढ़ना शुरू किया।  
जैसे-जैसे वे ग्रंथ पढ़ते जाते,  
वैसे-वैसे पंडित रघुनाथ का  
चेहरा फीका पड़ता जाता।  
रघुनाथ पुरी तरह घबराये  
बिलख-बिलख कर रोते गये।

निमाई दंग रह गए और बोले,



‘क्या बात है, मित्र! रो क्यों रहे हो?’

रघुनाथ बोले, “निमाई, मैंने  
ग्रंथ लिखा है न्याय पर,  
पर तुम्हारे विचार मेरे  
विचार से है बहुत उपर ।

निमाई मुस्कराते हुए बोले,  
“बस मित्र इतनी-सी बात  
के लिए हो रहे हो ”

अपना ग्रंथ को गंगा मे डाला  
बोले “ यह तो ग्रंथ है,  
मित्र के लिए दे सकता हूं प्राण “।



सुबीर कुमार भट्टाचारजी

## दोहा

(1 )

कुंभ हुआ संपन्न ,  
देश गंगा में नहाया ।  
ऐसा लगा कुंभ का मेला ,  
अमृत पाया॥

(2 )

त्रिवेणी संगम हुआ,  
बन गया संगम धाम।  
प्रयागराज ऐसा बना,  
मेला कुंभ विधान॥

(3 )

कुंभ नहाने हम गए,  
देखी सुविधा खूब।  
घाट - घाट पर भीड़ थी,  
नहीं रहा था डूब॥

(4 )

ऐसा मेला विश्व में,  
हो गया सरताज।  
हिन्दु जागा - जाग रहा,  
मोदी - योगी राज॥

(5 )

दिन 45 हो गए ,  
शुरू हुई संक्रांत ।  
शिव चौदस संपूर्ण हुई  
हुई आत्मा शांत ॥

(6 )

ऐसा कहीं भी ना हुआ,  
जैसा हुआ यह राज ।

जागी आस्था हिंद की,  
ना लहसुन ना प्याज ॥

(7 )

हुआ समर्पण कुंभ का,  
खिला कमल का फूल |  
जो न पहुंचे कुंभ में,  
उनकी कैसी भूल ॥

(8 )

खडगे - लड़के भूल में,  
पहुंचे ना कुम्भ नाहान |  
हिन्द विरोधी हो गई,  
इनकी ही पहचान ॥

(9 )

जो पहुंचा है कुंभ में,  
लिए आस्था फूल |  
दया - धर्म , शुद्ध भावना,  
लिया मंत्र यह मूल ॥

(10 )

दशमी पंक्ति में लिखूं,  
सबको धन्यवाद |  
गए कुंभ में मानवी,  
ले कर के परिवार ॥

(11 )

हिन्द विरोधी ममता मारगी,  
आखिर में अखिलेश |  
रही आंस्था कुंभ की,  
इन्हें करो क्लेश ॥



विनोद मानवी

## गजल

(1)

कीट-पतंगें ही निकलेंगे इल्ली से,  
हासिल क्या है धेला-टका-रूपल्ली से।

ज्यों चूहों की रखवाली में बिल्ली से,  
उतनी ही उम्मीदें रखना दिल्ली से।

बीमारी में लेटा हूं तब देखा है,  
अपना ही घर पहली बार तसल्ली से।

वक्त पड़ेगा तब सारे काम आयेंगे,  
गम के बोरे रखवा लेना छल्ली से।

स्टेडियमों का सारा सुख उनका है,  
जनता खुश है स्टैंपों की गिल्ली से।

दिन का भूला रातों में घर आए तो,  
स्वागत करना दरवाजे की किल्ली से।

पेड़ों का दुःख ऊपर देखो दिखता है,  
ऑक्सीजन के तीन अणुओं की झिल्ली से।

हंसने वाले हंसते हैं तो हंसने दो,  
ताकत मिलती है दुनिया की खिल्ली से।

(2)

अब कोई उम्मीद इससे पालना बेकार है,

तंत्र को हैजा निमोनिया और कालाजार है।

ठीक होने का इरादा छोड़ दें बीमार सब,  
वायरस ही डॉक्टर का खास ओहदेदार है।

छू नहीं सकता उसे दुःख का समुंदर इंच भर,  
जो मिले जैसा मिले सब कुछ जिसे स्वीकार है।

सोचकर भरना हृदय में भावनाओं के कपास,  
आपका घर फूंकने को हर कोई तैयार है।

फूल, खुशबू, झील, दरिया, और मदमाती हवा,  
आ भी जाओ अब तो केवल आपकी दरकार है।

बीच में मजबूरियों का है खड़ा उन्नत पहाड़  
हम उसी के इस तरफ हैं और वो उसपार है।

ये विसंगतियां पड़ोसी देश से आई नहीं  
हैं प्रजा जैसी तुम्हारी उस तरह सरकार है।

(3)

दरिया जितना छिछला होगा,  
उतनी गति से निकला होगा।

गहरे नद सा बहने वाला,  
पर्वत जैसा पिघला होगा।

भाएगा आगे भी कोई ,  
पहला लेकिन पहला होगा।

बाजीगर मानेंगे उस दिन

जब नहले पर दहला होगा।

चाहे जिसकी खिदमत होगी,  
उसका चेहरा क़िबला होगा।

(4)

तीन दर्जे और तीनों खूबसूरत,  
हा मोहब्बत, हां मोहब्बत, उफ मोहब्बत।

इश्क जो भी कह रहे हैं नासमझ हैं,  
पेड़ हैं सारे परिंदों की जरूरत।

दौड़ सारी जिंदगी के वास्ते है,  
और करना जिंदगी से ही बगावत।

मौत से डर जिंदगी से ऊब भी है,  
रास्ते दो और दोनों से शिकायत।

काम था तब आदमी में काम का था  
आज में हूं आदमी घटिया निहायत।

एक हम हैं और बाकी एक वो हैं,  
बीच में है पास आने की मुर्क्कत।

घूस खाकर शेख जी हज को चले हैं,  
बिल्लियों को सोंप चूहों की हिफ़ाज़त।

(5)

कर नहीं सकते यहां कुछ रोइए बस जार-जार  
अब सियासत हो गई है खानदानी रोजगार।

खा गई सारी जवानी का मजा ये घोटकर  
एक तो बेरोजगारी और मंहगाई की मार।

जिंदगी की मुश्किलें भी हैं गज़ब की क्या कहें  
चाहते हैं फूल लेकिन बो रहे हैं सिर्फ खार।

बाटते हैं शर्तिया उपचार की जो पर्चियां  
वो चिकित्सालय जहां का डॉक्टर खुद है बीमार।

इश्क की गलियों में बनकर शेर ज्यादा मत चलो  
ये वो जंगल है जहां पर हिरणियां करतीं शिकार।

आप-हम-सब मानते हैं बस यही केवल यही  
एक में ही पूर्ण हूं बस चाहिए सबको सुधार।

मर गया जब आदमी दो घूंट पानी के लिए  
लाश लेने आ गई हैं जीप-मोटर और कार।

(6)

इश्क का जोड़-गुणा-भाग सिखाया जाए,  
हमको नफ़रत का पहाड़ा न पढ़ाया जाए।

दिल की दुनिया में लघुत्तम न महत्तम हो कोई,  
अंश-हर कुछ हो बराबर ही बिठाया जाए।

मूलधन-ब्याज-कराधान सीख जाएं तो,  
पहले रिश्तों का जमा कर्ज चुकाया जाए।

क्षेत्रफल ज्ञात हो जिस शख्स के दिल का पहले  
राज की बात उसी को ही बताया जाए

वो जो परिमाण मिटा दे किसी की हस्ती का,

कोई तोहमत न किसी भी पे लगाया जाए।

शेष बचती हो जहां सिर्फ यही प्रायिकता  
तो ही अनजान के इनबॉक्स में जाया जाए।

देखने जाएं जो ज्यामिति किसी के चेहरे का,  
टैन थीटा की तरह मुंह न बनाया जाए।

(7)

भाइयों बहनों सभी से प्रार्थना करबद्ध है।  
वोट करिए बस उसे जो लोक से सम्बद्ध है।

क्या पता यह भी निकल जाए न अंगुलिमाल-सा,  
आज सबको लग रहा यह आदमी जो बुद्ध है।

लीडरों के हाथ में माइक अगर आ जाए तो,  
चार सींगें भी गधे के माथ पर यह सिद्ध है।

घूसखोरी लूट के जिनके मवाक्रे छिन गये,  
कोई-कोई तो यहाँ बस इसलिए भी क्रुद्ध है।

क्षेत्र, दल, जातीय फिरके धर्म-मज़हब आदि सब,  
ठीक हैं उपरोक्त सारे आदमी गर शुद्ध है।

कम-से-कम पहचान इतनी तो रखो ही चित्रगुप्त,  
आदमी है कौन-सा या कौन इसमें गिद्ध है।



चित्रगुप्त



## प्रयागराज में इस बार का कुंभ क्यों कहा जा रहा है महाकुंभ

प्रयागराज में आयोजित महाकुंभ की धूम पूरे विश्व में सिर चढ़कर बोल रही है। बारह कुंभ आयोजनों के बाद 144 वर्षों के पश्चात् आने वाले महाकुंभ का महत्व वैसे ही बहुत अधिक हो जाता है तथा श्रेष्ठ प्रशासनिक व्यवस्थाओं एवं सुविधाओं के चलते महाकुंभ महापर्व का महत्व उच्चतम स्तर पर दिखाई दे रहा है। संगम स्थल पर श्रेष्ठतम चिकित्सीय व्यवस्था, ठहरने व रात्रि निवास की व्यवस्था एवं भोजन के साथ-साथ यातायात की उच्चस्तरीय व्यवस्थाएं महाकुंभ को कभी भी विस्मृत न होने वाला स्मरणीय धार्मिक सांस्कृतिक आयोजन बना रही है।

यद्यपि कुंभ मेला तो प्रत्येक बारह वर्ष के बाद चारों पावन तीर्थ स्थल हरिद्वार, प्रयागराज, नासिक व उज्जैन में आता ही है और लाखों-करोड़ों भक्त प्रत्येक कुंभ अथवा अर्ध कुंभ में परिवार सहित पावन गोता लगाते ही हैं फिर इस बार ऐसा क्या विशेष है कि तीर्थराज प्रयाग राज में यह बीसवीं एवं इक्कीसवीं शताब्दी का सबसे बड़ा महाकुंभ माना जा रहा है। जहां नित नये नये रिकार्ड स्थापित हो रहे हैं। उत्तरप्रदेश सरकार का अनुमान था कि मेला समापन तक लगभग 45 करोड़ श्रद्धालु स्नान कर लेंगे किंतु ताजा आंकड़ों के अनुसार माघ पूर्णिमा तक ही यह 45 करोड़ का आंकड़ा पार होने जा रहा है तथा अंतिम अमृत स्नान 26 फरवरी तक श्रद्धालुओं का यह आंकड़ा यदि 50 करोड़ के पार हो जाये तो कोई आश्चर्य नहीं है।

प्रश्न यह है कि इस बार ऐसा क्या है कि हर व्यक्ति येन केन प्रकारेण महाकुंभ में पहुंचना चाहता है। कैसे आजतक के सारे रिकार्ड टूट गये। भीड़ इतनी कि कई स्थानों पर तो सैंकड़ों किलोमीटर का जाम लग गया है और गाड़ियाँ चलने के स्थान पर रेंग रही हैं। यह महाकुंभ मेला जीवन में एक बार होने वाला अनुभव है, जो आध्यात्मिक शुद्धि और सांस्कृतिक विसर्जन प्रदान करता है। अतः सभी झंझावातों को समझते हुए भी हर श्रद्धालु इस श्रद्धा से सरोबार आन्नद को पूर्ण रूप से ग्रहण करना चाहता है। फिर चाहे जाम लगे या असुविधाओं का सामना करना पड़े।

उल्लेखनीय है कि 2025 में 13 जनवरी से शुरू होकर 26 फरवरी को महाशिवरात्रि तक चलने वाला तथा बारह कुंभ मेले के बाद 144 वर्षों के पश्चात् आने वाला महाकुंभ धार्मिक, आध्यात्मिक, और ज्योतिषीय महत्व रखता है। भारतीय संस्कृति की अवधारणा में ही सामूहिकता निहित है। हमने प्रारंभ से ही विश्व को एक कुटुंब की तरह माना है। महाकुंभ जैसे आयोजन केवल देश को ही नहीं, बल्कि पूरे विश्व को अपने भीतर सहेज लेने का सामर्थ्य रखते हैं। यहाँ जो श्रद्धालु आ रहे हैं वे भारत से ही नहीं पूरे विश्व से आस्था की डुबकी लगाने आ रहे हैं। यह आयोजन नई पीढ़ी को धर्म और संस्कृति के महत्व को समझाने का एक सुनहरा अवसर है। यहां क्या मजदूर क्या किसान,

बॉलीवुड के कलाकार हो या सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीश, कोई कर्मचारी हो या देश के राष्ट्रपति हर कोई इस पावन अवसर का लाभ उठाना चाहता है। इन सभी लोगों की अवधारणा है कि महाकुंभ में आस्था की डुबकी लगाने से इंसान के सारे पाप नष्ट हो जाते हैं और मोक्ष की प्राप्ति होती है। महाकुंभ में प्रतिदिन लाखों लोग आकर धार्मिक अनुष्ठान, स्नान, और पूजा करते हैं, यहां पूजा करने से कई गुना ज्यादा पुण्य की प्राप्ति होती है। आने वाले श्रद्धालुओं को आध्यात्मिक उन्नति का अनुभव होता है। जब ग्रामीण क्षेत्रों से जत्थे के जत्थे आते हैं तो यह यात्रा लोकोत्सव में बदल जाती है, जिसमें भारतीय संस्कृति के विभिन्न सांस्कृतिक रंग पूरे विश्व को अपनी ओर आकर्षित करते हैं।

बारह वर्षों आने वाले कुंभ मेले के आयोजन का विश्व पटल पर भी कितना महत्व है इसका अनुमान इसी बात से लगाया जा सकता है कि संयुक्त राष्ट्र शैक्षिक, वैज्ञानिक एवं सांस्कृतिक संगठन अर्थात् यूनेस्को ने 2017 में कुंभ मेला को 'मानवता की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत' की सूची में शामिल कर लिया था। यहां पहुंचते ही भारत के भोले भाले लोगों को विरासत में मिली जो संस्कृति-परंपराएं हैं उनकी छटा चहूँ ओर बिखर जाती हैं। उत्तर भारत की लोक संस्कृति दक्षिण भारत के साथ, दक्षिण की पश्चिम के साथ और पश्चिम की पूर्व के साथ तथा पूर्व की उत्तर लोक-संस्कृतियों के साथ मिलकर जो अठखेलियां करने लगती है तो पहाड़ी, मैदानी, मरुस्थलीय व तटीय क्षेत्रों की संस्कृति के बहुरंगी लोकरंग में झूम उठने वाले अलग-अलग रंगों में भेद करना भूल जाते हैं और यही मिश्रित रंग भारत की वैश्विक अवधारणा वसुधैव कुटुम्बकम् को ओर अधिक सुदृढ़ कर जाता है। यहां क्या भारतीय क्या विदेशी सभी संगम की पावन रेती पर नाचते-गाते हुये आन्नद में मग्न होते दिखाई देंगे। यही बात कुंभ को वैश्विक बनाती है।

वैसे तो कुंभ मेला हर तीन वर्षों के बाद चार स्थान हरिद्वार, उज्जैन, नासिक और प्रयागराज में बारी-बारी से मनाया जाता है। इस दौरान ध्यान रखा जाता है कि हर स्थान पर प्रत्येक बारह वर्षों में एक बार कुंभ मेले का आयोजन अनिवार्य रूप से हो। प्रयागराज कुंभ मेला गतिविधियों और अनुष्ठानों से भरा एक अद्भुत आयोजन है, नागा साधु और संतों से सुसज्जित ये पवित्र नगरी एक प्रमुख आकर्षण का केंद्र बन जाती हैं। उनका स्वछंद रवैया एवं निडर भाव, भक्ति और अनोखी परम्पराएं उन्हें देखने के लिए श्रद्धालुओं में उत्सुकता का वातावरण निर्मित करती है। नागा साधुओं का शिवगणों वाला शृंगार, नृत्य व हाव-भाव के साथ अभिनय उन्हें शिव गण ही प्रदर्शित करता है। प्रयागराज महाकुंभ मेला आध्यात्मिकता, संस्कृति और भक्ति के मिश्रण का अनुभव करने का एक अनूठा अवसर प्रदान करता है। दुनिया भर से लोग एक साथ आते हैं और पूरा वातावरण एकता और आस्था से परिपूर्ण होता है। जो विदेशी श्रद्धालु आध्यात्मिक ज्ञान की खोज करने अथवा भारतीय संस्कृति को जानने की लालसा रखते हैं, उसके लिए महाकुंभ से श्रेष्ठ अवसर अन्य कोई हो ही नहीं सकता। महाकुंभ मेले में यह सब कुछ सहज प्राप्य है।

कुंभ का सनातन धर्म में विशेष महत्व है। यह अनुष्ठान तप, अनुशासन और कठोर भक्ति का प्रतीक माना जाता

है, जहां साधक तर्पण-समर्पण, धार्मिक अनुष्ठान के साथ-साथ आध्यात्मिक अनुभूति प्राप्त करते हैं। कुंभ मेला कल्पवास के रूप में हमें अपनी आध्यात्मिक, सामाजिक, मानसिक और शारीरिक चेतनाओं की अनुभूति करने का अवसर प्रदान कराता है। जो लोग कल्पवास करते हैं उन्हें ब्रह्म मुहुर्त में उठना चाहिए, सत्यवचन बोलना तथा ब्रह्मचर्य का पालन करना चाहिए। प्रतिदिन तीन बार गंगा स्नान कर पितरों का पिण्डदान, नाम जप, सत्संग, सन्यासियों की सेवा, एक समय का भोजन करना, जमीन पर सोना आदि के साथ-साथ उन्हें किसी की निंदा नहीं करनी चाहिए, सभी जीवों के प्रति दयाभाव रखना चाहिए एवं उपवास और दान-पुण्य आदि जैसे शुभ कार्य करने चाहिए। साधक की यम-नियमों का अनुशासन करने से शरीर, मन और आत्मा शुद्धि होती है। साथ ही ईश्वर के प्रति अटूट भक्ति और समर्पण भाव बढ़ता है। ऐसी मान्यता है कि माघ मेले में तीन बार स्नान करने से दस हजार अश्वमेघ यज्ञ के बराबर पुण्य मिलता है। साथ ही इससे जाने-अनजाने में किए गए सभी पाप धुल जाते हैं और भगवान का पूर्ण आशीर्वाद प्राप्त होता है। हिंदू पौराणिक कथाओं के अनुसार समुद्र मंथन के दौरान अमरता कलश का अमृत चार स्थानों पर गिरा था प्रयागराज, हरिद्वार, उज्जैन और नासिक। इसीलिए कुंभ मेला हरिद्वार में गंगा जी के आँचल में, उज्जैन शिप्रा नदी तट पर, नासिक गोदावरी जी के किनारे एवं प्रयागराज में गंगा-यमुना-सरस्वती के पावन संगम पर लगता है। प्रयागराज में गंगा, यमुना, सरस्वती के संगम होने के कारण यह सर्वाधिक पावन, महत्वपूर्ण तथा लोकप्रिय माना जाता है।

मेले परिसर में देश के महानतम संत भी आये हुए हैं जिनके दर्शन अति दुर्लभ है। कथावाचक, अखाड़ों के संयोजक अपने-अपने पंडाल में श्रद्धालुओं के लिए धाराप्रवाह आध्यात्मिक कथाओं का प्रसाद सतत् रूप से जारी है। दूसरी ओर संत सिपाही महंत योगी आदित्यनाथ जी ने करोड़ों-करोड़ों श्रद्धालुओं के लिए जी-जान से सुविधाओं को सुचारु रूप से व्यवस्थित कर रखा है। जिस कारण यह कुंभ निःसंदेह महाकुंभ बन गया है। इन विश्वव्यापी सुव्यवस्थित सुविधाओं के चलते ही देश-विदेश के कोने-कोने से हर आम-खास व्यक्ति महाकुंभ में आस्था की डुबकी लगाने की योजना बना रहा है। यदि यहां आने के लिए अधिक से अधिक मात्रा में जन यातायात साधनों का उपयोग किया जाये तो लंबे-लंबे जामों से भी मुक्ति मिल सकती है। कृपया अगर आप अपनी भावी पीढ़ी को आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, रोबोटिक्स और चिप कम्युनिकेशन जैसी तकनीकों के साथ-साथ अपनी प्रकृति, अपनी संस्कृति, अपनी परंपराओं और अपनों के साथ मान-सम्मान का संस्कार देना चाहते हैं तो परिवार सहित महाकुंभ में आने की योजना अवश्य बनाएँ।



डॉ उमेश प्रताप वत्स

## आज का द्रोण : सामाजिक यथार्थ

इस सच्चाई को इन्कार नहीं किया जा सकता कि लेखक एक प्रकार से यथार्थ का सृष्टा भी होता है और दृष्टा भी क्योंकि यथार्थ को अपना दृष्टिकोण वह अपने जीवन की अनुभूतियों से ही संचित कर देता है। जिन्दगी से रू-ब-रू होती अनुभूतियों को वह अपनी रचनाओं में चित्रित कर उसे अपनी परिकल्पनाओं के अनुरूप ही यथार्थ रूप में ढालता है। समाज और साहित्य में जिन्दगी की यथार्थता के भिन्न-भिन्न रूप ओर धरातल होते जिन पर रचना को यथारूप आकृति मिल पाती है, “यथार्थ के लगभग हर सम्भव रूपों का चित्रण डॉ. कैलाशचंद्र शर्मा ‘शंकी’ ने अपने उपन्यासों में चित्रण कर अपनी अनुभूति में उतारने का सफल प्रयास किया है।”<sup>1</sup> उनकी यथार्थ के बारे में विश्वनाथ त्रिपाठी लिखते हैं- “उनके उपन्यासों में यथार्थ को केवल आरोपित नहीं किया गया है बल्कि उनकी चेतना में इतना गहरा समाया हुआ है जो सोचने का दृष्टिकोण बनकर व्यक्त हो गया है।”<sup>2</sup> यहीं वैज्ञानिक दृष्टिकोण जब सच्चाई को लक्ष्य मानकर अग्रसर होता है तब सम्पूर्ण जीवन को अहमियत की कसौटी पर परखता है। जिन्दगी के समस्त अच्छे-बुरे पक्ष गुण-दोष की सीमाओं में बंध जाते हैं।

डॉ.कैलाशचंद्र शर्मा ‘शंकी’ का ‘आज का द्रोण’ उपन्यास वक्त की नज़ाकत को यथार्थ के माध्यम से न केवल मानव कल्याण एवं जन चेतना द्वारा शोषित शोधार्थियों का सजीव चित्रण करता है बल्कि स्वयं को महान् शिक्षाविद्, साहित्यकार और समाज में उत्कृष्ट एवं उच्चकोटि के इन्सान के रूप में प्रतिष्ठित कर महामण्डित करवाने की स्वार्थ रूपी तीव्र लालसाओं की पूर्ति करने के लिए स्तरहीन रास्तों का अनुकरण करने के घिनौने प्रयास करते हैं उनकी मुखौटों से हकीकत के काले लबादे हटाकर समाज के समक्ष उनकी हकीकत पेश करता है।

उपन्यास की केन्द्रीय भूमिका में सुप्रसिद्ध शिक्षाविद्, साहित्यकार, समाजसेवी, धर्माचार्य, राजनीतिज्ञ, अर्थशास्त्री डॉ. भक्त वत्सल जी विराजमान नज़र आते हैं जो स्वयं को समाज में द्रोणाचार्य रूपी वटवृक्ष स्वरूप स्थापित किए हुए हैं जिनकी छत्रछाया में बहुत से शोधार्थी, युवक कवि, लेखक और समाजसेवी पनाह लेकर उनके आशीर्वाद रूपी प्रसाद से जीवन को सुखमयी बनाकर प्रासाद के मालिक बनने के लिए स्वप्न पूरे करने को लालायित नज़र आते हैं। उनके जीवन में आजमाये हुए नुस्खे, पैंतरेबाजी और शॉर्टकट सीखे को अधीर दिखाई देते हैं। उन द्रोणाचार्यों का भी शिक्षा जगत और साहित्य की दुनियाँ में एक गुप है जिन्होंने अपने-अपने इलाकों में अपनी-अपनी प्रसिद्धि को प्रचार एवं प्रसार के जरिए अपनी-अपनी साहित्यिक समितियां, संस्थान, परिषद्, सभायें आदि का सरकारी कार्यालयों से पंजीकरण करवा रखा है और साहित्यिक संस्थाओं के माध्यम से शिक्षकों, कवि, लेखकों, पत्रकारों, साहित्यकारों, समाजसेवियों, राजनेताओं को वक्त-वक्त पर सम्मान समारोहों का आयोजन कर उन्हें सम्मानित एवं पुरस्कृत करते रहते हैं ताकि समाज में उनकी विद्वता का सिक्का जमा रहे और लोगों में उनकी पैठ बनी रहे। भक्त वत्सल के समानांतर डॉ.सर्वगुण सम्पन्न, डॉ. रामेश्वर जी ‘अजात शत्रु’, डॉ. मधुकर जैन आदि बहुत से ऐसे ही द्रोणाचार्यों के आधुनिक साहित्यिक गुरुकुल खुले हुए हैं। अक्सर इन सभी की मुलाकात भिन्न-भिन्न

स्थानों पर आयोजित होने वाले साहित्यिक सम्मान समारोहों में होती रहती है क्योंकि उनको उनके शिष्यों द्वारा मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित कर सम्मान दिया जाता है।

उपन्यासकार अपने उपन्यास 'आज का द्रोण' में मुख्य रूप से यह सन्देश देने के इच्छुक दिखाई देते हैं कि किस प्रकार आज हिन्दी साहित्य में शोध का स्तर गिर रहा है। आज के द्रोणाचार्य शोधार्थियों को किस प्रकार गुमराह करके उनसे पैसा तो ऐठते ही हैं साथ में उनका शोषण भी करते हैं। कुछ वक्त का बदलाव भी ऐसा हो गया है कि आदमी कम समय में अधिक पाने का अभिलाषी हो गया है। शिक्षा को छोड़कर उसके पास अन्य सभी प्रकार के उल-जलूल और बेकार के कामों में वक्त खर्चने को है और उनकी अल्प बुद्धि और निष्क्रियता वाली सोच पर अपने स्वार्थ का रंग चढ़ाकर आज के ये द्रोणाचार्य पूरी तरह से मानसिक शोषण कर अपने काबू में कर लेते हैं और उनके समक्ष स्वयं को उनके 'गॉड-फ़ादर' के रूप में प्रस्तुत कर 'द्रोणाचार्य' का सही प्रमाणित लेबल लगवा लेते हैं।

ईमानदार, परिश्रमी, आदर्शवादी एवं सिद्धांतों के पालक शिक्षाविद् प्रोफेसर जो सही अर्थों में शोधार्थियों का भला चाहते हैं वे तो अब बहुत कम संख्या में ही शोध-निर्देशक बनने की तमन्ना रखते हैं। कोई इक्का-दुक्का चाहे भी तो ये द्रोणाचार्य अपनी पहुंच और अपने भ्रष्ट तरीकों की दुधारी तलवार का इस्तेमाल कर उन्हें अपने रास्ते से हटा देते हैं और स्वयं शोध-निर्देशक बनकर अपनी हैसियत और जान-पहचान का एहसास करवा देते हैं। बेधड़क होकर अपना कारोबार चलाते रहते हैं। वे विवेकशील प्रोफेसर शोध की दिनों-दिन बिगड़ रही स्थिति पर चिंता व्यक्त करके ही रह जाते हैं। क्योंकि राशि लेकर शोध प्रबंध लिखने वाले अध्यापक बंधुओं की संख्या बहुत हो गई है। वे सोचते रहते हैं- "आज के द्रोणरूपी शोध-निदेशक किस मिट्टी के बने हुए हैं, शायद विधाता भी उनको बनाकर उनकी फितरत को भूल गया। बड़े गज़ब के व्यापारी हैं, ग्राहक को एक बार आने के बाद कहीं और जगह जाने ही नहीं देते। शोध विषय से लेकर, सनोपसिज, आलेख प्रकाशित करवाने और शोध-प्रबंध को लिखकर देने तक की रॉयल्टी लेकर सभी प्रकार की गारंटी दे देते हैं। ऐसे में जब एक ही स्थान पर सभी कुछ उपलब्ध हो तो ग्राहक यानि शोधकर्ता और कहीं जाए तो जाए क्यों?"<sup>3</sup>

डॉ. कैलाशचंद शर्मा 'शंकी' ने अपने इस उपन्यास में 'आज का द्रोण' में यह भी स्पष्ट किया है कि तथाकथित शोध-निर्देशक स्वयं को राशि लेकर शोध-प्रबंध लिखने तक ही सीमित नहीं रखते, वे स्वयं गाइड बनकर केवल वह सौदा नहीं करते, वरन् दलाली हड़पने की मंशा भी पूरी करते हैं। ऐसे मूर्धन्य गाइड फिर अपनी बदनीयतों को छुपाने की खातिर शोधार्थियों का अलग-अलग तरीकों से शारीरिक एवं मानसिक शोषण करने में भी एक कदम पीछे नहीं हटाते चाहे गाइडों की उम्र कितनी भी हो.....सारंगा जैसी शोध छात्रा को इस प्रकार शारीरिक शोषण का भयंकर सामना करना पड़ता है। सारंगा और उनके बुजुर्ग शोध-निर्देशक प्रोफेसर की वार्ता इस तथ्य की पुष्टि करती है:-

"यदि मैंने तुम्हें कहा कि मेरे साथ कहीं बाहर चलो।" प्रोफेसर शोधकर्त्री पलभर रूक कर बोले, ".....तो तुम फौरन इन्कार कर दोगी।.....कर दोगी न!"<sup>4</sup>

सारंगा सोच में पड़ गई थी क्योंकि उनके कहने का लहजा भी विचित्र सा लगा और वह असमंजस में पड़ गई। प्रोफेसर साहब ने अपने सवाल का जवाब भी स्वयं ही दे डाला था। काकी सम्भल कर जवाब देने की इच्छुक होने पर भी सारंगा ने अस्थिर सी होकर कह दिया, ".....हाँ.....!"<sup>5</sup>

“मतलब क्या समझूं? चलोगी अथवा नहीं।”6

सारंगा ने पुनः कह दिया.....‘हाँ’7

परिणाम यह हुआ कि वो ज्यादा से ज्यादा सारंगा की समीपता पाने की उत्कंठा रखने लगे और शनैः-शनैः उसके करीब आने की कोशिश करते रहे। सारंगा ने भी कुछ बुरा महसूस नहीं किया क्योंकि बुरा महसूस करने जैसी कोई ठोस वजह उसे नजर नहीं आ रही थी - “एक तो वो चार बेटियों के बाप हैं, जिनमें से एक तो मेरी क्लासफेलो रही है, दूसरे उनकी छवि भी अच्छी ही रही है।”8

परन्तु उनका अचानक से विकृत होता रूप देखकर सारंगा विस्मित रह गई। उसकी समझ को मानों लकवा मार गया हो। उनके हाथ धीरे-धीरे मेरी बॉडी को पकड़ने को उतावले हो रहे थे। कुछ समझ में नहीं आ रहा था उसे ऐसा कैसे हो सकता है। वो बुर्जुग घिनौनी हरकत को अंजाम देने का घृणित कार्य कैसे कर सकते हैं। सारंगा ने नोटिस किया प्रोफेसर साहब की आँखों में हवस की लालिमा की चिंगारियाँ फूटने लगी थी और वो सारंगा को किस करने को उतावले से उसके होंठों की तरफ अपने होंठों को बढ़ा रहे थे और शरारती लहजे में कह रहे थे- “सारंगा! आज तो एक लम्बी सी किस का उपहार देकर मुझे धन्य कर दो।”9

सारंगा बुत बनी रहती तो न जाने क्या का क्या हो जाता। वह स्वयं कहती है- “एक झटके से पूरी हिम्मत करके मैंने अपने को उनकी वृद्ध मगर की मजबूत पकड़ से छुड़ाया और अगले ही क्षण उनके घर से बाहर थी। बाहर आकर भी मैं रूकी नहीं बल्कि अपनी चलने की गति तेज कर दी और अपने घर आकर ही चैन की साँस ली। फिर स्वयं को सम्भाला। स्वयं को सामान्य किया। फिर मैं अपनी माता जी के पास जाकर बैठ गई। थोड़ी सी देर में मैंने उस हादसे को विस्मृत कर डाला। क्योंकि इतना होंसला और धैर्य तो मुझमें था ही जो शायद मुझे अपने माता-पिता के संस्कारों से मिला था।”10

लेखक ने दूसरी ओर ऐसे शिक्षाविद्, साहित्यकार और समाजसेवियों का यथार्थ रूपेण शानदार ढंग से चित्रित किया है जो सहज, शान्त एवं निश्छल स्वभाव के हैं जिनमें डॉ. पुष्पराज कौत्स, डॉ. विजय आनन्द जैसे निर्भिक, निष्पक्ष व्यक्तित्व के मालिक हैं जो किसी प्रकार के धन अर्जित कर उसको बढ़ाने की हवस के पीछे नहीं भागते। ऐसे विद्वानों को उनके शातिर, चालबाज एवं कपटी शिष्य ही ठगने की हरसम्भव कोशिश करते हैं। इनमें ऐसे शिष्य हैं जो धन और प्रसिद्धि के शॉर्ट कट अपनाकर अपने गुरुओं को दर-किनारे कर देते हैं और वक्त आने पर उनको पहचानने का साहस भी नहीं रखते।

कुछ तीरथदास जैसे ऐसे पात्रों को भी उभारा गया जो अपने गुरु के विषय में कहता है- “कुल मिलाकर मुझे इनसे बेहतर सहयोगी नहीं मिल सकता जो मैं चाहता हूँ, जो मेरी प्लानिंग है, शोध-प्रबंधों के अधिक से अधिक लिखने की आप जैसा से लिखवाकर बेचकर धन अर्जित करने की, उसमें तो आपके आशीर्वाद से ही सफलता पा सकता हूँ, गुरु जी को तो जो उचित होगा उतनी राशि दे दिया करूंगा। मतलब अब तो ‘आम के आम, गुठलियां भी अच्छा मुनाफा दे जायेंगी।”11

पिछले कुछ वर्षों से शोध प्रबंध, लिखने, लिखवाने और रैंडीमेड पी.एचडी. के थिसिस को क्रय-विक्रय का घृणित एवं शिक्षा के क्षेत्र को बदनाम करने तथा ईमानदार तथा सम्मानीय शिक्षाविदों को शर्मसार करने का धन्धा

तीव्रगति से फलता-फूलता जा रहा है। प्रोफेसर और शोध-निर्देशको में तो धन के लालच में अपनी प्रतिष्ठा एवं गौरव को सरेआम नीलाम कर डाला है। उन्हें न कोई मर्यादा के प्रति आस्था है और न ही धनोपार्जन की हवस के सिवाय किसी पर विश्वास है।<sup>12</sup> ऐसे ही पतित प्रोफेसर साहब को उसकी एक युवती शोधकर्त्री उसे उसकी हकीकत से साक्षात्कार करवाने का अदम्य साहस दिखाती है। जब वह प्रोफेसर उससे सैक्स की डिमांड कर बैठता है। तब गरिमा नरजिन की भाँति क्रोध में फूँककारती है- “प्रोफेसर साहब! आप मेरे पी.एचडी. के लिए शोध निर्देशक हो,....न कि मेरे प्रेमी या हसबैण्ड। उनको भी इस प्रकार खुल्लम-खुल्ला सैक्स की डिमाण्ड करने का कोई अमर्यादित अधिकार नहीं होता। लगता है आप पर वेस्टर्न कल्चर का काफी प्रभाव पड़ गया है जहां पर अधेड़ व्यक्ति नवयुवतियों को गुमराह करके ऐसे अपनी हवस की पूर्ति कर लेते हैं और अधेड़ औरतों का नवयुवकों को बहकाकर अपनी शारीरिक भूख को मिटाना एक फैशन बन गया है। परन्तु सर! यह भारत है और भारत की लड़कियाँ और औरतें अपनी संस्कृति और अपने रिवाजों का विनिष्ट होने से बचाने की हिम्मत रखती हैं।”<sup>13</sup>

गरिमा का हाथ क्रोध से उठा और प्रोफेसर के मुँह पर तमाचा जड़ने को एक्शन में आना ही चाहता था, मगर न जाने क्या सोचकर उसने अपना हाथ नीचे करते हुए कहा- “सर! मैं फिर भी आपको अपने बाप के समान समझती हूँ और दूसरे ‘यू आर गोर्ड टू बी रिटायर्ड फरोम युवर जोब।..... बस इतना ही।”<sup>14</sup>

निष्कर्ष:

डॉ. कैलाशचंद शर्मा ‘शंकी’ ने “आज का द्रोण” में शिक्षा और नारी अस्मिता की ज्वलंत समस्याओं पर बड़े जोरदार ढंग से प्रकाश डाला है जो शिक्षा जगत् के बहुरूपियों की पोल खोलकर उन्हें समाज के समक्ष परिजन में भी नंगा कर डालता है। यह भी बतलाने का सफल प्रयास किया है जो अपने अधिकारों के प्रति सजग हैं, जो आत्मविश्वास को अपने में संजोये रखने की क्षमता रखता है- वही इन्सान इस जगत में सही मायने में जिन्दगी जीने में समर्थ होता है और समाज में घूम रहे भेड़ियों से अपनी अस्मिता की रक्षा कर अपने उद्देश्य को पाने में कामयाब रहेगा।”

संदर्भ सूची:-

1. डॉ. जयभगवान शर्मा - शुभ रश्मियाँ - पृ. 07
2. श्री विश्वनाथ त्रिपाठी - निष्कर्ष - पृ. 48
3. डॉ. कैलाशचंद शर्मा ‘शंकी’ - आज का द्रोण - पृ. 121
4. डॉ. कैलाशचंद शर्मा ‘शंकी’ - आज का द्रोण - पृ. 122
5. डॉ. कैलाशचंद शर्मा ‘शंकी’ - आज का द्रोण - पृ. 124
6. डॉ. कैलाशचंद शर्मा ‘शंकी’ - आज का द्रोण - पृ. 124
7. डॉ. कैलाशचंद शर्मा ‘शंकी’ - आज का द्रोण - पृ. 125
8. डॉ. कैलाशचंद शर्मा ‘शंकी’ - आज का द्रोण - पृ. 126
9. डॉ. कैलाशचंद शर्मा ‘शंकी’ - आज का द्रोण - पृ. 126

10. डॉ. कैलाशचंद शर्मा 'शंकी' - आज का द्रोण - पृ. 127
11. डॉ. कैलाशचंद शर्मा 'शंकी' - आज का द्रोण - पृ. 127
12. श्री द्वारिका प्रसाद शर्मा - पूजा और नफरत - पृ. 78
13. डॉ. कैलाशचंद शर्मा 'शंकी' - आज का द्रोण - पृ. 128
14. डॉ. कैलाशचंद शर्मा 'शंकी' - आज का द्रोण - पृ. 129



डॉ.नरेश कुमार सिहाग



## टीचर्स' टिप्स: दसवीं अंग्रेजी पेपर

### सफलता मंत्र :

### अभ्यास ,आत्मविश्वास, समय प्रबंधन और प्रस्तुतीकरण।

दसवीं एवं बारहवीं कक्षाओं की माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की बोर्ड परीक्षाएं फरवरी के महीने से शुरू हो रही हैं । 15 फरवरी को दसवीं कक्षा का बोर्ड का अंग्रेजी 'कम्युनिकेटिव' एवं अंग्रेजी 'लैंग्वेज एंड लिटरेचर' का पेपर है । स्वाभाविक रूप से बच्चों में परीक्षा को लेकर जहां एक कौतूहल होता है वही 'एंजायटी' का भी सामना उन्हें करना पड़ता है । दसवीं कक्षा के छात्र-छात्राएं क्योंकि पहली बार बोर्ड परीक्षा में शामिल हो रहे होते हैं इसलिए उनमें एक अतिरिक्त 'एग्जाम फोबिया' होना स्वाभाविक है ।

यद्यपि ये परीक्षार्थी पहली कक्षा से ही विभिन्न परीक्षाएं उत्तीर्ण करके ही कक्षा दसवीं तक पहुंचते हैं लेकिन फिर भी गृह परीक्षा एवं बोर्ड परीक्षाओं का ऐसा हौवा खड़ा कर दिया गया है कि बच्चों का डरना स्वाभाविक है लेकिन यदि बच्चों को उचित मार्गदर्शन एवं मिले तो 'परीक्षाकाल' एक 'फोबिया' के 'फन फेस्टिवल' हो सकता है ।

चलिए बात करते हैं कक्षा 10 के अंग्रेजी विषय के प्रश्न पत्र पर की जो इस बार परीक्षा का पहला मुख्य प्रश्न पत्र है । यदि इस प्रश्न पत्र को बच्चे अच्छे से हल कर पाएं तो वेल् 'बिगिन हाफ डन' के सिद्धांत के अनुसार उनकी बाकी की परीक्षा के लिए भी उनका आत्मविश्वास बढ़ जाएगा।

परीक्षा से पहले:

परीक्षा केंद्र पर पहुंचने से पहले अपने प्रवेश पत्र में दी गई सारी जानकारी अच्छे से पढ़ ले एवं वहां क्या ले जाना है, क्या ले जाना वर्जित है, किस समय के बाद प्रवेश नहीं मिलेगा अथवा परीक्षा भवन के अंदर क्या नहीं करना है इन बिंदुओं पर जरूर गौर करें । सामान्य सी बात है आपके पास प्रवेश पत्र, ट्रांसपेरेंट पाउच, पारदर्शी ही राइटिंग पैड, बॉल पेन,पेंसिल, रबर, स्केल आदि के अतिरिक्त केवल स्कूल का परिचय पत्र ही हो तो बेहतर है दूसरी चीजें ले जाने से संभ्रम की स्थिति पैदा होगी ।

सबसे ज़रूरी बात यह है कि परीक्षाओं की तैयारी अच्छी होनी चाहिए जो वर्ष भर के पठन-पाठन से हो ही जाती है लेकिन यदि किसी वज़ह से तैयारी में कोई कमी रह गई है तो भी आत्मविश्वास रखना है । परीक्षा भवन

में चिंता रहित होकर जाएं। किसी तनाव, डर या एंजायटी की कतई ज़रूरत नहीं है। एक बार जब आप प्रश्न पत्र हल करना शुरू कर देते हैं तो प्रश्नों के उत्तर स्वयमेव आने लगते हैं। यह विशेषज्ञ एवं मनोवैज्ञानिक भी मानते हैं। तो परीक्षा भवन में जाइए बिना किसी डर एवं चिंता के और अच्छे से परीक्षा दीजिए।

पहले पंद्रह मिनट

परीक्षा केंद्र में स्पष्ट निर्देश होता है कि पहले 15 मिनट में आप केवल प्रश्न पत्र ही पढ़ेंगे अपनी उत्तर पुस्तिका पर प्रश्न पत्र से संबंधित कुछ भी नहीं लिखेंगे तो इस निर्देश का पूर्णतया पालन करें। घर से ही एक रणनीति बनाकर चलें कि पहले 15 मिनट में आपको पूरा प्रश्न पत्र पढ़ना है या सेक्शन ए के कंप्रीहेंशन पैसेज के एक या दो दोनों प्रश्नों को पढ़कर उनके उत्तरों को अपने मस्तिष्क में निश्चित कर लेना है। यह रणनीति हर परीक्षार्थी अपने अनुसार बनाए तो बेहतर है। सारा प्रश्न पत्र पढ़ लेने से प्रश्न आपके मस्तिष्क में बैठ जाएंगे और यदि एक भी कॉम्प्रीहेंशन पैसेज आप पहले हल करने की सोचेंगे तो भी आप अन्य परीक्षार्थियों से आगे होंगे इससे भी आपका आत्मविश्वास बढ़ेगा।

उत्तर पुस्तिका पर लिखने से पहले अच्छी तरह निश्चित कर लें कि आपको क्या, कैसे लिखना है क्योंकि लिखना, फिर काटना और दोबारा लिखना समय की बर्बादी के साथ-साथ आपके मस्तिष्क को भी परेशान कर देगा। नॉलेज के साथ-साथ आपका प्रस्तुतीकरण, उत्तरों को स्वच्छता, सुंदरता एवं एक निश्चित क्रमबद्धता के साथ करने से परीक्षक पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है और इससे आपके अंक बेहतर आते हैं।

जब हम बहुत अच्छी तैयारी करके परीक्षा में जाते हैं तब हम यह चाहते हैं कि सारी जानकारी प्रश्न पत्र में लिख दें लेकिन कई बार इसे टाइम मैनेजमेंट भी बिगड़ जाता है। परीक्षा में टाइम मैनेजमेंट का पूरा ध्यान रखना है। अंग्रेजी के प्रश्न पत्र में 80 अंकों हेतु आपको 180 मिनट मिलते हैं इनमें से 20 मिनट आप रिवीजन एवं एडिटिंग के लिए छोड़ दें। 160 मिनट में 80 अंकों के प्रश्नों को हल करने का सीधा सा अर्थ है एक अंक के प्रश्न पर आपको अधिक से अधिक 2 मिनट का समय देना है। इसके लिए शब्द सीमा का भी ध्यान रखना चाहिए एक अंक के प्रश्नों की शब्द सीमा लगभग 20 - 30 शब्दों तक रहे, इसी प्रकार पांच अंको का प्रश्न 100 से 150 शब्दों के बीच में हल करने की कोशिश करें। लंबे उत्तरों वाले दो प्रश्न 6 - 6 अंकों के आएंगे जो कॉम्पिटेंसी बेस्ड क्वेश्चन होंगे। इन प्रश्नों का उद्देश्य यह जांचना होता है कि परीक्षार्थी में अर्जित ज्ञान को अपने सामान्य जीवन में प्रयोग करने की कितनी दक्षता है। तो विशेष रूप से इन दोनों प्रश्नों के उत्तर रट कर लाने के बजाय सोच कर ही लिखें। वैसे भी 2020 की शिक्षा नीति 'रॉट लर्निंग' के बजाय 'क्रिएटिव लर्निंग' पर ही जोर देती है।

अंग्रेजी के प्रश्न पत्र में सेक्शन सी में कुछ प्रश्नों को देखकर आपको यह लगेगा कि ये प्रश्न आपके किसी भी चैप्टर से संबंधित नहीं हैं। लेकिन ऐसा नहीं है प्रश्न पत्र में इंटीग्रेटेड लर्निंग के ऑब्जेक्टिव को प्राप्त करने के लिए कुछ प्रश्न ऐसे डिजाइन किए जाते हैं कि वे दो-तीन या चार चैप्टर की थीम के आधार पर बनाए जाते हैं। उदाहरण के लिए लैंग्वेज एंड लिटरेचर के कोर्स में पुस्तकों 'फर्स्ट फ्लाइट' एवं 'फुटप्रिंट्स विदाउट फीट' में मुख्य रूप से 'इंपॉर्टेंस ऑफ फ्रीडम', 'गर्ल चाइल्ड एजुकेशन', 'वुमन एंपावरमेंट' एवं नियरिंग टू नेचर' का कांसेप्ट है तो

यदि ऐसे प्रश्न आते हैं तो इन प्रश्नों के आधार पर अपनी पुस्तकों के चैप्टर्स को आपस में जोड़कर समझने का प्रयास करें तब उनके उत्तर स्वाभाविक तरीके से आपके मस्तिष्क में आ जाएंगे।

आपके विषय अध्यापकों ने आपको बता दिया गया होगा कि केवल नीले पेन का उपयोग करना बेहतर होगा प्रश्न के मुख्य भागों को हाईलाइट कर सकते हैं प्रश्नों के नंबर बिल्कुल प्रश्न पत्र की तरह ही उत्तर पुस्तिका में लिखने हैं बहुविकल्पीय प्रश्नों के उत्तर में पूरा विकल्प ही लिखना चाहिए। राइटिंग सेक्सन में प्रश्न पत्र में दिए गए पॉइंट्स का पूरा उपयोग करें और परीक्षा भवन छोड़ने से पहले यह सुनिश्चित कर लें कि एक भी प्रश्न अनअटेंप्टेड न छोटे और सबसे जरूरी बात प्रश्न पत्र के बारे में इनविजीलेटर से व्यर्थ बहस न करें।

प्रश्न पत्रया उसके किसी भी हिस्से को भूलकर भी सोशल साइट्स पर न डालें और यदि कोई प्रश्न पाठ्यक्रम से बाहर का अथवा दोषपूर्ण है तो भी उसे हल करने का प्रयास करें मगर उस पर अधिक समय व्यर्थ न करें यदि आपने ऐसा प्रश्न हल नहीं किया तो बोनस अंकों से आप वंचित रह सकते हैं।

अंत में एक बार फिर, परीक्षा ही तो है अच्छे से तैयारी कीजिए, बहुत अच्छे से प्रस्तुतीकरण कीजिए, परीक्षा भवन में चिंता रहित होकर उत्तर लिखिए, अनुचित साधनों के प्रयोग करने की बात सोचिए भी मत, और जब एक बार आप उत्तर पुस्तिका निरीक्षक को सौंप दी तो उस प्रश्नपत्र के बारे में व्यर्थ बहस या चिंता नहीं करनी अब तो आप अगले प्रश्न पत्र के बारे में सोचिए। 'विश यू ए वेरी हैप्पी एग्जाम'।



डॉ. घनश्याम बादल

नाटिका :

## “युद्ध और शांति”

पात्र परिचय :\_

- 1)साध्वी (महिला)उम्र 35 वर्ष
- 2)जेवियर (आदमी)उम्र 40 वर्ष
- 3)चुवाश ( आदमी) उम्र 40 वर्ष
- 4)बोरान ( आदमी) उम्र 45 वर्ष

मंच व्यवस्था:\_

गोल स्टेज जिस पर “विश्व कुटुंब” लिखा है।  
(स्टेज के पीछे से आवाज आ रही है):\_”

आज कट्टरपन विश्व में फैला है।

हिंदू का धार्मिक कट्टरपन

मु स्लिम का..

सिख का..

क्रिश्चियन का..

यहूदी का...

अलगाव फैला है।

आज, मानव के प्रति मानव की श्रद्धा कहां खो गई?

लोकतांत्रिक व्यवस्था

कहां सरक गई?

मन की शुद्धता कहां खो गई?

पर्यावरण प्रदूषण के साथ मानसिक प्रदूषण ..

धर्म के प्रति भक्ति का प्रदूषण गंभीर फैला है।

अहंकार फैला है।

सच्चाई कहां गायब हो गई?

झूठ भर भर के फैला है।

हाहाकार मचा है ।

नफरत का संसार बसा है।

असली फसल कहां खो गई?

खरपतवार फैला है।

जाहिलपन फैला है ।

नम्रता कहां खो गई?

अकड़ का कट्टरपन फैला है।

हर धर्म का दूसरे धर्म के

प्रति आक्रामकता और

वैमनस्य फैला है।

प्रेम,मुहब्बत कहां खो गई?

गाली गलौज ,खराब माहौल फैला है।

सामंजस्य, सहनशीलता कहां खिसक गई?

मारधाड़ ,आगजनी का जलजला है।

अत्याचार का बोलबाला है।

आज ,सुख, शांति कहां चली गई?

घृणा,द्वेष का रेलपेला है।

“हिंसा युग “आन पड़ा है।\_2

(स्टेज पर युद्ध चल रहा है। बंदूक और तोपों की आवाजें। बम के धमाके। आग में स्प्रिंगबोक (सफेद पूंछ वाला छोटा मृग) जल्दी जल्दी छलांगे मार रहा है । और भों.... भों... कर रहा है। धीरे धीरे वह उछलना बंद हो गया। भों... भों... भी धीमे स्वर में निकल रही है। फिर वह गिर गया । भों... भों.. बंद हो गई। वह वहीं जलकर राख हो गया।)

भूरा भालू जिसकी पूंछ में आग लगी हुई है।वह दहाड़ता हुआ भाग रहा है ।

उड़ते हुए बाल्ड ईगल के पंखों में आग लगी है। वह धड़ाम से नीचे गिर जाता है। “धम्म”

बच्चों और औरतों की रोने चिल्लाने की आवाजें। भुखमरी, बेरोजगारी से बेहाल मानव समुदाय।)

स्टेज के पीछे से आवाज: ”

..आज विश्व में स्वार्थ व लालच बढ़ रहा है। आज के समय में सभी युद्ध से परेशान हैं। जान माल और पेट का बुरा हाल है। जहां युद्ध नहीं वहां भी भुखमरी है। आज हम देख रहे हैं कि प्राकृतिक संसाधनों पर कब्जा करने के लिए उपभोक्तावादी नीति के चलते कई गुट बन रहे हैं। ऑनलाइन प्लेटफॉर्म पर भी वही काम हो रहा है।

फेसबुक की मर्जी

कम्युनिटी स्टैंडर्ड का

उल्लंघन कह,

फेसबुक हटा दे

आपकी पोस्ट ।

क्यों?

क्योंकि फेसबुक की मर्जी....।

कभी चेतावनी दे,

कभी एक-दो घंटे प्रतिबंध ।

क्यों?

क्योंकि

फेसबुक की मर्जी....।

भर भर के गालियों वाली,

पोस्ट पर

कोई प्रतिबंध नहीं ।

क्यों ?

क्योंकि

फेसबुक की मर्जी.. ।

मॉब लिंचिंग वाली ,

पोस्ट पर भी ,

प्रतिबंध नहीं ।

क्यों?

क्योंकि

फेसबुक की मर्जी...।

तब कम्युनिटी स्टैंडर्ड का  
उल्लंघन नहीं ।

क्यों?

क्योंकि

फेसबुक सॉफ्टवेयर स्टैंडर्ड  
की भी मर्जी...।2”

( स्टेज पर दृश्य )

चुवाश (रंग गोरा,बाल भूरे, मोटा लंबा अत्यधिक गुस्से में तोप चलाते हुए):\_” तुझे अपना हक लेना है। अलग रहना है न। ले तू अब तोप ले। और रह अलग” (आग लग गई।आग से वह हिस्सा जल गया।) ) फिर वह कुटिया के बीच में बैठी साध्वी को देखता है ।(साध्वी शांत है।चुवास हैरानी से उसे देखता जा रहा है।)

क्षणिक प्रकाश गुल। दृश्य परिवर्तन

जेवियर ( रंग साफ,लंबा ,बाल भूरे,अत्यधिक गुस्से में बाइक की तेल भरी टंकी पर बम फेंकते हुए) :\_” तुझे अपना तेल शेयर नहीं करना । तो ले अब बम ले”

(तेल की टंकी में धमाका\_ भौम भौम” बाइक जल जाती है)

फिर वह साध्वी को देखता है। वह शांत है। (जेवियर साध्वी को हैरानी से देखता जा रहा है।)

क्षणिक प्रकाश गुल।

दृश्य परिवर्तन।

(गेहूं और दाल के बोरो और बाइक के बीच में रखे बोरान का गेहूं से भरा बोरा भी जल कर राख हो गया। काला धुआं उठ रहा है। ..

बोरान भूखा है।वह उकड़ूं बैठा बैठा पेट पकड़ कर रो रहा है। रोते रोते साध्वी को देखता जा रहा है कि साध्वी शांत बैठी है। वह हैरानी से साध्वी को देख रहा है।/आग विकराल रूप लेती जा रही है। आग में जेवियर की गेहूं से लबालब भरी कई बोरियां और नोटों से भरी बोरियां भी जल रही है ):\_” धू...धू...”

(बोरान ,जेवियर और चुवाश आदि सब आग में झुलस गए हैं।वे तीनों अपनी अपनी जलती हुई बोरियों को देख रहे हैं तो कभी हैरानी से शांत बैठी मौन साध्वी को देख रहे हैं।)

स्टेज के पीछे से आवाज:\_”

मौन साध्वी  
सब कुछ सुने  
शब्द अपशब्द भी सुने  
फिर भी  
सुनकर भी कुछ न सुने  
सिर्फ कानों पर कसकर  
हाथ धरे।

मौन साध्वी  
काम काज सब करे  
सब की सुने  
फिर भी  
धीर धरे  
मुंह से कुछ न कहे।

मौन साध्वी  
सब गड़बड़ देखे  
सब प्रपंच जाने  
फिर भी  
बस आंखें मूंदे  
खुद को भीतर से देखे।

मौन साध्वी  
धन दौलत से परे  
शांत नीले गगन के तले  
फिर भी  
साधना में तपे ।

मौन साध्वी  
लोगों से घिरी  
प्रांगण में रहे  
फिर भी



सांसारिक सुख से परे  
जमीन में धंसे ।

मौन साध्वी  
दिन के उजाले में रहे  
रात के सन्नाटे में बैठे  
फिर भी  
मन में शांति की हिलोरें चलें।

मौन साध्वी  
दैहिक सुखों को त्यागे  
रागों से बैरागी होवे  
फिर भी  
असीम सुख में बसे।“

(जेवियर, चुवाश लड़ लड़ कर थके हारे मायूस। आग में झुलसे और कमजोर। बोरान रंग काला, बाल घुंघराले , भूख  
प्यास से अधमरा ( पेट पकड़ कर) साध्वी के समक्ष तीनों खड़े हैं।)

(साध्वी की आंखें खुलीं)

सभी एकसाथ बोलते हैं :\_” साध्वी जी हमें भी रास्ता दिखाएं कि ऐसे युद्ध के माहौल में भी आप इतनी शांत कैसे  
हैं? साध्वी :\_”पहले मेरे प्रश्न का उत्तर दो।...क्यों भ्रष्टाचार करते हो?...

क्यों युद्ध करते हो?

सोने चांदी  
हीरे जवाहरात  
जमीन जायदाद  
मिलेनियर और  
घर प्रॉपर्टी के ओनर।

बनने के लिए  
रोज खपते हो  
रोज मरते हो  
जिसे कहते हैं नोकरी पेशे,

उद्योग धंधे।

पर क्या तुम्हे मालूम है?

तुम लेकर नहीं  
जा सकते यहां से  
एक भी रुपया  
सोने का एक आभूषण  
हीरे का एक नन्हा\_ सा जगमगाता पत्थर।

फिर भी  
रोज इनको प्राप्त  
करने को हो बेकरार  
इतने बेकरार  
इतने बेकरार  
कि  
उलझ गए हो  
दो नंबरी पैसों में  
डूब गए हो  
काले कारनामों में  
इलीगल  
उद्योग धंधों में।

करते हो रोज जी तोड़ मेहनत  
लगाते हो रोज ऐसे आस  
कि  
कल होगी तुम्हारी जमीन  
तुम्हारा घर  
खूब सारे सोने चांदी के गहने  
रत्न हीरे जवाहरात  
जैसे कि ले जा सकोगे  
इस लोक से अपने साथ ये सब।

पर

क्या तुम्हे मालूम है?

तुम लेकर नहीं

जा सकते यहां से

एक बूंद पानी की

एक इंच भी जमीन की

मिट्टी का एक कण भी

हवा का एक गुबार भी।

फिर

क्यों नाहक

गले में जंजीरें बांधते हो?

क्यों लाभ \_हानि के लिए भ्रष्टाचार करते हो?

क्यों लोभ में

पानी ,भूमि

तेल, यूरेनियम पर कब्जा करते हो?

क्यों लड़ते हो?

क्यों दूसरे देशों पर आक्रमण करते हो?

क्यों युद्ध करते हो??\_2”

जेवियर \_” सब पाने के लिए।“

साध्वी:\_” पा लिया?”

अमरीका \_” हां”

साध्वी \_” फिर क्यों परेशान हो?”

जेवियर \_” मैं इससे

से परेशान हूं। (रशिया , की तरफ इशारा करते हुए) ये हमारे ऊपर हावी होना चाहता है।

साध्वी,\_” और आप?”

जेवियर \_” मैं इसे अपने ऊपर हावी नहीं होने दूंगा। मैं बचना चाहता हूं नहीं तो ये मुझ पर हावी होकर मुझे कहीं का नहीं छोड़ेगा। मुझे रात को नींद भी नहीं आती।“

साध्वी (चुवाश की ओर मुंह करके ) :\_” आप बताओ ।“

चुवाश :\_” मेरी सोच भी इसके जैसी ही है। मैं भी इसे अपने ऊपर हावी नहीं होने दूंगा”

साध्वी:\_” कर भला तो हो भला की नीति आपको किसी ने नहीं बताई?

सभी \_:चुप”

साध्वी:\_”अगर आपने एक दूसरे के साथ नेकी की होती तो आज आपके पास नेकी ही लौटकर आती।आज आप सभी खुशहाल होते।...

गुस्से की आग ने सबको जला दिया । आप खुद अपनी लगाई आग में झुलसे हो । और बेकसूरों को भी जला दिया।“

चुवाश ( भूरे अधजले भालू की आग बुझाते हुए अत्यंत दुखी स्वर में):\_” साध्वी जी आप ठीक कर रही हैं। देखो मेरे रोते हुए गिजली (भूरा भालू,कंधे का कूबड़ निकला हुआ और लंबे पंजे) की बुरी हालत। देखो इसकी आंखों से आंसू गिर रहे हैं।“

जेवियर (गंजे ईगल के सफेद सिर पर लगी आग को बुझाते बुझाते लगभग रोते हुए) बोलता है:\_” देखो मेरा बाल्ड ईगल कैसे आग में झुलस गया है। ध्यान से देखो इसकी भी आंखों में आंसू निकल रहे हैं। मैं क्या करूं? कैसे बचाऊं इसे??”

साध्वी:\_”एक दूसरे पर विश्वास ही शांति का आधार है।मन,वचन और कर्म से सच्चे रहने की दृढ़ प्रतिज्ञा ही इसका हल है।..आपको भारत और नेपाल मैत्री जैसे संबंध बनाने होंगे।..

सबसे सुंदर ,  
सबसे अप्रतिम,  
नेपाल मेरा मित्र।

कभी था  
भारत भूमि का अभिन्न अंग ,  
आज भी है  
मेरे संग,  
प्रेम और त्याग के धागे से बंधा विश्वासपात्र।

युगों युगों से हम  
एक दूसरे के पूरक,  
बुद्ध की भूमि  
शुभारंभ का सूचक,  
मेरे मन मंदिर में आज भी शोभित।

खुद बयां करता है अपने हालात,  
समझ लेता है हमारी हर बात।  
मानवीय भावना से ओत प्रोत,

ऊंच नीच से रहित ,  
हम हर पल हंसे रोए एक साथ।

हम दोनों की धरती पर हरियाली अपार ,  
फूल, पत्ते ,बेल ,वृक्षों की भरमार,  
असीम सुंदर दृश्य फैले बेशुमार।

नित प्रातः रवि किरणों संग ,  
हम दोनो ने  
क्षमा, त्याग, सेवा ,भक्ति की खुशबू से ,  
उगाए विश्वास के फूल ,  
प्रेम पल्लवित मिट्टी में ,  
सींचे सतगुणी जल से,  
धैर्य और संयम की छाया देते वृक्ष।

हमसे करता  
बहुत प्यार,  
जानते हम यह बात,  
रहेगा हमेशा दुख सुख में तेरा मेरा साथ।

बिन कहे समझ लेता ,  
हमारी हर बात,  
रखना सदा थाम के हमारा हाथ।  
बुरे वक्त में देकर एक दूसरे का साथ,  
हम जीवन की नैया करेंगे पार।

आओ  
सदियों पुराना आत्मीय  
प्रगाढ़ स्नेह आपस में रख,  
बनें एक दूसरे के शुभचिंतक और समर्थक।

सबसे सुंदर,

सबसे अप्रतिम,  
नेपाल मेरा मित्र।\_2”

जेवियर और चुवाश एकसाथ बोलते (एक दूसरे से हाथ मिलाते हुए) हैं\_” हम आज ये दृढ़ प्रतिज्ञा लेते हैं कि हम मन,वचन, कर्म से सच्चे रहेंगे। भारत और नेपाल जैसी ही मित्रता करेंगे।“

साध्वी:\_” क्या आप सब सच में कमजोरों की सहायता करोगे? “नेकी कर और दरिया में डाल “  
वाली उक्ति चरितार्थ करेंगे ?

बोरान( मरने की कगार पर उकड़ूं बैठा हुआ बेहद मरी मरी आवाज में) :\_” साध्वी जी आपने सही कहा । ये सभी हम गरीबों की भुखमरी पर पैसा खर्च नहीं करते। पर हथियारों पर खर्चा अंधाधुंध करते हैं।पर्यावरण बचाओ अभियान चलाने की बात करके प्रदूषण (हवा ,पानी, मिट्टी,) के नाम पर जाने,अनजाने में हुई हमारी छोटी छोटी भूलों को भी माफ नहीं करते । बल्कि पर्यावरण नियमों का उल्लंघन कह कर प्राकृतिक आपदाओं को हमारी गलती बताते हुए हम पर हैवी पेनल्टी लगाते हैं जबकि ये सभी खुद युद्ध करके पर्यावरण को अत्यधिक प्रदूषित कर रहे हैं। मेरा अन्न से भरा बोरा भी इन्होंने जला दिया। मेरा छोटा मृग तो जल कर राख ही हो गया। मेरे पेट पर दोनो ने लात मारी है।“ बोलते बोलते जोर जोर से रोने लगता है। ऊं.... ऊं...”( हाथ पैर पीटने लगता है।)

साध्वी:\_” मैं आप सब के दुख को महसूस कर रही हूं। पूरी मानव जाति को ये समझना बहुत जरूरी है कि

पेड़\_पौधे

जीव \_जंतु

पशु\_पक्षी

जलीय\_प्राणी

सब रचनाएं प्रकृति की।

नहीं बिगाड़ी किसी ने संरचना प्रकृति की।

हे मानव !

केवल तूने ही बिगाड़ी सुंदरता प्रकृति की।

काटे पेड़

उजाड़े जंगल

बहाए

पानी व मिट्टी में रसायन

उड़ाया धुआं विषैला

पिघलाई ग्लेशियर श्रृंखला।

हे मानव!

क्यों केवल  
तूने ही तोड़े  
ढांचे प्रकृति के?

हे मानव !  
घूम\_फिर  
खा\_पी  
ऐश कर  
मजे ले ।  
पर  
रह यहां बनके  
तू विजिटर प्रकृति की।

मत खोद जमीन  
मत खंगोल समुंद्र  
मत कर उलट फेर  
मत रह गुमान में बुद्धि की।  
तेरी  
इसी बुद्धि ने  
चालाकी ने  
स्वार्थ ने  
देख  
कैसे बिगाड़ी रचनाएं सभी प्रकृति की।

ठहर तू  
संभल तू  
सुखाए हैं  
तूने नदी,नाले , तालाब  
भरेगा कब तू?  
जल्दी भर  
बन दयालु  
कर क्षति\_पूर्ति तू प्रकृति की।

नहीं तो  
अब पछताएगा  
अब सूखेगा  
सूखे से  
या  
बहेगा बाढ़ में  
उड़ेगा आंधियों में  
या  
मरेगा घुट के ।

अब  
करेगी तेरा हिसाब किताब प्रकृति ही।

अब नही बचेगा तेरा नामो \_ निशान।

तेरा वंश।

सोच!

क्या बच पाएगा?

चपेट से

तू अब प्रकृति की?\_2..

.(फिर अपना सिर

जेवियर ओर चुवाश की ओर मुंह करके पूछती है:” क्या आप की कथनी और करनी एक है? क्या आपके कर्म शुद्ध हैं?क्या आप की आमदनी शुद्ध है?

सभी:” एकदम चुप”

साध्वी:” देखो

एक महिला मोची

मेन रोड पर

पूर्णा मार्केट की

काम में अत्यधिक एकाग्र ।

नहीं किसी को देखती,

नजर गढ़ाती सिर्फ जूते, सैंडल ,चप्पल पर

तन मन से करती



मरम्मत चप्पल जूतों की।

चेहरे पर नहीं उसके  
कोई दुख,क्षोभ ग्लानि,  
बस हाथ में  
कील,धागा फेविकोल और हथौड़ी  
बहुत करीने से जोड़ती जाती चप्पलें टूटी।

देती सेवा फ्री  
शू पॉलिश की भी,  
ग्राहक देते रुपए  
खुश खुशी  
रखती रुपए बक्से में ऑनलाइन पेमेंट भी लेती।

लिंग समानता की मिसाल महिला मोची  
पारंगत  
धारदार औजारों  
को चलाने में ,  
ग्राहक को सेवा देती  
मुस्कुराती जाती।....

देखो महिला मोची कितनी तपस्या से शुद्ध कर्म कर रही है।शुद्ध आमदनी पैदा कर रही है।... आमदनी ज्यादा नहीं है फिर भी रात को नींद सबसे अच्छी उसे ही आएगी।...

क्या इतनी ही मेहनत और इमानदारी से आप सभी लोग पैसा कमाते हैं? आप में से कुछ शक्तिशाली लोगों ने हथियार बनाए हैं तो उन्हें बेचने के लिए वे युद्ध भी करवाएंगे। तभी तो उनके हथियार बिकेंगे और उनको आमदनी होगी। कुछ लोग आपके प्रभाव में या आपके दबाव में आपका साथ देंगे। इसीलिए गुट बन गए हैं।

जेवियर:\_" माफ कीजियेगा साध्वी जी वैसे आप किस गुट में हैं?"

साध्वी:\_" मैं किसी गुट में शामिल नहीं हूं।...

युद्ध से कोई फायदा नहीं। युद्ध में दोनों ही तरफ की जन और धनहानि होती है।

भाग्य दुर्भाग्य में बदल जाता है ।

लगाव अलगाव में।

संभव असंभव में

और विश्वास अविश्वास में बदल जाता है।"

चुवाश:\_" हम सब बहुत परेशान हैं। हम बहुत दुखी हैं। हमारा दुख कैसे दूर हो सकता है?

साध्वी:\_" दुख निवारण के लिए दुख के कारण ढूँढना जरूरी है।...अति भौतिकतावाद, शूटिंग शॉर्टिंग, गाना, बजाना, सेक्स , मारधाड़, हिंसा,भ्रष्टाचार, लूट खसोट,घोटाले ,धोखा, फरेब,आध्यात्मिकता का अभाव यानी असंतोष ,मानसिक विकृतियां, अत्यधिक प्रेशर ( घूमने का ,पहनने का ,शौ शो बाजी करने का) यही सब कारण हैं। तुम्हारी अशांति के।"

जेवियर अपनी जेब से बिस्किट निकाल कर बोरान की खिलाता है। चुवाश पानी की बोतक से बोरान को पानी पिलाता है।फिर सभी एक साथ साध्वी के सामने नतमस्तक होकर:\_" आज से हम सभी इन सभी कारणों को खत्म करने की दृढ़ प्रतिज्ञा करते हैं। और "शुद्ध कर्म और शुद्ध आमदनी" की राह पर चलेंगे। कथनी और करनी में समानता रखेंगे।कमजोर लोगों की सहायता करेंगे।उन पर अत्याचार नहीं करेंगे। "नेकी कर दरिया में डाल" की उक्ति चरितार्थ करेंगे । उनके दुख को महसूस करेंगे और उनके दुख दूर करेंगे"

साध्वी :\_" सबका कल्याण हो ।

सबका मंगल हो ... ..... जन जन का मंगल हो, जल के, थल के और गगन के सारे प्राणी सुखी हों ..

दशों दिशाओं के सभी प्राणियों का इस दुखियारे जगत में मंगल हो...

कोई भी प्राणी दीन-दुखी ना रहे... सबका मंगल हो।

(बोलकर आंखे बंद करके फिर से तपस्या में लीन हो जाती है।)

प्रकाश मंद

अत्यंत मंद

समाप्त



डॉ. सुमन धर्मवीर

## संस्मरण

बचपन ज्यादातर मां के चारों ओर घूमता है। अच्छा बुरा सबका हिसाब मां के पास ही रहता है। मां की बातों पर विश्वास न करने का कोई कारण नहीं होता। मां सारे सवालों का हल है। मेरे पास भी सवालों का ढेर और मां के पास उनका हल।

यह ढेर तब खुलना शुरू होता जब रात को मां अपने पास लिटाकर राम कृष्ण, राधा, मीरा, गणपति या नानक कबीर की कहानियां सुनातीं। सावित्री सत्यवान की कहानी उन्होंने कई बार सुनाई। चटक चौथ की कहानी अभी तक याद है।

मां कुछ कहानियां किसी पर्व त्यौहार पर चावल के दाने हथेली पर रख, गणपति स्थापित कर, रोली, कुमकुम, अक्षत, दीपक और जलपात्र रखकर सुनाती थीं। भैया दूज, रक्षाबंधन, अहोईमाता, करवा चौथ, नागपंचमी और सावित्री की कहानियां सभी लड़कियों के लिए होती थीं। भाई कहीं आसपास भी नहीं रहते थे। बल्कि भाई कई बार कहानी के बाद चोटी खींचकर कहते - “क्या फालतू की बात सुनती रहती है और मां टाइम पास करती रहती है। बड़ी होकर इन कहानियों का क्या करेगी?”

भाई की शिकायत मां से करती। मां डांट देती। मैं मां के पास लेटी पूछती - “मां, तुम्हें इतनी कहानियां कैसे याद रहती है? भूलती नहीं हो?”

“तुझ भी नहीं भूलेगी यदि मन लगाकर सुनेगी”।

“आपने मन लगाकर सुनी? किसने सुनाई आपको?”

“मेरी मां ने”

“उन्हें किसने सुनाई?”

“उनकी मां ने”

“इसका मतलब यह हुआ कि सब मां अपने बच्चों को कहानी सुनाती है। आप मुझे इसलिए सुनाती है कि याद कर लूं और अपने बच्चों को सुनाऊं”।

“हां”

“मेरे बच्चे कहां हैं?”

“बच्चों के बच्चे नहीं होते। बच्चे जब बड़े हो जाते हैं तब बच्चे आते हैं”।

“फिर जब बच्चे आ जाएं तभी कहानी सुनाना। अच्छा मां, ये बच्चे कहां से आते हैं, मैं कहां से

आई?निम्नो,मंजु,शशि,बड़की हम सब साथ आए।इतने कम क्यों आए?आप ज्यादा भी ला सकती थीं।“

“भगवान एक एक करके भेजते हैं “मां धैर्यपूर्वक जबाब देतीं।

“मां जब मेरे बच्चे आ जाएं तभी कहानी सुनाना। मुझे याद नहीं होती। कहानी याद करना मुश्किल काम है।आप भगवान से कहो कि मेरे बच्चे आपके पास भेज दें “।

मां मेरी बातों पर हंसती और कहतीं -“बच्चे पालना बहुत कठिन काम है।सबको अपने अपने बच्चे पालने पड़ते हैं।“

“आपको बच्चे पालना किसने सिखाया “मां एक पल चुप रहतीं फिर कहतीं -“भगवान ने।“

“आप अपने मां बाऊ जी के पास क्यों नहीं रहतीं? कहां हैं वे?आपको उनकी याद नहीं आती?बाऊ जी आपके कौन हैं?में आपके मां बाऊजी के पास नहीं रह सकती?”

“नहीं,सबको अपने मां बाऊजी के पास रहना पड़ता है।“

मां ने झिड़का-“अब मुंह बंद कर और सोजा”।मां पीठकर लेट गई। मेरे मन में सवाल थे और आंखों में नींद नहीं थी।

“मां बस एक सवाल और बता दो, फिर सो जाना”-मैंने मां का चेहरा अपनी ओर घुमाया।

“हां बोल,और क्या पूछना चाहती है। नहीं पूछेंगी तो पेट में दर्द हो जाएगा”-अब मां झल्लाने लगीं थीं।

“मां ,आप कितनी क्लास तक पढ़ी हो?”

“तीसरी तक”

और दीदी पांचवीं तक,में कहां तक पढ़ेंगी?”

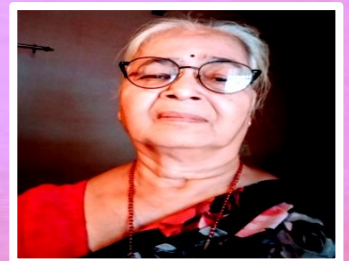
“जितना बाऊजी पढ़ाएं”।

“मां कितनी क्लास होती है?”

“पता नहीं।कल अपनी बहनजी से पूछ लेना “।

“हां मां,पर जितनी भी क्लास होती होंगी मैं उनसे भी ज्यादा पढ़ूंगी “-मां ने अंधेरे में मेरा चेहरा देखा,प्यार से बाल सहलाए

और कहा-“जितना मन हो पढ़ना , कोई नहीं रोकेगा “। मां का आशीर्वाद था या मेरा भविष्य दस्तक दे रहा था कि आज सतर प्लस की होने के बाद भी पठन पाठन रुका नहीं है।



सुधा गोयल

## न्याय में विलंब न्याय का अस्वीकार है ।

“ भले डांट घर में तू बीवी की खाना,भले जैसे-तैसे गृहस्थी चलाना ।

भले जाकर जंगल में धूनी रमाना, पर बेटा कभी तू कचहरी न जाना ।”

इन हास्य में डूबी हुई पंक्तियों में स्वर्गीय कवि कैलाश गौतम जी ने न्याय प्रणाली पर कटाक्ष किया है क्योंकि न्याय मिलने में यदि इतना विलंब हो जाए कि उसकी मूल आत्मा ही इसे लंबे विलंब के कारण नष्ट हो जाए, तो ऐसे न्याय का आप क्या करेंगे । कुछ लोग युवावस्था में न्याय की लड़ाई शुरू करते हैं ; मगर बुढ़ापे तक उन्हें न्याय नहीं मिलता । कभी-कभी तो दूसरी पीढ़ी को भी न्याय की इस अंतहीन लड़ाई को जारी रखना पड़ता है, तब कहीं जाकर न्याय नसीब हो पाता है । सवाल यह उठता है कि ऐसे न्याय से क्या लाभ? न्याय मिलने में होने वाली अनावश्यक देरी को देखकर न्याय और अन्याय के बीच फर्क को रेखांकित कर पाना मुश्किल हो जाता है । क्या ऐसा नहीं लगता कि न्याय देने की एक गैर न्यायिक प्रणाली अस्तित्व में आ गई है, जिसने न्याय से उसकी आत्मा को छीन लिया है ।

“ न्याय में विलंब, न्याय से इंकार है।” यह एक न्यायिक सूत्र है। इसका मूल भाव यह है कि पीड़ित को युक्ति युक्त समय के भीतर न्याय सुलभ होना चाहिए । समय पर न्याय न मिलाना वास्तव में न्याय से वंचित करने जैसा है । त्वरित न्याय की आवश्यकता को रेखांकित करते हुए, भारत के प्रथम प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू ने बंगाल उच्च न्यायालय के न्यायाधीशों को संबोधित करते हुए कहा था कि “ भारत में न्याय सरल,त्वरित तथा सस्ता होना चाहिए । मुकदमेबाजी एक रोग की भांति है इसे पहले फैलने देना और उसके बाद चिकित्सा करना, अन्याय है। इसी प्रकार न्याय भी त्वरित होना चाहिए, क्योंकि विलंबित न्याय, न्याय से इंकार करने के समान है।” संविधान का अनुच्छेद 39(1)राज्य से अपेक्षा करता है कि वह समस्त नागरिकों को समान न्याय तथा निःशुल्क विधिक सहायता उपलब्ध कराए ।यह एक दुखद सत्य है कि राज्य निर्धन तथा शोषित नागरिकों को त्वरित तथा सस्ता न्याय उपलब्ध कराने में विफल रहा है । भारतीय न्यायिक तंत्र बढ़ती मुकदमेबाजी तथा लंबित प्रकरणों के बोझ के समक्ष असहाय सा हो गया है ।

यातना जनक विलंबित न्याय और न्याय में आस्था का प्रश्न :-

‘विलंबित न्याय कोई न्याय नहीं है’ बड़ी पुरानी कहावत है । वस्तुतः विलंबित न्याय, अन्याय है, न्यायालय द्वारा निर्दोषों को भी दिया जाने वाला दंड है । न्याय प्राप्त करने की उम्मीद से न्यायालय में पहुँचा व्यक्ति जब न्यायिक प्रक्रिया की विलंबित औपचारिकताओं में उलझता है तो वह न्याय प्राप्त करना तो दूर, लुटा हुआ सा महसूस करता है। उसे लगता है कि प्रतिपक्षी ही नहीं उसका वकील, न्यायालय के कर्मचारी,स्वयं न्यायाधीश भी उसके प्रतिपक्ष में खड़े हैं और न्याय प्राप्त करने हेतु न्यायालय में आकर जैसे उसने अपने प्रति अन्याय कर लिया

हैं। उसको न्यायिक प्रक्रिया एक गाय की तरह लगती है जिसका दूध तो वकील, कर्मचारी और न्यायाधीश दुह रहे हैं, अपराधी दूध चुरा रहे हैं, मक्खन- घी निकाल रहे हैं और वह स्वयं भूखे मरते बछड़े की तरह मायूस खड़ा है, जिसको दूध पीने के लिए गाय के पास फटकने भी नहीं दिया जाता। इस विलंबित न्यायिक व्यवस्था में शोषक पूंजीपति, भ्रष्ट राजनेता और नौकरशाह तथा हत्यारे अपराधियों के पौ बारह हैं और न्याय का पक्षकार सर्वाधिक पीड़ित है। ऐसी स्थिति में न्यायालय में न्याय को अटका देने की गरज से झूठे मुकदमे अधिक दायर हो रहे हैं और गरीब व्यक्ति न्यायालय में आकर भी चुपचाप अन्याय को सहन करने के लिए अभिशप्त है।

न्याय में देरी के कारण:-

हमारे बहुत से कानून अंग्रेजों की गुलामी के समय से निरंतर चल आ रहे हैं। अदालत में लंबी-लंबी तारीख पेशियाँ बिना किसी विशेष औचित्य के दे दी जाती हैं। जिस पक्षकार के पक्ष में अस्थाई स्टे आर्डर मिला हो वह इस पर अंतिम बहस करना ही नहीं चाहता है। बहुत सा कानून इतना जटिल है कि विद्वान न्यायाधीशों एवं अभिभाषकों द्वारा भी उनकी व्याख्या करना मुश्किल हो जाता है। कभी-कभी अभिभाषकों द्वारा अनावश्यक रूप से बाल की खाल निकली जाती है तथा अपने पक्षकार को खुश करने के लिए लंबी-लंबी बहस की जाती हैं। बहुत सी रिट याचिकाओं व प्रकरणों में सरकार ही एक पक्षकार होती है, जो उचित निर्णय लेकर अथवा अनुतोष देकर मामला समाप्त करवा सकती है। जनसंख्या में निरंतर वृद्धि, भूमि व संसाधनों की कमी, बेरोजगारी, शहरीकरण, तीव्र आर्थिक विकास, पारिवारिक विघटन, गुटबाजी, राजनीति का आप्राधिकरण तथा बेमतलब की लड़ाइयाँ इत्यादि के कारण मुकदमों की संख्या में निरंतर वृद्धि हो रही है। इसके साथ-साथ अधीनस्थ न्यायालयों में ढांचागत सुविधाओं का नितांत अभाव है, न्यायाधीशों तथा न्याय कर्मियों को मूलभूत सुविधाएं उपलब्ध नहीं हैं।

मुकदमों के त्वरित निस्तारण हेतु सुझाव:-

- कार्यवाहियों का स्थगन रोका जाना चाहिए। अधिवक्ताओं द्वारा दलील पेश करने का समय सीमित किया जाना चाहिए। अनावश्यक तथा गुणहीन याचिकाओं का दाखिला रोका जाना चाहिए।
- सरकार को ऐसी व्यवस्था करनी चाहिए कि उसके विभाग अनावश्यक मुकदमे बाजी से बचें, केवल उन्हें मामलों में मुकदमे और अपील दायर की जानी चाहिए जो अति आवश्यक हो।
- न्यायाधीशों के रिक्त पदों को शीघ्र से भरा जाना चाहिए तथा न्यायाधीशों के नए पद सृजित किए जाने चाहिए। न्यायाधीशों की नियुक्ति प्रक्रिया योग्यता, दक्षता तथा प्रशासनिक सक्षमता सुनिश्चित करने वाली होनी चाहिए।
- ऐसे आवेदन पत्र जो मात्र मुकदमे को लंबा करने के उद्देश्य से प्रस्तुत किए जाते हैं, उनको भारी खर्च के साथ यथा संभव शीघ्र निरस्त कर दिया जाना चाहिए।
- समन्स, वारंट्स व नोटिस वगैरा की तामील शीघ्र व सही तरीके से होनी चाहिए।
- विधायिका द्वारा मुकदमे के अंतिम निस्तारण हेतु अधिकतम अवधि सीमा निर्धारित कर देनी चाहिए व उस अवधि में निस्तारण नहीं होने पर न्यायाधीश द्वारा उचित कारण स्पष्ट किया जाना चाहिए।
- न्यायिक कर्म क्षेत्र से जुड़े हुए लोगों को इस वाणिज्य व्यापार नहीं समझ कर, मानव सेवा का नोबल

प्रोफेशन समझना चाहिए तथा उन्हें धर्म, नीति व मानवीय दृष्टिकोण अपनाते हुए अपने कर्तव्य का पालन करना चाहिए।

उपसंहार :-

त्वरित न्याय प्राकृतिक न्याय की मूलभूत चाह है। यह हमारे देश का दुर्भाग्य है कि हमारे यहाँ त्वरित न्याय की बाते तो बहुत होती हैं, मगर इस दिशा में व्यवहारिक पहल नहीं की जाती है। यही कारण है कि दिनों दिन स्थितियाँ और विकट होती जा रही हैं। न्याय प्रणाली में व्याप्त जटिलताओं से हम ऊबर नहीं पा रहे हैं। मुकदमों का बोझ अदालतों पर बढ़ता जा रहा है। इसलिए प्रसिद्ध न्यायविद सॉली सोराबाजी ने यह कहा है कि भारतीय न्यायिक प्रणाली ढहने के कगार पर है तो उसे कगार का सबसे बड़ा कटाव तो विलंबित न्याय के कारण है। वस्तुतः विलंबित न्याय से छुटकारा पाना भारतीय न्याय प्रक्रिया के लिए आज अग्नि परीक्षा है। एक राजस्थानी कवि ने सुलभ व त्वरित न्याय नहीं मिल पाने के कारण अपने दुःख को इस प्रकार प्रकट किया है:-

“ मौत, मुकदमा, मांदगी, मंती, मांगनहार ।

पांचू मम्मा एक सा, पत राखे करतार ॥”

लेकिन 21वीं शताब्दी की शुरुआत से ही भारत में त्वरित न्यायालय (फास्ट ट्रैक कोर्ट) की स्थापना से न्यायिक प्रणाली की एक नई उम्मीद जगी है। सुलभ व त्वरित न्याय देकर ही न्याय दीप की टिमटिमाती ज्योति को प्रचंड मशाल के रूप में ज्योतिमय किया जा सकता है।

## डॉली

रात ग्यारह बजे दरवाजे की घण्टी घनघनाई।

रहमान साहब बारह बजे के आस-पास सो पाते हैं।

उस समय रात पाली के इंचार्ज को आवश्यक निर्देश दे रहे थे। द्वितीय पाली की समाप्ति पर बॉस का फोन आता ही है। इस बीच हुए ब्रेक-डाउन की जानकारी उन्हें होना चाहिए ताकि बॉस को फोन पर संतुष्ट कर सकें कि रात पाली वालों को खदान चलाने में दिक्कत न आए।

बॉस से बात हो जाने के बाद वह रात पाली के फोरमेन से एक बार फिर बात करते हैं और फिर घड़ी में पांच तीस का अलार्म-ऑन करके सोने की कोशिश करते हैं।

रहमान साहब को आसानी से नींद नहीं आती। अपनी इस आदत से वह बड़े परेशान रहते हैं। वह बिस्तर पर लेट कर हस्बेमामूल दरूद शरीफ पढ़ते हैं। चाहते हैं कि कम से कम सौ बार दरूद शरीफ पढ़ लें लेकिन सौ की संख्या पूरी होते-होते कब उन्हें नींद अपनी आगोश में ले लेती वह जान नहीं पाते।

ब्लड-प्रेसर और शुगर के कारण मिसेज रहमान की एड़ी में इधर दर्द बढ़ गया है, इसलिए वह पेन-किलर खाकर सो गई हैं। वैसे भी उनके सोने का समय फिक्स है। वह ज्यादा देर जाग नहीं पाती हैं। किसी दिन यदि उन्हें देर रात जागना पड़ जाए तो पक्का है कि अगली सुबह उन्हें कोई न कोई रोग आ घेरता है। इसीलिए रहमान साहब आर्टी-पार्टी में भी टोक दिया करते हैं कि वह जल्द जाकर सो जाएं।

मच्छरदानी से निकलकर रहमान साहब ने बरामदे की लाईट जलाई तो देखा कि सामने सूरज खड़ा है। उन्होंने गेट खोला।

दुबले-पतले सूरज के चेहरे पर डर और चिन्ता की रेखाएं गहरे तक पैठी हुई थीं।

कल से ही सूरज ने उन्हें टेंशन में डाल रक्खा है।

रहमान साहब उसे जानते हैं। उनके बंगले के सामने ही तो खदान के पर्सनल मैनेजर वर्मा साहब का बंगला है। वर्मा साहब छुट्टियां बिताने सपरिवार बिहार गए हुए हैं।

देश में बेरोजगारी बढ़ी और कालोनी में चोरियां।

चोरी से बचने के लिए अधिकारीगण छुट्टी जाने पर अपने बंगले की देख-भाल के लिए चौकीदार रखते हैं।

सूरज वैसा एक युवक है।

रहमान साहब ने सवालिया निगाह के तीर छोड़े।

सूरज सकपकाया हुआ था-“साहेब!”

“हां, बोल...”

“साहेब, इसमें मेरा कोई कुसूर नहीं साहेब!”

रहमान साहब उसे घूरते रहे।



“साहेब, वो कुतिया मर गई साहेब!”

रहमान साहब सकते में आ गए-“क्या बोल रहा बे, कब मर गई डॉली?”

रहमान साहब की आंखों के आगे एक ऐसी कुतिया की तस्वीर उभरी जिसकी खाल पर से सारे बाल उड़ गए हों। ज्यादा उम्र के कारण जो काफी कमजोर हो गई हो। वाकई डॉली अपने ज़माने में होगी बड़ी सुंदर, लेकिन इधर उसे जाने कैसा रोग लगा था कि उसकी चमड़ी दिखाई देने लगी थी। छोटे कद की कुतिया डॉली के पूंछ के नीचे एक फोड़ा भी हो गया था। उस फोड़े से बदबूदार पीप निकलती तो एक अजीब सी गंध वर्मा साहब के घर में छाई रहती।

वर्मा साहब जब यहां आए थे तो रहमान साहब उनके घर जाकर बैठा करते थे। वर्मा साहब शतरंज के शौकीन हैं सो रहमान साहब और उनमें अच्छी पटती। भाभी बीच-बीच में चाय वगैरा रख जाया करती थीं। लेकिन जब से डॉली को रोग हुआ रहमान साहब ने वर्मा साहब के घर जाना कम कर दिया क्योंकि उन्हें कुत्ता ज्ञात से नफ़रत है।

वैसे भी इस्लाम में कुत्ता पालना मना है। हां, यदि पालना ही है तो ऐसे कुत्तों का घर में प्रवेश वर्जित होना चाहिए। उनके लिए अलग से व्यवस्था हो।

डॉली इतने बरसों से वर्मा साहब के घर में है सो स्वाभाविक है कि दुलारी भी है। मेहमानों के पास आकर उन्हें सूंघती है। रहमान साहब को तकलीफ़ तब होती है जब वह देखते हैं कि डॉली जूठे बर्तनों को चाटती है।

कोढ़ पर खाज यानी डॉली के बदन से उठती अजीबो-गरीब दुर्गंध से उन्हें एलर्जी थी। वह दुर्गंध उनका काफी देर तक पीछा पकड़े रहती। वर्मा साहब और उनके परिवार को तो उस दुर्गंध की आदत थी, लेकिन रहमान साहब को ऐसी कोई मजबूरी न थी कि वह वर्मा साहब के घर जाएं ही।

डॉली की बीमारी के बाद भी हस्बेमामूल वर्मा साहब उन्हें बुलाते लेकिन व्यस्तता का कोई न कोई बहाना बना रहमान साहब उनके घर जाने से बचते।

मिसेज रहमान जबकि अक्सर इस बात के लिए उन्हें ताना मारा करतीं कि आपकी दोस्ती का क्या हुआ? अब काहे जाकर भौजाई के हाथों की चाय-पकौड़ी का मज़ा नहीं उठाते?

रहमान साहब कहते-“उस घर का पानी भी हराम है। कुतिया है कि मरती भी नहीं।”

मिसेज रहमान ने बताया-“जानते हैं जी, उनके घर अब लेडीज़ भी जाने से कतराती हैं। अगर जाना पड़ ही गया तब कुछ खाने-पीने से बचने के लिए बहाने तलाशती रहती हैं।”

रहमान साहब की बड़ी बेटी शगुफ़्ता ने इंटरनेट पर देख कर बताया था-“अब्बू, डॉली की लाईफ़ हार्डली फिफ्टीन ईयर हुआ करती है। आँन्टी बताती हैं कि जब उनकी बेटी पैदा हुई थी वे डॉली को घर लेकर आए थे। इस हिसाब से डॉली की एज फोर्टीन ईयर तो हो ही गई है। शी विल नॉट सरवाईव मोर डेज़ अब्बू।”

वाकई चैदह साल पूरे करके डॉली मर गई।

रहमान साहब की समझ में न आया ऐसे समय क्या निर्णय लें।

अभी परसों की बात है जब सूरज ने बताया था कि कुतिया को बाहर घुमाने ले गया था। डॉली को सड़क किनारे फारिग होने छोड़ सूरज खैनी खाने मैनेजर साहब के चैकीदार के पास गया। दो मिनट भी न हुआ

होगा कि लौट कर देखा डॉली अपनी जगह न मिली। वह बहुत परेशान हो गया। डॉली ऐसी गुमी कि उसे खोजते-खोजते शाम हो गई। जब वह न मिली तब उसने रहमान साहब को बताया था।

रहमान साहब ने सूरज की लापरवाही के लिए उसे खूब डांटा-फटकारा और फोन पर वर्मा साहब को बता दिया था कि डॉली गुम गई है, आप चिन्ता न करें उसे तलाश किया जा रहा है। जैसे ही वह मिलेगी तत्काल आपको फोन कर दिया जाएगा।

वर्मा साहब ने ये बात लगता है कि भाभी को बता दी होगी। थोड़े देर बाद मिसेज रहमान के पास कालोनी की औरतों के फोन आने लगे कि कुतिया गुमी तो कैसे गुमी?

सूरजवा मोटा गया है, कितना लापरवाह हो गया है।

कैसे इन कमीनों के भरोसे घर छोड़ा जाए? आदि

रहमान साहब ने आफिस के स्वीपर को फोन किया था कि भाई कष्ट करके उस नामुराद कुतिया को कैसे भी हो खोज निकाला जाए।

आखिर स्वीपर ने ही रात आठ बजे डॉली को खोज निकाला। वह कालोनी के बाहर एक छोटे से पुल के नीचे दुबकी हुई थी। डॉली के बाल-विहीन बदन पर कई जगह खरोंच के निशान थे। लगता है आवारा कुत्तों ने उसे नोंचा-खसोटा था।

डॉली इतनी डरी -सहमी थी कि कू-कां भी नहीं कर रही थी।

रहमान साहब ने तत्काल वर्मा साहब को फोन करके बता दिया कि फ़िक्र न करें, डॉली मिल गई है। मिसेज वर्मा ने फोन पर रहमान साहब से बात की। वह रो रही थीं। रहमान साहब ने ढाढ़स बंधाया कि डॉली ठीक है। वह उसे डॉक्टर को दिखा दे रहे हैं।

तब जाकर मिसेज वर्मा शान्त हुईं।

उनका बस चलता तो फोन पर डॉली से बात भी कर लेतीं। लेकिन कुतिया भला फोन पर कहां बात कर पाती।

रहमान साहब ने अपने ड्राईवर गुप्ता से कहा कि जाकर इसे शहर के वेटेनरी डाक्टर को दिखा लाए।

गुप्ता ड्राईवर भी लगा नखरा दिखाने-“का साहेब, ई कुत्ता-कुतिया की इयूटी के लिए हम्ममें बोलते हैं।”

रहमान साहब को गुस्सा आ गया-“क्या हुआ, मेमसाहब रहती हैं तो तुम भी उस कुतिया को खूब पुचकारते दुलारते हो। अब उसकी हालत तो देखो। जाओ, देर न करो।”

गुप्ता ड्राइवर कुनमुनाते हुए गया था और डॉली की मरहम पट्टी करवा लाया था। उसने कहा भी था कि साहब, उम्मीद कम है कि ये कुतिया ज्यादा दिन जी पाए। इससे अच्छा है कि इसे मौत आ जाए। बेजुबान जानवर को अकेले नहीं छोड़ना चाहिए साहब...

रात काफी हो चुकी थी।

सूरज मुंह लटकाए उनके सामने खड़ा था।

रहमान साहब अंदर बेड-रूम की तरफ मोबाईल लेने गए थे। साथ ही वह चाहते थे कि मिसेज रहमान से भी डिस्कस कर लें कि इस स्थिति में क्या किया जाए?

मिसेज रहमान गहरी नींद में थीं।

उन्हें जगाया गया।

“क्या हुआ, अभी तक जागे हो। ब्रेक-डाउन हुआ है क्या खदान में?”

“नहीं, तुम उठो तो सही।”

“बोलो न!”

“डॉली मर गई।”

“क्या?” और मिसेज रहमान एक झटके से उठ बैठीं।

“क्या किया जाए, कुछ समझ में नहीं आ रहा है।” रहमान साहब चिंतित थे।

मिसेज रहमान बड़बड़ाई--“अच्छी नौटंकी है, खुद तो घूम रहे हैं और हम लोगों को परेशान कर रहे हैं। पता नहीं मिसेज वर्मा कहां मस्ती काट रही हैं? मेरे ख्याल से ससुराल से मिसेज वर्मा अब लौटकर अपने मैके आ गई होंगी। आप ही बात करिए।”

रहमान साहब ने मोबाईल पर पहले समय देखा। रात के साढ़े ग्यारह बजे थे। सोचा कि इस समय बात करने पर कहीं वर्मा घबरा न जाए।

फिर भी पोजीशन जानने के लिए उन्होंने नम्बर लगाया।

थोड़े सर्च के बाद घण्टी गई।

फोन वर्मा साहब ने ही उठाया था--“हैलो रहमान साहब!”

“नमस्कार भाई, बस कुछ नहीं आपकी याद आई और सोचा कि बात कर लें, अभी कहां तक पहुंचे?”

वर्मा साहब ने बताया--“लौट ही रहे हैं, इस समय साढ़ू भाई के साथ महफ़िल जमी है। करोड़पति लोग हैं, शिवाज़ रीगल ले आए हैं, गप्पों के साथ छान-घोंट रहे हैं। कल शाम को निकलेंगे और रात अम्बिकापुर में हॉल्ट करेंगे। ये मान लो कि परसों दुपहर तक हम लौट आएंगे। और कैसा चल रहा है?”

रहमान साहब उनके रंग में भंग डालें तो डालें कैसे? साढ़ू भाई के साथ दारू चल रही है। ऐसे में डॉली की खबर से उनका मज़ा किरकिरा हो जाएगा सो उन्होंने बात बदल दी--“आप नहीं हैं तो खदान में ब्रेकडाउन बहुत हो रहे हैं। बाँस पूछ रहे थे कि वर्मा की लीव कब खत्म हो रही है। और तो सब ठीक ही है।”

रहमान साहब ने मोबाईल कुर्ते की जेब के हवाले किया और मिसेज की तरफ मुखातिब हुए।

मिसेज रहमान बोलीं--“कल ही भाभी से बात हुई थी, वह बोल रही थीं कि उनकी बहन का गृह-प्रवेश है। कल लगता है पूजा-पाठ से फुर्सत पाकर वे लोग लौटने की सोचेंगे।”

“ठीक कहती हो, वर्मा बोल रहा है कि कल शाम को वे लोग वहां से चलेंगे।”

“तब....” मिसेज रहमान ने गहरा सांस भरा।

रहमान साहब बाहर निकले और सूरज से पूछ बैठे--“गांव में जब पालतू कुत्ता मरता है तो क्या करते हो तुम लोग?”

सूरज बोला--“का करते हैं, साहेब, उसे गांव के बाहर ले जाकर फेंक आते हैं!”

रहमान साहब ने तत्काल कहा--“तुम भी उसे फेंक दो।”

इसके बाद रहमान साहब अपने बिस्तर आकर लेट गए।

उनकी आंखों से नींद गायब हो गई थी।

परसों वर्मा साहब वापस आ जाएंगे। तब जो बवाल होगा देखा जाएगा।

कुतिया की लाश को इतने दिन कहां सम्भाल कर रखा जा सकता है।

अब जो हो, उन्होंने डिसीजन तो ले ही लिया है।

सुबह रहमान साहब जब ड्यूटी में थे, वर्मा साहब का फोन आया।

वर्मा साहब ने बताया कि वह वापसी पर हैं। कल तक पहुंच आएंगे। वर्मा साहब फोन पर बहुत चहक रहे थे। मिसेज वर्मा और बिटिया की हंसी की आवाज़ फोन पर गूँजी।

रहमान साहब के मन में आया कि वर्मा साहब को डॉली की मौत की खबर दे दें। वह बताना ही चाहते थे कि वर्मा साहब ने यह कह कर फोन काट दिया कि मिसेज वापसी की पैकेजिंग के लिए याद कर रही हैं, इसलिए अब वह बाद में बात करेंगे।

रहमान साहब डॉली की खबर उन्हें बता नहीं पाए।

बात आई गई हो गई।

इसके पूर्व भी वर्मा साहब डॉली को छोड़कर गांव गए थे। तब उसकी सेहत अच्छी हुआ करती थी। इस बार उसकी दशा ऐसी नहीं थी कि किसी नौकर के भरोसे उसे छोड़ा जाए।

घर में मालिक रहे तो पालतू जानवर खाए चाहे न खाए, उदास नहीं रहता है। लेकिन जब मालिक न रहे तो चाहे उसे आप काजू किशमिश खिलाएं या दूध-दही। वह कुछ भी खाएगा नहीं। खाएगा नहीं तो धीरे-धीरे उसकी सेहत और बिगड़ जाएगी। डॉली के साथ भी ऐसा ही कुछ हुआ। वैसे भी वह खान-पान में नकचढ़ी कुतिया थी। मिसेज वर्मा और उनकी बेटी उसे पुचकार-दुलार कर खिलाते-पिलाते थे। वर्मा साहब डॉली के लिए महंगी-महंगी चाकलेट लाया करते। वैसे मिसेज रहमान ने वर्मा साहब की अनुपस्थिति में जब भी घर में मीट बना, डॉली के लिए ज़रूर भिजवाया था। लेकिन सूरज ने बताया कि कुछ भी नहीं खाती है। बस सूँघ कर छोड़ देती है।

इसका मतलब वह मालकिन को खोज रही है।

पहले तो वह रोती भी थी, इस बार डॉली के मुंह से आवाज़ ही नहीं फूटी। जाने उसे कैसी तकलीफ़ थी कि वह बयान नहीं कर पाती होगी।

रहमान साहब को बस इसी बात का अफ़सोस था कि उन्होंने वर्मा साहब को डॉली की मौत के बारे में सूचित नहीं कर पाए। कारण सिर्फ़ इतना ही था कि उनका वापसी का सफर तनावमुक्त रहे। रहमान साहब ने अपनी मिसेज से सुबह कहा भी था कि देखना भाभी ज़रूर बुरा मानेंगी और उल्टी-सीधी बातें बनाएंगी। वैसे डॉली की मौत से उन्हें लाभ ही होगा।

वर्मा साहब अस्थमा के पेशेंट हैं, पालतू जानवरों से अस्थमा बढ़ता है। डॉली के बदन से फूटती दुर्गंध से हो सकता है वर्मा साहब को एलर्जी हो।

रहमान साहब ड्यूटी पर थे जब बेगम का फोन पहुंचा-“खदान नहीं उतरे क्या जी?”

सुबह के नौ बजे थे।

सिगरेट सुलगा कर रहमान साहब ज़रूरी कागज़ात पर दस्तख़त कर रहे थे। इसके बाद हस्बेमामूल उन्हें गमबूट, हेलमेट और कैप-लैम्प धारण कर अण्डरग्राउण्ड उतरना होता है। सिगरेट के दौरान एक लाल चाय आ जाती है और इस बीच यदि बॉस को ज़रूरत हो तो वह बुला कर या टेलीफोन पर उनसे बात कर लेता है।

अण्डरग्राउण्ड उतरना मतलब कम से कम चार घण्टे के लिए परिदृश्य से गायब हो जाना।

इसलिए ऊपर के कामकाज वह धड़ाधड़ निपटाते जा रहे हैं।

सिगरेट का कश खींच कर धुआं छोड़ते हुए रहमान साहब ने बीबी को बताया-

“बस अंडरग्राउंड उतरने की तैयारी कर रहा था, बोलो!”

“जानते हैं, मिसेज वर्मा आ गई हैं और आते ही रोना-पीटना मचा रक्खा है। मैं गई थी तो वह मुझसे झगड़ पड़ी कि कौन होते हैं रहमान साहब ने डॉली की फेंकवाने का डिजीजन क्यों लिया उन्होंने? वर्मा साहब से तो हर दिन बात हुई है, क्यों नहीं बताया उन्होंने कि डॉली पर क्या गुज़र रही है? मैं तो उनकी बात बर्दाश्त नहीं कर पाई और चली आई लेकिन कालोनी की औरतें उनसे लल्लो-चप्पो कर रही हैं।”

रहमान साहब सोच में डूब गए।

वर्मा साहब ने घर आकर फोन नहीं किया।

वह अपनी बीबी को समझाते क्यों नहीं कि जो हुआ अच्छा हुआ।

क्या डॉली कोई उनकी रिश्तेदार थी?

इतनी ही फ़िक्र थी तो फिर बेसहारा छोड़ कर क्यों गई थीं मिसेज वर्मा। जब तक डॉली खूबसूरत, क्यूट और हेयरी थी, मां-बेटी उसे गोद में उठाए घूमा करती थीं। चूमा-चाटी करती रहती थीं। मेहमानों को लाख पालतू जानवरों से चिढ़ हो, सारा खानदान अपनी डॉली की तारीफ़ करते नहीं अघाते थे। ज्यों डॉली कुतिया न होकर उनकी ही संतान हो। फिर उसे बीमारी और बुढ़ापे की दशा में नौकर के भरोसे छोड़कर दो-दो सप्ताह के लिए क्यों बाहर गई थीं?

रहमान साहब परेशानी की दशा में बोले- “वर्मा साहब तो नाराज़ नहीं हो रहे हैं?”

मिसेज रहमान- “नहीं, वह तो बोल रहे थे कि चलो जो हुआ अच्छा ही हुआ, लेकिन वर्मा भाभी माने तब न, नौकर सूरज को तो उन्होंने हत्यारा तक कह डाला है। बताईए, क्या उसने जानबूझ कर उसे मारा था?”

“छोड़ो, तुमने वर्मा भाभी से झगड़ा तो नहीं कर लिया?”

“मैं क्या झगड़ालू हूँ, मैंने बस इतना कहा कि आप लोग वहां परेशान हो जाते और वापसी का सफ़र मनहूस हो जाता इसलिए रहमान साहब ने आप लोगों को फोन पर कुछ भी नहीं बताया था। भाभी किसी तरह की सफाई सुनना नहीं चाहती हैं...उनके बगल वाली सिन्हा भाभी तो उन्हें और भी भड़का रही थीं। कह रही थीं कि भाभी ने जो मीट डॉली के लिए बना कर फ़िज़ में रख छोड़ा था, उसे सूरज खुद खा गया था और बिचारी डॉली के लिए नहीं बचाया था।”

कहते-कहते मिसेज रहमान रूआसी हो गईं।

रहमान साहब ने कहा- “तुम अब घर ही में रहो। फालतू टेंशन न लो। अगर मिसेज वर्मा ज्यादा नाटक करे तो करने दो।”

रहमान साहब ने फोन रख दिया और सिगरेट का कश खींचने लगे।

उन्हें बॉस से पहले खदान उतरना था।

अण्डरग्राउण्ड कोयला खदान की अंधेरी गैलरियों में केप-लेम्प की रोशनी के सहारे आगे बढ़ते रहमान साहब का दिल कहीं और था।

वह मिसेज वर्मा की नाटकीयता के बारे में सोच रहे थे।

हद है, जब तक चीज़ों की उपयोगिता रहती है, तभी तक उसकी कद्रो-कीमत की फ़िक्र रहती है इंसान को।

जैसे ही चीजें अपनी उपयोगिता खो बैठती हैं, उपेक्षा का शिकार होने लगती हैं। इंसान ऐसी चीजों को हाशिए में फेंक देता है लेकिन दिखावे के लिए दिल में जगह रखने का नाटक करता है।

वो चाहे डॉली जैसी उम्रदार, बीमार कुतिया हो या कि बूढ़े बीमार मां-बाप।

रहमान साहब को अपने पिता की याद हो आई, जो कि एक ज़माने में हिटलर की तरह रोब-दाब रखते थे। वह चाहे अम्मी हों या कि बच्चे, सभी उनकी सहूलियतों का ख्याल रखा करते थे। उनकी टाईमिंग के हिसाब से घर की तमाम गतिविधियां संचालित होती थीं। उन्हें कब पानी चाहिए, कब चाय, कब खाना चाहिए कब आराम।

क्या मज़ाल कि पिता आराम फ़रमा रहे हों और कहीं आवाज़ हो जाए।

उनके डर से बच्चे बेआवाज़ चला करते थे। अम्मी किचन में बर्तन धो डालतीं और कोई आवाज़ न होती। पिता का आतंक घर में चैतरफ़ा छाया रहता।

वही पिता, अम्मी की मौत के बाद एकदम तन्हा हो गए हैं।

खुद्दार इतना कि रोटी जैसी चीज वह खुद गढ़ लेते हैं।

नौकरानी तो दस बजे आ पाती है। वह घर की सफाई करती है और दो टाईम के लिए दाल-सब्जी बना देती है। ढेर सारा आटा गूंध कर फ्रिज़ में रख देती है। पिता को जब खाना होता है, फटाफट चार रोटियां पका लेते हैं।

वह अपने मित्रों में भी अपने संतानों द्वारा की जा रही उपेक्षा का ज़िक्र नहीं करते।

पेंशन से मिली रकम से घर का खर्च चलाते हैं। नल, टेलीफोन बिल और बिजली का बिल स्वयं भरते हैं। डिश एंटीना वाले को भी प्रतिमाह पैसे वही देते हैं। बेटों के सामने कभी हाथ नहीं पसारते। यहां तक कि नाती-पोते जब भी उनसे मिलने आते हैं तो कपड़ा-लत्ता आदि देते हैं। बहुओं को साड़ी खरीदने के पैसे देते हैं। फिर भी उनके लिए किसी के दिल में मुहब्बत नहीं है। कोई उन पर दया नहीं दिखाता।

गलती से भी बेटे उन्हें यह नहीं कहते कि अब्बू आप कुछ दिनों के लिए हमारे घरों में रहने चले आएं।

रहमान साहब ईद के मौके पर साल में एक बार अपने पिता से मिलने ज़रूर जाते हैं।

रहमान साहब महसूस करते हैं कि विदाई के दिन पिता काफ़ी संजीदा हो जाते हैं। बच्चों के लिए टॉफी, बिस्किट और मिठाईयां लाकर देते हैं।

अपनी उदासी छुपाने के लिए कहते हैं-“ठीक है अब तुम लोग निकलो, मुझे नमाज़ पढ़ने जाना है। सोचता हूँ कि मस्जिद ही चला जाऊँ।”

रहमान साहब सोचते-सोचते टी-5 बेल्ट कन्वेयर पार कर गए। याद ही नहीं रहा कि उन्हें टी-4 बेल्ट कन्वेयर के पास रूक कर ज़रूरी निदेश देने थे।

डॉली और पिता में कैसी तुलना करने लगा उनका मन?

मिसेज वर्मा की नौटंकी ने उनके मन में ये कैसी उथल-पुथल मचा दी है।

वह टी-5 से टी-4 की तरफ वापस लौट पड़े।



अनवर सुहैल

## उड़ान

सुबह की पहली किरणों के साथ गांव की गलियों में गूँजती अलार्म की आवाज किसी के ख्वाबों को झकझोर रही थी। 22 वर्षीय नेहा अपने सपनों को पूरा करने के लिए रोज सुबह 4 बजे उठती थी। उसके परिवार की आर्थिक स्थिति ठीक नहीं थी। पिता मजदूरी करते थे, और मां सिलाई से घर चलाने में मदद करती थीं। लेकिन नेहा का सपना इन सीमाओं से परे था।

“मैं एक पायलट बनना चाहती हूँ,” नेहा ने एक बार अपनी मां से कहा था। यह सुनकर मां मुस्कुरा दी थीं, लेकिन पिता की भौंहे तन गई थीं।

“पायलट बनने के लिए बहुत पैसा चाहिए। ये सपने हमारे जैसे गरीबों के लिए नहीं हैं।”

संघर्ष की शुरुआत

नेहा ने अपने पिता की बात सुनी, लेकिन उसका विश्वास अडिग था। उसने महसूस किया कि अगर सपनों को पूरा करना है, तो खुद पर विश्वास करना होगा।

नेहा ने गांव के स्कूल से पढ़ाई की थी। वह हमेशा अपनी कक्षा में अक्वल रही। बारहवीं की परीक्षा में उसे जिले में पहला स्थान मिला। यह उसकी पहली जीत थी। लेकिन असली चुनौती तो अभी बाकी थी।

पढ़ाई के लिए बड़े शहर जाना और पायलट बनने का प्रशिक्षण लेना उसके लिए आसान नहीं था। नेहा ने एक कॉलेज में दाखिला तो ले लिया, लेकिन फीस भरने के लिए उसे काम करना पड़ता था। वह सुबह अखबार बांटती, दिन में पढ़ाई करती और रात को बच्चों को ट्यूशन पढ़ाती।

पहला मोड़

एक दिन कॉलेज में एक प्रतियोगिता हुई, जिसमें विद्यार्थियों को अपने सपनों पर भाषण देना था। नेहा ने अपनी दिल छू लेने वाली कहानी सुनाई।

“हमारे गांव में शायद ही कोई जानता हो कि पायलट बनने का सपना देखने का मतलब क्या है। लेकिन मैं यह साबित करना चाहती हूँ कि हालात कभी हमारी उड़ान को रोक नहीं सकते।”

उसके भाषण ने सभी को प्रभावित किया। वहां मौजूद एक प्रोफेसर नेहा के जज़्बे से इतना प्रभावित हुए कि उन्होंने उसकी आर्थिक मदद करने का प्रस्ताव रखा।

नई राहें

प्रोफेसर की मदद से नेहा को एक स्कॉलरशिप मिली, जिससे उसकी पढ़ाई आसान हो गई। लेकिन यह केवल शुरुआत थी। उसे पायलट ट्रेनिंग के लिए विदेश जाना था, और इसके लिए उसे कड़ी मेहनत करनी पड़ी। नेहा ने हर परीक्षा में अक्वल स्थान प्राप्त किया।

उसके ट्रेनिंग के दिनों में कई बार ऐसा हुआ जब उसने हार मानने का सोचा। कभी घर की याद सताती, तो कभी फंड्स की कमी उसे रोकने की कोशिश करती। लेकिन हर बार वह अपनी मां की एक बात याद करती,

“जो सपने देखते हैं, वे रास्ता भी बना लेते हैं। बस रुकना मत।”

बड़ा मोड़

एक दिन, नेहा को एक बड़े एयरलाइंस में इंटरव्यू के लिए बुलाया गया। इंटरव्यू में उससे पूछा गया,

“आपने एक छोटे से गांव से निकलकर यह मुकाम कैसे पाया?”

नेहा ने मुस्कुराते हुए जवाब दिया,

“जब मैंने उड़ना सीखा, तो मैंने अपनी जड़ों को नहीं छोड़ा। हर बार जब मैं गिरती थी, मुझे मेरी जमीन मुझे उठाने के लिए तैयार मिलती थी।”

उसके जवाब ने इंटरव्यूअर को प्रभावित किया, और उसे नौकरी मिल गई।

गांव की बेटा, देश की पायलट

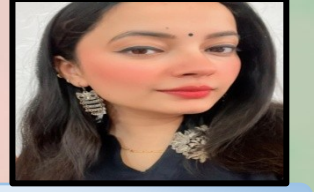
नेहा ने जब अपनी पहली उड़ान भरी, तो उसके माता-पिता और गांववालों के चेहरे पर गर्व और खुशी देखने लायक थी। वह पहली बार अपने गांव लौटी, तो उसे पूरे गांव ने फूलों की माला पहनाई।

नेहा ने अपनी सफलता को गांव की बेटियों को प्रेरित करने के लिए समर्पित किया। उसने एक फाउंडेशन शुरू किया, जहां वह आर्थिक रूप से कमजोर बच्चों को पढ़ाई और करियर में आगे बढ़ने की राह दिखाने लगी।



अंत

नेहा की कहानी केवल उसकी सफलता की नहीं है, बल्कि उन सपनों की है जो सीमाओं को तोड़कर उड़ते हैं। उसने साबित कर दिया कि अगर हौसला और मेहनत हो, तो कोई भी सपना पूरा किया जा सकता है।



उपासना राज

## करंट अफेयर्स - फरवरी 2025

- हाल ही में मुख्य चुनाव अधिकारियों का सम्मेलन कहाँ आयोजित किया जाएगा :- नई दिल्ली
- पर्यटन विभाग द्वारा राजस्थान के पर्यटन स्थलों, सांस्कृतिक गतिविधियों और सुविधाओं की जानकारी हेतु कौन-सा एप लॉन्च किया जाएगा :-ट्यूरिस्ट मोबाइल एप
- जनजातीय क्षेत्रीय विकास विभाग द्वारा मां बाड़ी केंद्र योजना कितने जिलों में संचालित की जा रही है :- 15 जिलों
- हाल ही में प्रधानमंत्री का प्रधान सचिव द्वितीय किसे नियुक्त किया गया है :- शक्तिकांत दास
- हाल ही में भारत ने लिथियम अन्वेषण के लिए किस देश के साथ समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए हैं:- अर्जेंटीना
- हाल ही में जारी राजस्थान बजट-2025-26 के तहत किस जिले में “लहसुन उत्कृष्टता केंद्र” खोला जाएगा :- बांरा (राजस्थान)
- भवाई नृत्य में किस कलाकार ने अपना नाम गिनीज बुक रिकार्ड में दर्ज करवाया है :- प्रवीण प्रजापत, अलवर
- हाल ही में, भारत का नया मुख्य निर्वाचन आयुक्त किसे नियुक्त किया गया है :- ज्ञानेश कुमार
- हाल ही में किस भारतीय को यूनाइटेड किंगडम द्वारा मानद नाइटहुड की उपाधि से सम्मानित किया गया है:- एन चंद्रशेखरन
- हाल ही में, एमएसएमई के लिए म्यूचुअल क्रेडिट गारंटी योजना की शुरुआत किसने की है :- निर्मला सीतारमण
- देश का सबसे बड़ा और राजस्थान का पहला पंचकर्म सेंटर कहाँ बनाया जा रहा है :-

जोधपुर

- जयपुर के किस एक्टर को 'दादा साहब फाल्के सेवा रत्न अवार्ड-2025' दिया गया है :- संजय सरदाना
- बेटियों और महिलाओं को छेड़छाड़, शोषण, प्रताड़ना मामलों में न्याय दिलाने के लिए किस जिले में 'महिला बीट ऑफिसर' विंग तैयार की गई है :- पाली सिरोही जालौर
- हाल ही में राजस्थान में सिद्धेश्वर ब्रह्मर्षि गुरुदेव स्वागत समारोह समिति द्वारा 'कल्याण महोत्सव का आयोजन कब किया जाएगा :-16 फरवरी, 2025
- हाल ही में राज्यपाल के द्वारा संरक्षण क्षमता महोत्सव 'सक्षम-2025' का उद्घाटन कहाँ किया गया है :- जयपुर
- हाल ही में, संयुक्त सैन्य अभ्यास "साइक्लोन 2025" का आयोजन कहाँ किया जा रहा है :- राजस्थान
- जैसलमेर में आयोजित मरु महोत्सव 'मे मरुश्री' का खिताब किसने जीता है :- मरुश्री धीरज पुरोहित, जैसलमेर
- हाल ही में तीन दिवसीय सूफी फेस्टिवल का आयोजन कहाँ किया जाएगा :- मेहरानगढ़ दुर्ग, जोधपुर
- हाल ही में किस राजस्थानी कवि को कवि काग पुरस्कार से सम्मानित किया गया है :- लक्ष्मणदान कविया
- प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना 2.0 के तहत राजस्थान में जलग्रहण यात्रा का राज्य स्तरीय कार्यक्रम कहाँ आयोजित किया गया:- किशनगंज (बांरा)
- भारत निर्वाचन आयोग (ECI) ने मतदाता जागरूकता बढ़ाने के लिए कहाँ 'चंद्रयान से चुनाव तक' नामक पहल शुरू की :- दिल्ली
- किस IIT संस्थान ने कैंसर रोग पर शोध के लिए पहला कैंसर जीनोम डेटाबेस लॉन्च किया है :- आईआईटी, मद्रास
- राजस्थान सरकार द्वारा किसके लिए "दवा आपके द्वार" योजना शुरू की जाएगी :- वरिष्ठ नागरिकों हेतु

- हाल ही में, BCCI कर्नल सीके नायडू लाइफटाइम अचीवमेंट पुरस्कार से किसे सम्मानित किया जाएगा:- सचिन तेंदुलकर
- हाल ही में, खेलो इंडिया विंटर गेम्स 2025 के पहले चरण में शीर्ष स्थान किसने हासिल किया :- लद्दाख
- जयपुर लिटरेचर फेस्टिवल 2025 में 8वां 'श्री द्वारका प्रसाद अग्रवाल सम्मान' किसे प्रदान किया गया:- स्वानंद किरकिरे
- 38वें नेशनल गेम्स (देहरादून) में राजस्थान बैडमिंटन टीम ने कौनसा पदक है :- कांस्य पदक
- हाल ही में 2025 युगांडा इंटरनेशनल बैडमिंटन चैलेंज का पुरुष एकल खिताब किसने जीता :- मनराज सिंह

## विलोम

Q:1) उत्तम का विलोम

A:) कम

B:) श्रेष्ठ

C:) अधम

D:) छोटा

Correct: C

Q:2) उद्वत का विलोम

A:) उदण्ड

B:) कुंठ

C:) क्षीणा

D:) मंद

Correct: B

Q:3) साक्षर का विलोम-

A:) अक्षर

B:) प्रत्क्षर

C:) निरक्षर

D:) कोई नहीं

Correct: C

Q:4) नूतन का विलोम

A:) पुरातन

B:) नवीन

C:) पुराना

D:) प्राचीन

Correct: A

Q:5) आस्तिक का विलोम

- A:) नास्तिक                      B:) भक्त  
C:) राक्षस                        D:)

Correct: A

Q:6) उत्कर्ष का विलोम

- A:) उन्नति                         B:) अपकर्ष  
C:) आकर्षण                    D:) परामर्ष

Correct: B

Q:7) अनुराग का विलोम

- A:) राग                              B:) विराग  
C:) खटराग                       D:) पराग

Correct: B

Q:8) सम्पत्ति का विलोम

- A:) निर्धन                         B:) धन  
C:) विपन्न                         D:) विपति

Correct: D

Q:9) कृतज्ञ का विलोम

- A:) कृतध्न                         B:) उपकार  
C:) नास्तिक                       D:) अकृतध्न

Correct: A

Q:10) उत्थान का विलोम

- A:) प्रस्थान                      B:) उन्नति  
C:) अवनति                      D:) पतन

Correct: D

Q:11) आरोही का विलोम

- A:) अवरोही                      B:) अवरोहण  
C:) उतार                          D:) ऊर्ध्व

Correct: A

Q:12) 'मौखिक' का सही विलोम है?

- A:) लिखित                      B:) मुद्रित  
C:) अपठित                      D:) पठित

Correct: A

Q:13) 'निरपेक्ष' का सही विलोम है?

- A:) प्रत्यक्ष                      B:) परोक्ष  
C:) सापेक्ष                      D:) प्रतिपक्ष

Correct: C

Q:14) 'निराहार' का सही विलोम है?

- A:) अनुहार                      B:) आहार  
C:) विहार                      D:) संथार

Correct: B

Q:15) 'अनुज' का सही विलोम है?

A:) भ्राता B:) ज्येष्ठ

C:) कनिष्ठ D:) अग्रज

Correct: D

Q:16) किस क्रम में 'स्फूर्ति' का विलोम है?

A:) चुस्ती B:) तेज

C:) आलस्य D:) निराशा

Correct: C

Q:17) 'बर्बर' शब्द का सही विलोम है?

A:) सभ्य B:) बुरा

C:) दुष्ट D:) अत्याचारी

Correct: A

Q:18) 'कृतज्ञ' शब्द का सही विलोम है?

A:) दयालु B:) उदार

C:) कृतघ्न D:) निर्दय

Correct: C

Q:19) 'गरिमा' का विलोम है?

A:) नीचता B:) घृणा

C:) लघिमा D:) अंधकार



Correct: C

Q:20) 'उत्तम' का सही विलोम है?

A:) अधम

B:) निकृष्ट

C:) उदार

D:) उद्यमी

Correct: A

रोचक तथ्य



**किस देश मे हरा  
सूर्य दिखाई देता है :  
अंटार्कटिका महासागर**



**ऐसा कौनसा देश है  
जहाँ एक भी पेड़ नहीं  
है?  
कतर**



**सऊदी अरब दुनिया का  
एकमात्र ऐसा देश है जहां  
एक भी नदी नहीं है।**



**पृथ्वी का स्वर्ग  
श्रीनगर**



## लेखक परिचय:- मार्च अंक 2025

- डॉ. घनश्याम बादल  
215, पुष्परचना, गोविंद नगर  
रुड़की  
9412903681  
[Ghansyambadal54@gmail.com](mailto:Ghansyambadal54@gmail.com)
- बृजेश कुमार  
[Aryabrijeshsahu24@gmail.com](mailto:Aryabrijeshsahu24@gmail.com)  
9785837924  
पता - जुरेहरा भरतपुर राज.  
321023
- डॉ. उमेश प्रताप वत्स  
यमुनानगर  
[umeshpvats@gmail.com](mailto:umeshpvats@gmail.com)  
9416966424
- विनोद मानवी  
महल चौक, जुरहरा  
डीग राजस्थान  
9982740832

- डॉ शिवा धमेजा

Drshivadhameja01@gmail.Com

पता :- 140A गायत्री नगर जयपुर

9351904104

- अनवर सुहैल

सम्पर्क : टाइप IV 3, ऑफिसर कालोनी,

पोस्ट बिजुरी जिला अनूपपुर

मप्र 484440

7000628806

[Sanketpatrika@gmail.com](mailto:Sanketpatrika@gmail.com)

- डॉ.नरेश कुमार सिहाग,

विभागाध्यक्ष एवं शोध निर्देशक, हिन्दी विभाग,

टांटिया विश्वविद्यालय, श्रीगंगानगर, राजस्थान

मो. 9466532152, 8708822674

[Nksihag202@gmail.com](mailto:Nksihag202@gmail.com)

- उपासना राज

33/6, 1 सिविल लाइन्स, शेरकोठी, रुड़की,

उत्तराखंड, पिन: 247667

फोन: 9520450070

ईमेल: [writesupasna@gmail.com](mailto:writesupasna@gmail.com)

Upasnawrites.com

- प्रिया देवांगन 'प्रियू'  
राजिम  
जिला-गरियाबंद छत्तीसगढ़  
[priyadewangan1997@gmail.com](mailto:priyadewangan1997@gmail.com)
- सुबीर कुमार भट्टाचारजी  
GOLDERS GREEN BLOCK FG  
FLAT 4 FOURTH FLOOR  
1 VIP ROAD  
KOLKATA 700052  
9432201328  
[Skbha2573@gmail.com](mailto:Skbha2573@gmail.com)
- सुधा गोयल  
, २९०-ए, कृष्णानगर,  
डा दत्ता लेन ,  
बुलंद शहर-२०३००१  
मोबाइल नंबर\_९९१७८६९९६२  
ईमेल [sudhagoyal0404@gmail.com](mailto:sudhagoyal0404@gmail.com)
- ऋषभ शुक्ला  
7398549550  
[rishabhshukla733@gmail.com](mailto:rishabhshukla733@gmail.com)

- चित्रगुप्त  
ग्राम जलालपुर  
पोस्ट कुरसहा  
जिला बहराइच  
  
उत्तर प्रदेश -271821  
  
मोबइल - 7526055373  
[Pandeydivakar.pandey.dp@gmail.com](mailto:Pandeydivakar.pandey.dp@gmail.com)
- डॉ. सुमन धर्मवीर  
विशाखापट्टनम  
9868205781
- प्रेम ठक्कर  
सूरत, गुजरात  
9023864367  
[Awaiting.prem@gmail.com](mailto:Awaiting.prem@gmail.com)



UDYAM-RJ-17-0210612

goonjnayi@gmail.com

शोध, साहित्य एवं संस्कृति की उत्कृष्ट पत्रिका



नई गूँज

Design by Rahul Deewan

Sign up at [www.nayigoonj.com](http://www.nayigoonj.com)

9785837924